आज से सवा शताब्दी पूर्व जब 'बिहार-बन्धु' का प्रकाशन आरंभ हुआ, उस समय पत्रकारिता ने साहित्य को दूर-दूर तक फैलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। साहित्य, संस्कृति और राजनीति सबके लिए एक मंच के रूप में हिन्दी पत्रकारिता ने स्वयं को विकसित किया। लेकिन हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता अपने गौरवशाली अतीत के बावजूद आज संक्रमण-काल का अभिशाप झेल रही है।

बिहार में आज साहित्यिक पत्रकारिता की स्थिति उत्साहजनक नहीं है। नियमित रूप से निकलने वाली एक भी पत्रिका नहीं। सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के मुखपत्र भी मृतप्राय हैं। इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी साहित्य की रफ्तार और दिशा-निर्धारण में बिहार की साहित्यिक पत्रिकाओं की कोई निर्णायक भूमिका नहीं है।

युवा लेखक श्री कल्याण कुमार झा का शोध-ग्रंथ एक सौ पचीस वर्षों में हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की उपलब्धियों को बिहार के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। अलग-अलग कालखण्डों में विभाजित करके लगभग सभी जरूरी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विषय-वस्तु का विश्लेषण इस पुस्तक को एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना देता है।

प्रकाशक

शेखर

हिन्दुस्तानी पत्रिका के लिए समीक्षार्थ

कल्याण कुमार ओर

१/१०/९८



आज

'बिहार-बन्धु'
समय पत्रका
फैलाने में म
संस्कृति औ
के रूप में
विकसित वि
पत्रकारिता
आज संक्रम

बिहार
स्थिति उत
निकलने व
और गैर-
मृतप्राय है
साहित्य
बिहार व
निर्णायक

युवा
शोध-ग्रंथ
साहित्यि
बिहार
अलग-3
लगभग
विषय-द
एक ऐ

बिहार की
हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

आर

'बिहार-ब
समय पत्र
फैलाने में
संस्कृति
के रूप
विकसित
पत्रकारित
आज संक्र

बिहा
स्थिति
निकलने
और गै
मृतप्राय
साहित्य
बिहार
निर्णायक

युवा
शोध-ग्रं
साहित्यि
बिहार
अलग-
लगभग
विषय-
एक ऐ

बिहार की
हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

कल्याण कुमार झा

साहित्य कला संगम
बेतिया

पुस्तक	:	बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता
लेखक	:	कल्याण कुमार झा
प्रथम प्रकाशन	:	1997
मुद्रण	:	निहारिका इन्टरप्राइजेज, पटना-4
प्रकाशक	:	साहित्य कला संगम, नया भवन, स्टेशन रोड, बेतिया (बिहार) पिन : 845438
मूल्य	:	रु० 150/- (सजिल्द)
	:	रु० 80/- (पेपरबैक)

BIHAR KI HINDI SAHITYIK PATRAKARITA

By Kalyan Kumar Jha

Price : Rs 150/- (Hardbound) Rs 80/- (Paperback)

वितरण

- ☐ राजकमल प्रकाशन, पटना
- ☐ जिज्ञासा प्रकाशन, पटना
- ☐ साहित्य कुंज, 42, एम. आई. जी., हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-20
- ☐ कल्याण कुमार झा, ए 6, कनिष्का अपार्टमेंट, बाजार समिति रोड, पूर्वी राजेन्द्र नगर, पटना-16
- ☐ श्रीकाशी पुस्तक मंदिर, कविवर नेपाली पथ, बेतिया

अपनी दादी

को

सादर

'बिह
समय
फैला
संस्व
के
विव
पत्रव
आज

स्थि
निव
औ
मृत
सा
बिह
निप

शो
सा
बि
अ
ल
वि
ए

अनुक्रम

बिह
समय
फैला
सस्व
के
विक
पत्र
आर

स्थि
निः
औ
मृत
सा
बि
नि

श
स
बि
अ
ल
नि
ए

लेखकीय

बिहार आरम्भ से ही अपनी सांस्कृतिक गरिमा और प्रखर राजनीतिक चेतना के कारण पूरे विश्व में ख्यात रहा है। साम्राज्यवाद का आदिम रूप हो या गणतंत्र की पहली परिकल्पना, सबके उदाहरण प्रथमतः बिहार में ही प्राप्त होते हैं। यह तथागत की भूमि है, वर्द्धमान महावीर की भूमि है और लोकनायक जयप्रकाश की भी भूमि है। क्षेत्र चाहे पत्रकारिता का हो, राजनीति का, फिर चाहे साहित्य का, बिहार के अवदानों को विस्मृत नहीं किया जा सकता।

बिहार की रचनाधर्मिता की शक्ति का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है कि दूसरे प्रान्तों की पत्रिकाएँ भी अब बिहार के साहित्य पर केन्द्रित हो रही हैं। इलाहाबाद से निकलनेवाली साहित्यिक पत्रिका 'उन्नयन' ने अपना एक अंक बिहार की हिन्दी कविता पर केन्द्रित किया है। देश की किसी भी पत्रिका में प्रकाशित होने वाले सम्माननीय लेखकों की सूची बनाई जाए तो उसमें आवश्यक रूप से बिहार प्रान्त का हिस्सा अधिक होगा।

साधना और संघर्ष की इस तपोभूमि ने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में अपनी अग्रणी भूमिका सिद्ध की है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर बीसवीं शताब्दी के अन्त तक इसने साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में हस्तक्षेप किया है बिहार से अनेक हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाओं ने नये लेखकों को एक सार्थक मंच देने के साथ पुराने साहित्य का सफलतापूर्वक संरक्षण भी किया है।

बिहार से प्रकाशित होनेवाली पहली पत्रिका 'बिहार बन्धु' साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में लगभग पचास वर्षों तक सक्रिय रही। पं० चन्द्रशेखर धर मिश्र ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में सोलह वर्षों तक 'विद्या धर्म दीपिका' का प्रकाशन-सम्पादन किया और उसे हिन्दी पाठकों में निःशुल्क वितरित किया। इतना त्याग, इतनी तपस्या से जिस परम्परा की शुरुआत हुई हो, उसकी जीवंतता का अनुमान सहज ही किया जा सकता है।

बिहार में संस्थाओं एवं संगठनों की ओर से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में 'परिषद्-पत्रिका', 'साहित्य', 'राजभाषा', 'उत्तरशती', 'उत्तरा', 'आवर्त्त', 'दृष्टि' आदि मुख्य हैं। लेकिन व्यक्तिगत प्रयास से निकलनेवाली साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या अधिक है। 'बेला', 'नया आलोचक', 'कबीर', 'अब', 'पुरूष', 'दस्तावेज', 'संवेद', 'जनपथ', 'ज्योत्स्ना' आदि पत्रिकाएँ व्यक्तिगत प्रयास से ही निकलती रही हैं। यद्यपि सभी पत्रिकाओं ने रचना और आलोचना को समान महत्व दिया है किन्तु बिहार की शोध और समीक्षा प्रधान पत्रिकाओं में 'साहित्य', 'अवन्तिका', 'परिषद्-पत्रिका', 'समीक्षा', 'नया आलोचक', 'अन्वेषक' आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

बिहार की साहित्यिक पत्रिकाओं की औसत आयु संतोषप्रद नहीं मानी जा सकती। कुछ पत्रिकाओं को अपवाद मान लें तो अधिकाश पत्रिकाएं कुछ दूर चलकर ठहर जाती है या क्लान्त होकर शिथिल हो जाती हैं। जिस प्रान्त में साक्षरता का प्रतिशत काफी कम हो, जहाँ आम पाठक के लिए सारी पत्रिकाओं को खरीद पाना असंभव सा हो, वहाँ इससे बेहतर विकास की उम्मीद भी क्या की जा सकती है? फिर भी आज पत्रिका-प्रकाशन का जोखिम उठाने

वाले कई युवा सामने आ रहे हैं और बिहार के प्रमुख नगरों के अलावा कई कस्बों से भी गंभीर साहित्यिक पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं।

अपनी पूज्या दादी के चरणों में वर्षों के परिश्रम का फल समर्पित करने का जो सौभाग्य मिला है, इस पर मुझे अपार संतोष है। लम्बे समय से बीमार चली आ रही इस वृद्ध महिला ने हमारे परिवार में ऐसा वातावरण बनाया जहां साहित्य, कला और संस्कृति के लिए अनुकूलता बनी। मेरे संस्कार-परिष्कार में सबसे अधिक इन्हीं की भूमिका है। ईश्वर से उनके शतायु होने की कामना करता हूं।

मेरे बाबूजी एक कठोर अभिभावक होते हुए भी मुझे स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन देते रहे। सख्ती से अनुशासन का पालन करने की सीख के साथ-साथ उन्होंने साहित्य के प्रति मेरी रुचि को परिष्कृत किया। मेरी मा ने घर-आंगन में मुझे गढ़ा, बनाया और मेरे भविष्य के लिए जो स्वप्न पाले, अगर मैं उसे साकार कर सका तो खुद को भाग्यशाली समझूंगा।

मेरे भैया श्री राजेश कुमार झा और जीजाजी डॉ० सुबोध कुमार झा ने इस पुस्तक से संबंधित कई जटिल बिन्दुओं पर मुझे परामर्श दिया। मेरी बहन ममता, भाभी भारती, साज़ीना और छवि के प्रेम, प्रोत्साहन और प्रेरणा से मैं पुस्तक लेखन के इस कार्य को पूरा कर सका।

इस शोध-कार्य के लिए सामग्री संकलन के क्रम में मैंने कई पुस्तकालयों की खोजबीन की। इनमें आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी, अनुसंधान-पुस्तकालय एवं सिन्हा पुस्तकालय, पटना तथा महाराजा पुस्तकालय, बेतिया विशेष उल्लेखनीय हैं। इन पुस्तकालयों के अधिकारियों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। गुरुदेव डॉ० बलराम मिश्र (अध्यक्ष, साहित्य कला संगम) ने पुस्तक प्रकाशन के लिए अनुमति देकर मुझपर जो विश्वास किया है, उसे मैं धन्यवाद ज्ञापन की औपचारिकता से व्यक्त नहीं कर सकता। अग्रज सफदर

इमाम कादरी ने अपनी आत्मीयता और प्रेरणा से मुझे सजग और सक्रिय रखा है। जिनकी आत्मीयता ही मेरी शक्ति रही है, वैसे मित्रों में हेमन्त कुमार 'हिमांशु', शिवशकर सत्यार्थी, कुमार रवि रंक, अमित मिश्र, राजीव, रंजन वर्मा, भारत और अनुजों में कुमुद, शशांक राजन, प्रशान्त, अजय और जयन्त का सहयोग किसी न किसी रूप में पुस्तक लेखन के क्रम में मुझे प्राप्त हुआ। अपनी इस शक्ति को धन्यवाद देकर कम कर देना मैं नहीं चाहता। पंडित हीरानंद झा शास्त्री, डॉ० खगेन्द्र ठाकुर, भृगुनंदन त्रिपाठी तथा भाई ब्रजेन्द्र शंकर 'गर्ग' ने सामग्री संकलन के क्रम में मेरी पर्याप्त सहायता की। मेरे गुरु डॉ० सतीश कुमार राय ने इस पुस्तक की भूमिका लिखकर जिस उदारता का परिचय दिया है, उसे व्यक्त करने के क्रम में मुझे शब्दों की सीमा का भान हो रहा है।

'*बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता'* जैसे विषय के महत्व पर अब तक किसी विद्वान की नजर शायद नही गयी जबकि बिहार और देश की हिन्दी पत्रकारिता पर पर्याप्त शोध हुआ है। इसी कमी को केन्द्र में रखकर मेरे जैसे साहित्य के मामूली विद्यार्थी ने इस अध्ययन का बीड़ा उठाया। 1872 ई० से आज तक, लगभग सवा सौ वर्षों का लेखा-जोखा तैयार करना मेरे साहस के साथ परिश्रम की भी परीक्षा थी। बिहार और बिहार से बाहर के पुस्तकालयों, लेखकों के निजी संग्रहों तथा सम्पादकों की लाइब्रेरियों की खाक छानना और पत्र-पत्रिकाओं की सामग्रियों का सूक्ष्म अध्ययन जैसे दुर्लभ दायित्व के वहन में यह अध्येता चूर-चूर होकर बिखर नहीं गया, यह आश्चर्य का बिन्दु है।

अपने गुरुजनों के सुझाव, मित्रों, परिचितों और अभिभावकों के परामर्श एवं आशीर्वाद तथा अपने अल्प साहित्यिक विवेक से यह शोधग्रंथ तैयार हुआ है। सभी अप्राप्य एवं दुर्लभ सामग्रियों की खोज का मेरा कोई दावा नहीं लेकिन बिहार की कई भूली-बिसरी साहित्यिक गाथाओं की कड़ियों को मिलाने में मुझे सफलता मिली है।

इस पुस्तक में मेरा प्रयास रहा है कि मौलिक संदर्भों से साक्षात्कार करूं। पुस्तक में वर्णित सैकड़ों दुर्लभ पत्रिकाओं के अध्ययन के क्रम में मेरा प्रयास रहा है कि उनके विषय-वस्तु से भी पाठकों को परिचित कराऊं। आम पाठक तथा जागरूक साहित्यिक अध्येता तक इन पत्रिकाओं से अनभिज्ञ है। अधिकतर लोगों ने शायद ही इन दुर्लभ पत्रिकाओं को देखा हो। इसीलिए मैंने कोशिश करके ऐसी पत्रिकाओं की सामग्रियों का विस्तृत वर्णन कर दिया है। कहीं-कहीं पूरी विषय-सूची भी दे दी गई है ताकि पाठकों को उन पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्रियों की एक रूपरेखा झलक पाए। जहां-जहां संभव हुआ, प्रवृत्तिमूलक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता को समझने की मेरी यह कोशिश इस विषय पर एक आरंभिक दस्तावेज मात्र है। पहले प्रयास की अपनी सीमाए होती हैं। पुस्तक के पाठकगण इस अध्ययन में कोई नई बात पा लें तो मेरा उत्साह बढ़ेगा। पुस्तक में जो त्रुटियॉ है, उन्हें यदि इंगित किया जाए तो लेखक अनुगृहीत होगा।

अन्त में, हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में, बिहार का जो अमूल्य योगदान है, इस परिप्रेक्ष्य में आज चिन्ता का विषय है कि यहां एक भी लगातार प्रकाशित होने वाली हिन्दी की कोई गंभीर साहित्यिक पत्रिका नहीं है। लेखकों तथा रचनाकारों से भरे इस प्रदेश को इस अध्ययन से यदि प्रेरणा मिल सके, और कोई सफल प्रयास किया जा सके तो पुस्तक लिखने का मुझे फल मिल जाएगा। इसी कामना के साथ यह पुस्तक मैं पाठकों को समर्पित करता हूं।

पटना

कल्याण कुमार झा

'हि
सा
फै
सं
के
वि
प
उ



भूमिका

पत्रकारिता लोक मानस के साथ प्रत्यक्ष सवाद का एक जीवन्त रचनात्मक माध्यम है। युगबोध की अभिव्यक्ति, जन चेतना के प्रसार और बौद्धिक जागरण में पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की गयी है। वस्तुत: ''यह उन्नत जन-माध्यम है। यह लोकमानस की सामुदायिक सहभागिता की वह जीवन्त विधा है जिसमें जनता की आत्मा के स्वर, उसके सुख-दुख, जय-पराजय, आशा-आकांक्षा तथा सामयिक एवं सनातन सत्य मुखर हो उठते है।''[1] उन्नीसवीं शताब्दी में भारत के बौद्धिक नवजागरण के रूप में हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव एक ऐतिहासिक घटना है[2] किन्तु इससे भी महत्त्वपूर्ण है खिलाफ हवाओं से गुजरते हुए उसकी वह विकास यात्रा[3] जिसके मूल में संकल्प है, सर्जनात्मक शक्ति है, अनवरत संघर्षशीलता है और अदम्य जिजीविषा भी है।

हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड'[4] उस समय प्रकाशित हुआ जब हमारे देश के कई स्वनामधन्य सपूत अंग्रेजी की वकालत कर रहे थे। अग्रेजी प्रेम के माध्यम से उनकी बौद्धिकता व्यक्त हो रही थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन तंत्र हिन्दी भाषा को कुचलने के लिए तत्पर था और उसके संरक्षण में ईसाई मिशनरियाँ बंगला पत्रकारिता के द्वारा धर्म प्रचार कर रही थीं। उर्दू भाषा की पत्रकारिता को भी सरकार तथा

देशी राजाओं का प्रोत्साहन एवं समर्थन प्राप्त था। [5] ऐसी स्थिति म पण्डित युगल किशोर शुकुल का प्रयास निस्सदेह सकल्प की दृढ़ता क बोध कराता हैं। सचमुच हिन्दी-पत्रकारिता का सम्पूर्ण विकास क्रम संकल्प की इसी दृढ़ता का प्रतिफलन है।

'उदन्त मार्त्तण्ड' के बाद हिन्दी-पत्रकारिता के क्षेत्र मे दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रयास 1845 ई० में 'बनारस अखबार' [6] के प्रकाशन के साथ आरम्भ हुआ। वैसे यह दूसरी बात है कि राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' (1829 ई०)[7] की चार भाषाओं में हिन्दी को भी स्थान देने की कृपा की थी। भारतेन्दु-युग के पूर्व लगभग पच्चीस वर्षों की कालावधि में बमुश्किल दर्जनभर हिन्दी-पत्रों का प्रकाशन हिन्दी-पत्रकारिता की प्रारम्भिक अवस्था को स्वत: स्पष्ट कर देता है। यह वह काल है जब न्यायालयों के साथ उच्च शिक्षा और आजीविका के लिए अंग्रेजी तथा उर्दू अनिवार्य थी और हिन्दी प्रदेश की जनता आर्थिक दुरवस्था, हताशा और शोषण से जूझ रही थी। अपनी सारी सीमाओं के बावजूद आरंभ काल ही में हिन्दी-पत्रकारिता ने शोषण, अशिक्षा और हताशा के निविड़ अन्धकार में आस्था और चेतना का मंगलदीप जलाने का अभूतपूर्व प्रयास किया।

बगाल और उत्तर प्रदेश के बाद देश के अन्य भागों से भी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। 1849 ई० में मध्य प्रदेश (मध्य भारत) से 'मालवा अखबार' [8] और राजस्थान से 'मजहरूल सरूर' [9] नामक पत्र निकले। भारतेन्दु-युग में हिन्दी-पत्रकारिता के लिए एक रचनात्मक परिदृश्य निर्मित हुआ और पूरे देश से इसकी प्रगति के लिए प्रयत्न होने लगे। बिहार का पहला हिन्दी-पत्र 'बिहार बन्धु' भारतेन्दु-युग के मध्य में [10] प्रकाशित हुआ। एक वर्ष तक कलकत्ता से छपने के बाद यह पटना आया और फिर लगभग अर्धशताब्दी तक इसने बिहार की हिन्दी-पत्रकारिता की विकास यात्रा का मार्गदर्शन किया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक बिहार में हिन्दी पत्रकारिता की जड़े मजबूत हो चुकी थीं और प्रान्त के अलग-अलग भागों में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हो चुका था।

बिहार की हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास एक सौ पच्चीस वर्षों के अनवरत सघर्ष, साधना और संकल्प का इतिहास है। राजनीतिक उपेक्षा, आर्थिक और शैक्षिक पिछड़ेपन के बावजूद इस प्रान्त की हिन्दी

पत्रकारिता अपनी समृद्ध परम्परा और उपलब्धियों के कारण आकृष्ट करती है। जिस प्रान्त ने चन्द्रशेखर धर मिश्र ईश्वरी प्रसाद शर्मा, आचार्य शिवपूजन सहाय, भुवनेश्वर मिश्र, काशी प्रसाद जायसवाल, लाला भगवान दीन, रामवृक्ष बेनीपुरी, नलिन विलोचन शर्मा, देवव्रत शास्त्री, मथुरा प्रसाद दीक्षित, देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद जैसे कालजयी पत्रकार दिये हों, 'बिहार बंधु', 'क्षत्रिय', 'विद्या धर्म दीपिका', हरिश्चन्द्र कला', 'ब्राह्मण', 'लक्ष्मी', 'देश', 'तरुण भारत', 'पाटलिपुत्र', 'मारवाड़ी सुधार', 'बालक', 'युवक', 'नई धारा', 'साहित्य', 'नवराष्ट्र' जैसी पत्रिकाएँ जिसके गर्भ से निकली हों, अपने उस बिहार पर कोई भी गर्व कर सकता है। युवा लेखक श्री कल्याण कुमार झा की प्रस्तुत पुस्तक 'बिहार की हिन्दी-साहित्यिक पत्रकारिता' उसी गर्व की रचनात्मक अभिव्यक्ति है।

प्रारम्भ में हिन्दी-पत्रकारिता साहित्य और राजनीति दोनों को साथ लेकर बढ़ी थी किन्तु आगे चलकर दोनों का पार्थक्य स्पष्ट होने लगा। हिन्दी पत्रकारिता अनेक धाराओं में प्रवाहित होकर विकसित होने लगी। इसलिए आज जब हम साहित्यिक पत्रकारिता का उल्लेख करते है तो हमारा ध्यान रचना, शोध और आलोचना परक साहित्य पर केन्द्रित होता है। साहित्यिक पत्रकारिता का अभिप्राय संवेदना और भावुकता तक सीमित रचनाकर्म की प्रस्तुति भर नही है अपितु इसके मूल में वैचारिकता की भूमिका भी अनिवार्य है। यह वैचारिकता अन्य धाराओं की तरह साहित्यिक पत्रकारिता की भी जीवनशक्ति है। साहित्यिक पत्रकारिता जहाँ एक ओर साहित्यिक प्रवृत्तियों का दिशा निर्देशन करती है, वहीं दूसरी ओर युगीन जीवन, उसकी सम्भावनाओं और सीमाओं को अभिव्यक्त भी करती है। यह समस्त सामाजिक जीवन, परिस्थितियों और परम्पराओं का एक समग्र अनुशीलन है। वस्तुतः किसी भी देश की साहित्यिक पत्रकारिता से उस देश की पूरी बौद्धिक क्षमता, सास्कृतिक चेतना और राजनीतिक जागृति का परिचय प्राप्त हो सकता है। बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के सन्दर्भ में भी यह कथन सत्य है।

बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के समक्ष आरम्भ से ही कई चुनौतियां रही है। सरकारी उपेक्षा, पाठकों की कमी ओर लेखकीय संवाद के अभाव के बावजूद अगर यह बढ़ती गयी है तो यह इसकी जीवन्तता

का सर्वाधिक सटीक प्रमाण है बिहार में सरकारी अनुदान से छपने वाल 'परिषद पत्रिका' जब अनियमित हो सकती है, हिन्दी साहित्य सम्मेलन क पत्रिका 'साहित्य' का प्रकाशन स्थगित हो सकता है तब भी व्यक्तिगत प्रयास से निकलने वाली बिहारी पत्रिकाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती ज रही है। 'बेला', 'पुरूष', 'नया आलोचक', 'कला', 'उत्तरशती', 'विपक्ष' 'प्रसग','संवेद', 'मुहिम', 'सम्भवा', 'उत्तरा', 'पाटलिप्रभा', 'कतार' 'आयाम', 'समकालीन परिभाषा', 'दृष्टि', 'कबीर', 'समीक्षा, 'नई धारा' 'नई आकृति', 'आवर्त्त, 'उर्विजा', 'ऋतुगंध', 'युगालार्कन' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता की अदम्य जिजीविषा की ओर ही संकेत करता है। श्री झा इस संकेत को समझते है और 'बिहार बन्धु' (1874 ई०) से लेकर अन्वेषक (1996 ई०) तक की समृद्ध परम्परा का अनुशीलन कर इस शोध-ग्रन्थ को आकार देते हैं।

बिहार की हिन्दी-पत्रकारिता ने आरम्भ से ही अध्येताओं और शोधार्थियों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। बाबू राधाकृष्ण दास लिखित 'हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास' (1894 ई०), बाबू बालमुकुन्द गुप्त द्वारा रचित 'संवाद पत्रों का इतिहास' (1905 ई०), अम्बिका प्रसाद वाजपेयी रचित 'समाचार पत्रों का इतिहास (सं० 2010 वि०), डॉ० रामरतन भटनागर के शोध प्रबन्ध 'Rise and Growth of Hindi Journalism', कमलापति त्रिपाठी के 'पत्र और पत्रकार,' डॉ० वेद प्रताप वैदिक द्वारा सम्पादित 'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम' (दो भाग), ओंकार नाथ श्रीवास्तव के शोधग्रन्थ- 'हिन्दी साहित्य परिवर्त्तन के सौ वर्ष', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के 'आधुनिक हिन्दी साहित्य', डॉ० रामविलास शर्मा के 'भारतेन्दु-युग' और 'हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास' (त्रयोदश भाग) में बिहार की हिन्दी पत्रकारिता पर सम्यक् विचार किया गया है। डॉ० धीरेन्द्र नाथ सिंह के ग्रन्थ 'आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्ग विलास प्रेस की भूमिका' में भी खड्ग विलास प्रेस से प्रकाशित होनेवाली बिहारी पत्रिकाओं का विशद् विवेचन है।

'बिहार की हिन्दी पत्रकारिता पर स्फुट रूप से लिखने की परम्परा पहले से रही है। आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा सम्पादित जयन्ती स्मारक ग्रन्थ (पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय, 1942 ई०), राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ (आरा

नागरी प्रचारिणी सभा) और काँग्रेस अभिज्ञान ग्रन्थ (1962 ई०) में बिहार की पत्रकारिता पर स्वतत्र लेख संगृहीत हैं। बिहार के प्रथम हिन्दी पत्र 'बिहार बन्धु' पर तो कई लेख प्रकाशित है। एक लेख मगध विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी-विभागाध्यक्ष डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद का है जो 'नई धारा' के अप्रैल-मई, 1975 के अंक (वर्ष 26, अक 1, 2) में प्रकाशित है। पन्द्रह पृष्ठों के इस लेख में 'बिहार बन्धु' का विशद विवेचन एवं मूल्यांकन किया गया है। दूसरा लेख पत्रकार रामजी मिश्र 'मनोहर' का है, जिसका प्रकाशन 'आर्यावर्त' दैनिक के 28 दिसम्बर, 1982 के अंक में हुआ है। ''बिहार बन्धु'' पर 1 जनवरी, 1986 ई० के 'पाटलिपुत्र टाइम्स में प्रकाशित ज्ञानवर्द्धन मिश्र का भी एक लेख है। बिहार की हिन्दी पत्रकारिता पर डॉ० आनन्द नारायण शर्मा के भी दो लेख प्रकाशित हैं। एक लेख का प्रकाशन 'आर्यावर्त्त (26 जनवरी 1985 ई०) में और दूसरे का पाटलिपुत्र टाइम्स (1 जनवरी 1987 ई०) में हुआ है। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अमृत महोत्सव स्मारिका में डॉ० जितेन्द्र वत्स ने पटना की हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की विवरणिका प्रकाशित करायी है। इन स्फुट लेखों के बाद डॉ० कृष्णानन्द द्विवेदी की पुस्तक ''बिहार की हिन्दी पत्रकारिता'' (1996 ई०) का प्रकाशन इस दिशा में पहला समग्र अध्ययन है। मुझे प्रसन्नता है कि श्री कल्याण कुमार झा ने इस अध्ययन को आगे बढ़ाने की चेष्टा की है। इतना ही नहीं, उन्होंने अनेक अज्ञात अथवा अल्पज्ञात किन्तु महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं को पहली बार प्रकाश में लाने का कार्य भी किया है। श्री झा का अध्ययन हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता तक ही सीमित रहा है किन्तु उनके साहित्य की परिधि व्यापक है और उनकी शोधदृष्टि पैनी भी है।

प्रस्तुत पुस्तक श्री झा की पहली कृति है। यह हमें उनके उज्ज्वल रचनात्मक भविष्य के प्रति आश्वस्त करती है। इस पहली दस्तक में सम्भावना है, संकल्प है, शक्ति है और रचनात्मक बेचैनी भी है। मुझे विश्वास है कि आप सम्भावना और संकल्प की इस नयी पौध को अपनी प्रेरणा से अभिसिंचित करेंगे, एक सम्भावनापूर्ण भविष्य का स्वागत करेंगे।

हिन्दी-विभाग,
वा० भी० अ० बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर।

सतीश कुमार राय

सदर्भ

1 राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता डॉ० मीरा रानी बल, पृष्ठ 60

2. महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय जीवन के उन्नयन के लिए समाचार पत्र प्रबल अस्त्र सिद्ध हुए। साहित्य के क्षेत्र में नवीन भावों, विचारों, गद्य रूपों एव शैलियों के पवर्त्तन प्रवर्द्धन की दृष्टि से ही नहीं, वरन् सुधारवादी और राजनीतिक एवं आर्थिक आन्दोलन को प्रोत्साहन प्रदान करने, नवोदित राष्ट्रीयता को बल देने, भारत में ऐक्य भावना उत्पन्न करने, जन जागरण को जन्म देने तथा पुष्ट करने और अन्य अनेक विषयों के सबध में विचार-विनिमय का साधन प्रस्तुत करने सक्षेप में भारतीय नवोत्थान के विशाल चक्र को गतिशील बनाने में समाचार पत्रों ने विद्युत-शक्ति का कार्य किया।

–उन्नीसवीं शताब्दी, डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, पृष्ठ 9 10.

3. हिन्दी पत्रकारिता के विकास पर एक सरसरी नजर डालने से भी यह साफ दिखाई देता है कि जैसे कोई शक्ति है जो बाहर जाने के लिए बेतरह छटपटा रही है, जैसे किसी के हाथ-पाँव कसकर बाँध दिए गए हैं, वह बरबस लुढ़कने की कोशिश करता है, उसे बलपूर्वक पीछे की ओर ढकेला जा रहा है, फिर भी वह आगे ही की ओर बढ़ रहा है। इसमें एक ओर नितान्त साधनहीन व्यक्ति खुद ही अखबार लिखकर, कम्पोज करके, छापकर, पीठ पर लादकर बेचते हुए दिखाई देते है तो दूसरी ओर उत्तराधिकार मे धन पाए हुए लोग पत्रकारिता के जोश मे दीवाने अपनी कुल-सम्पत्ति को लुटाते हुए मिलते हैं।

–हिन्दी साहित्य : परिवर्तन के सौ वर्ष ओंकारनाथ श्रीवास्तव, पृष्ठ : 158

4. यह साप्ताहिक पत्रिका 30 मई, 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित हुई और इसका अन्तिम अंक 11 दिसम्बर, 1827 को निकला।

5. राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ-86

6 'उत्तर प्रदेश' का पहला हिन्दी पत्र। इस पत्र के प्रकाशक राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द तथा सम्पादक गोविन्द रघुनाथ थत्ते थे। यह साप्ताहिक पत्र था और नागरीलिपि में छपता था। इसमें अरबी-फारसी के शब्दों की भरमार रहती थी।

7. 10 मई, 1829 ई० में कलकत्ता से तीन भाषाओं- बगला, फारसी, हिन्दी के पत्र के रूप में इसका प्रकाशन हुआ। इसका अग्रेजी सस्करण 'हिन्दू

हेरल्ड , नाम से होता था। इसका प्रकाशन राजा राममोहन राय और उनके सहयोगियों के द्वारा होता था।

8. यह साप्ताहिक पत्र पहले हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित हुआ और फिर 1873 ई० से मराठी में प्रकाशित हुआ। देखें – हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम सं०- डॉ० वेद प्रताप वैदिक, पृष्ठ–141

9. भरतपुर के राजा ने शासन की ओर से द्विभाषी (हिन्दी और उर्दू) मासिक पत्रिका के रूप में इसका प्रकाशन कराया। उपर्युक्त, पृष्ठ–164

10 इसका प्रकाशन 1872 ई० में स्वीकार किया जाता रहा है किन्तु इसके पुराने अंकों के आधार पर श्री रामजी मिश्र 'मनोहर' ने इसका प्रकाशन 1873 ई० में स्वीकार किया है। 1874 ई० में यह पटना आया।





1

'हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और साहित्यिक पत्रकारिता'

सामयिक सन्दर्भों के आलोक में जन चेतना को जागृत करने का सशक्त माध्यम पत्रकारिता है। हालांकि आज की पत्रकारिता की परिधि घटनामूलक समाचारों के इर्द-गिर्द सिमटने लगी है। फिर भी, विचारों की अभिव्यक्ति के बगैर पत्रकारिता का लक्ष्य ही पूरा नहीं होता। अतएव, पत्रकारिता एक खोजपूर्ण वैचारिक यात्रा है। और लेनिन के शब्दों में- 'जनता तक पहुंचने पर विचार एक नैतिक शक्ति बन जाते है।'[1] साथ ही यह समसामयिक जीवन की सार्थक आलोचना भी है। वर्त्तमान सन्दर्भ में साहित्य भी जीवन की आलोचना है।[2] इतना ही नहीं, वैचारिकता साहित्य की शाश्वत परम्परा के लिये, उसके स्थायित्व के लिए आवश्यक है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि साहित्य और पत्रकारिता में घनिष्ठ संबंध है।

हिन्दी पत्रकारिता के समूचे विकास-क्रम को देखने के बाद यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी के प्रायः सारे महत्त्वपूर्ण पत्रकार समर्थ साहित्यकार भी थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, निराला, नेपाली, अज्ञेय इत्यादि अनेक महान व्यक्तितत्व समर्थ पत्रकार और कालजयी साहित्यकार एक साथ थे। वस्तुतः यह कहा जाय कि हिन्दी में सामाजिक,

राजनीतिक पत्रकारिता के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता का भी विकास हुआ है तो शायद कोई नहीं होगी पराधीन पददलित और हताश देश में राजनीतिक चेतना का विकास पत्रकारिता के माध्यम से साहित्यिक आवरण के बीच ही हो सकता था। ''भारत-दुर्दशा', 'अँधेर नगरी' जैसी नाट्य रचनाएँ न केवल तत्कालीन जीवन की विद्रूपता को स्पष्ट करती हैं अपितु ये राजनीतिक चेतना का परोक्षत विकास भी करती है।

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भवकाल 1826 ई० है, जब कलकत्ता से 'उदन्त-मार्त्तण्ड' नामक पहला पत्र प्रकाशित हुआ। इस सन्दर्भ में यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि उस समय बिहार बंगाल में अन्तर्लीन था। 'उदन्त मार्त्तण्ड' का प्रकाशन बंगाल की राजधानी कलकत्ता से हुआ और कानपुर निवासी *पं० युगल किशोर शुक्ल* के सम्पादन में इसका पहला अंक 30 मई 1826 ई० को प्रकाशित हुआ। ''उदन्त-मार्त्तण्ड में साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन भी होता था और इसके मुखपृष्ठ पर यह श्लोक छपता था- उदंत मार्त्तण्ड अर्थात्

दिवाकान्त कान्तिं विना ध्वान्तकांतन् चाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञलोक: ।
समाचार सेवामृतेज्ञप्तमाप्तुंन् शक्नोति तमाकरोमिति यत्न: ।।[3]

इस पत्र के प्रथम अंक के अंत में एक श्लोक यह भी है-

युगल किशोर: कथयति धीर: सविनयमेतत् सुकुलजवंश: ।
उदिते दिनकृत सति मार्तण्डे तद्वत् बिलसति लोक उदन्ते ।।[4]

'उदंत मार्त्तण्ड' के बाद 'बनारस अखबार', 'प्रजाहितैषी' आदि साहित्यिक पत्रों ने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की नींव रखी। 'बनारस अखबार' 1845 ई० में प्रकाशित हुआ और इसका प्रकाशन उस युग के प्रसिद्ध लेखक *राजाशिव प्रसाद सितारे हिन्द* ने किया। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख और रचनाओं की भाषा उर्दू होती थी, जबकि लिपि देवनागरी। इसके मुखपृष्ठ पर इसके उद्देश्य को रेखांकित करनेवाली निम्नलिखित पंक्तियाँ छपती थीं-

सुबनारस अखबार यह शिव प्रसाद आधार ।
बुधि बिबेक जननिपुन को चिनहित बारंबार ।।

गिरजापति नगरी जहाँ गग अमल जलधार
नेत शुभाशुभ मुकुर को, लखो विचार विचार ।।[5]

'प्रजाहितैषी' (1853 ई०) के प्रकाशक सपादक *राजा लक्ष्मण सिंह* थे। सितारे हिन्द के समकालीन राजा लक्ष्मण सिंह ने तत्सम प्रधान भाषा के प्रयोग पर बल दिया। इस पत्रिका के माध्यम से न केवल तत्कालीन भाषा आंदोलन को बल मिला, बल्कि इसने साहित्यिक परिवेश के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान भी किया। राजा साहब स्वय एक समर्थ अनुवादक थे और 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' जैसे प्रसिद्ध संस्कृत नाटक का इन्होंने हिन्दी अनुवाद किया था।

1857 ई० में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रखर नेता *अजीमुल्ला खाँ* ने दिल्ली से 'पयामे आजादी' नामक पत्र का प्रकाशन किया। पहले यह पत्र उर्दू में प्रकाशित हुआ, किन्तु बाद में इसका हिन्दी संस्करण भी निकलने लगा। आंदोलन की विफलता के कारण यह पत्र बहुत दिनों तक प्रकाशित नहीं हो सका किन्तु जितने दिन तक यह प्रकाशित हुआ, यह राष्ट्रवादी आन्दोलन का मुखर पत्र रहा और इसमें राष्ट्रवादी साहित्य का प्रकाशन भी होता था। 1857 का यह प्रसिद्ध राष्ट्रीय-गीत इसी पत्रिका में छपा–

हम हैं इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा ।
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा,
ये है हमारी मिल्कियत, हिंदुस्तान हमारा ।
इसकी सहामियत से, रौशन है जग सारा,
कितना कदीम, कितना नईम, सब दुनिया से न्यारा,
करती हैं जरखेज जिसे, गगोजमन की धारा ।
ऊपर बर्फीली पर्वत, पहरेदार हमारा,
नीचे साहिल पर बजता, सागर का नक्कारा ।
इसकी खानें उगल रहीं, सोना, हीरा, पारा,
इनकी शानो शौकत का दुनिया में जयनारा ।
आया फिरंगी दूर से ऐसा मतर मारा,
लूटा दोनों हाथों से प्यारा वतन हमारा ।
आज शहीदों ने तुमको अहले वतन ललकारा,
तोड़ो गुलामी की जजीरें, बरसाओ अगारा ।

हिन्दू, मुसलमा सिख हमारा भाई भाई प्यारा
ये है आजादी का झंडा इसे सलाम हमारा ।[6]

इस प्रकार भारतेन्दु के आगमन के पूर्व साहित्यिक पत्रकारिता का वातावरण निर्मित हो चुका था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के आगमन के साथ हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को एक नई दिशा मिली। 1868 ई० में *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* ने काशी से 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन किया। यह पद्यमय पत्रिका थी और इसमें मूल्य, नियम आदि भी पद्य में ही प्रकाशित होते थे।

शरद् मुद्रा पहिले दिए बरस बिताए सात ।
साथ चन्द्रिका के लिए दस में दोऊ मिलि जात ।।
बरस गए बारह लगत दो के दो महसूल ।
अलग चंद्रिका सात शरद् वचन सुधा समतूल ।।
दो आना एक पत्र को टका पोस्टेज साथ ।
सारथ आना आठ दै लहर चंद्रिका हाथ ।।
प्रति पगति आना जुगुल जो कोई नोटिस देइ ।
जो विशेष जानन चहै पूछि सबै कुछ लेइ ।।[7]

"कवि वचन सुधा" मूलतः तत्कालीन कवियों की प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह थी और इसके माध्यम से हिन्दी कविता के विकास के लिये रचनात्मक प्रयत्न किये जाते थे। 1875 से 1885 ई० के बीच इसमें गद्य का प्रकाशन भी होने लगा और इसमें राजनीति के साथ समाज - नीति पर भी स्वतंत्र लेखों का प्रकाशन आरंभ हुआ। अपने राष्ट्रवादी स्वर के कारण यह पत्रिका सरकारी कोपदृष्टि का शिकार हुई। इस पत्रिका का सिद्धान्त ही था-

"खल गगन सों सज्जन दुखी मति होहिं हरिपद मति रहै ।
अपधर्म छूटै, स्वत्व निज भारत गहै, कर दुख बहै ।।
बुध तजहिं मत्सर नारि नर समहोहिं, जग आनंद रहै ।
तजि ग्राम कविता, सुकविजन की अमृतबानी सब कहै ।।[8]

1872 ई० में कलकत्ता से *बाबू कार्तिक प्रसाद* ने 'हिन्दी दीप्ति प्रकाश' निकाला। इसी वर्ष कलकत्ता से ही *पं० केशवराम भट्ट* तथा *पं० मदन मोहन भट्ट* के सहयोग से 'बिहार बंधु' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ। 1874 ई० में इसका प्रकाशन पटना में स्थानान्तरित

हो गया इस प्रकार बिहार बंधु बिहार की पहली हिन्दी पत्रिका है और यह पत्रिका भी अपनी साहित्यिक सामग्री के कारण जानी जाती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी तीन दशक साहित्यिक पत्रकारिता के विकास की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। 1878 ई० में ''भारत मित्र'', 1879 ई० में 'सार सुधा निधि' और 1880 ई० में 'उचितवक्ता' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन न केवल हिन्दी पत्रकारिता की समृद्धि का संकेत करता है बल्कि एक सार्थक साहित्यिक वातावरण का निर्माण भी करता है। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन के पूर्व *भारतेंदु* ने काशी से 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का प्रकाशन आरंभ किया। 1873 ई० में प्रकाशित यह पत्रिका 1874 ई० में 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' के नाम से प्रकाशित होने लगी। यह विविध विषय विभूषित मासिक पत्रिका थी और इसने साहित्य की सारी विधाओं को रचनात्मक समृद्धि दी।

'भारत मित्र' का प्रकाशन कलकत्ता से आरंभ हुआ और इस पाक्षिक पत्रिका का पहला अंक 17 मई 1878 ई० में प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक *पं० छोटू लाल मिश्र* थे, जबकि इसके प्रबंधकर्त्ता का दायित्व पं० दुर्गा प्रसाद मिश्र ने संभाला। इसका मुख्य उद्देश्य था– 'जया स्तु सत्यनिष्ठाना येषा सर्वे मनोरथाः।'[9] दसवें अंक से यह पत्रिका साप्ताहिक हो गयी और इसके काफी पाठक भी हुये। पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी इसमें छपने लगीं। 22 जून सन् 1879 ई० के 'भारत मित्र' में श्री राधाचरण गोस्वामी का वह पत्र छपा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि स्वामी दयानन्द से वेद विद्या का ज्ञान प्राप्त करने अमेरिका के कई पादरी बम्बई में आये हुए हैं। इसी अंक में महाराष्ट्र की (विवादास्पद और अस्थिर मतिवाली) प्रसिद्ध महिला रमाबाई का भी पत्र छपा है जिसमें उन्होंने कामाख्या यात्रा का वर्णन किया है।[10] हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में 'भारत मित्र' का ऐतिहासिक योगदान है। अपने युग की यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी और इसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालमुकुन्द गुप्त आदि की रचनाएं नियमित छपा करती थीं। 1897 ई० में यह पत्रिका दैनिक पत्र के रूप में भी प्रकाशित हुई। इसका सम्पादन *पं० हरमुकुन्द शास्त्री* ने भी किया।[11] ''हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास'' के अनुसार, इसका संपादन *बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं० लक्ष्मीनारायण गर्दे* और *पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी* ने किया।[12]

सार सुधा निधि भी अपने युग का तेजस्वी साप्ताहिक पत्र है और इसने तत्कालीन पत्रकारिता को नया आयाम दिया। *सदानन्द जी, गोविन्द नारायण जी, दुर्गा प्रसाद मिश्र जी और शम्भूनाथ जी* के संयुक्त प्रयास से लगभग 12 वर्षों तक इस साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ।[13]

'उचितवक्ता' का प्रकाशन 7 अगस्त 1880 ई० को सूतापट्टी, बड़ा बाजार, कलकत्ता से हुआ।[14] इसके सम्पादक प्रकाशक *पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र* थे। इस पत्र के प्रकाशन वर्ष को लेकर कई भ्रान्तियाँ हैं। डॉ० रामरतन भटनागर ने इसका प्रकाशन वर्ष 1884[15] ई० माना है जबकि कमलापति त्रिपाठी इसे 1879[16] ई० में प्रकाशित मानते हैं। राधाकृष्ण दास के अनुसार, इसका वर्ष 1878[17] है और रामचन्द्र शुक्ल ने भी इसी का समर्थन किया है।[18] अपने प्रवेशांक में ही इस पत्र ने स्वाधीनता के महत्व को स्पष्ट किया। प्रथम अंक में प्रकाशित सपादकीय टिप्पणी है- "पहिली उन्नति और अबकी उन्नति में अन्तर इतना ही है कि वह स्वाधीन भारत की उन्नति थी, उस उन्नति में उन्नतिमना स्वाधीनता-प्रिय भारत संतानों का गौरव था, और यह पराधीन भारत की उन्नति हो रही है। इस उन्नति में पदानत निर्वीर्य्य हम भारत कुलतिलकों की अगौरव के सहित गर्दन नीची होती जाती है। . . . . . दोष दिखानेवालों को भी उचितवक्ता और समदर्शी होना उचित है अन्यथा झूठे दोष दिखाकर अकारण ही किसी को आक्रमण करने के सिवाय झगड़ा बढ़ाकर गाली खाने के और कुछ फल नहीं होता। अतएव ऐसे स्थल में यथार्थ समदर्शी उचित परामर्शदाता "उचितवक्ता" का अत्यत ही प्रयोजन है। पाठक! इस निमित्त आज यह उचितवक्ता आप लोगों के सम्मुखीन है। पूर्वोक्त दोषों का निवारण करना ही इसका एक मात्र उद्देश्य है। अपने यथार्थ दोषों को इसमें अंकित देखकर भी यदि कोई इस पर क्रुद्ध होंगे तो उस विषय में इसका कुछ दोष नहीं, कारण 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।"[19]

1880 ई० में प्रकाशित होनेवाली कुछ अन्य पत्रिकाएं थीं- 'जैन पत्रिका,' 'धर्म नीति तत्व' और 'क्षत्रिय पत्रिका'। 'जैन पत्रिका' का प्रकाशन प्रयाग से हुआ और शेष दो पत्रिकायें *बाबू रामदीन सिंह* के संपादकत्व में पटने से प्रकाशित हुईं। बाबू रामदीन सिंह खड्ग विलास प्रेस के मालिक थे और खड़ीबोली हिन्दी के विकास में इस प्रेस की भूमिका ऐतिहासिक थी। 1881 ई० में प्रकाशित होनेवाली उल्लेखनीय

पत्रिकायें थी नवीन वाचक सा० गोंडा भारत दीपिका मा०) लखनऊ, 'आरोग्यदर्पण' (मा०) प्रयाग और 'आनद कादंबिनी' (मा०) मिर्जापुर। कहना न होगा कि *पं० बद्रीनारायण उपाध्याय* द्वारा सम्पादित 'आनन्द कादंबिनी' हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसमें उपाध्याय जी की रचनाओं की संख्या अधिक होती थी और परिनिष्ठित भाषा के कारण इस पत्रिका को काफी सम्मान भी मिला।

1883 ई० में प्रतापगढ से निकलने वाला 'हिन्दुस्तान' पत्र का हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में प्रमुख स्थान है। 1885 ई० से यह कालाकांकर से प्रकाशित होने लगा। कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह इसके प्रकाशक थे और प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समाज सुधारक एवं राष्ट्रवादी नेता महामना *पं० मदनमोहन मालवीय* ने इसका सम्पादन किया। बाद में बाबू बालमुकुन्द ने इसके सम्पादन का दायित्व सभाला। भारत की राजनीतिक जागृति में इस पत्र का ऐतिहासिक योगदान है।

1883 ई० में ही *पं० प्रतापनारायण मिश्र* ने कानपुर से 'ब्राह्मण' नामक पत्र का प्रकाशन-सम्पादन आरंभ किया। 'ब्राह्मण' अपने समय का तेजस्वी पत्र था और निर्भीकता, राष्ट्रवादिता एवं साहित्यिक संस्कारों के कारण यह पत्र पाठकों में काफी लोकप्रिय भी हुआ। अर्थाभाव के कारण प० मिश्र ने इसका प्रकाशन बंद कर दिया और खड्ग विलास प्रेस के मालिक बाबू रामदीन सिंह ने इसे खरीद लिया। कुछ दिनों तक यह पटना से भी प्रकाशित हुआ।

इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी पत्रकारिता को व्यापक परिवेश मिला और संख्या एवं स्तरीयता की दृष्टि से इसका काफी विकास भी हुआ। बिहार के सन्दर्भ में हिन्दी पत्रकारिता का विकास वस्तुतः इसी काल में होता है। बिहार का पहला पत्र 'बिहार बंधु' माना जाता है। यह भारत का दूसरा समाचार पत्र भी माना जाता है।[20] 'बिहार बंधु' पहली बार कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[21] दो वर्षों तक कलकत्ता से प्रकाशित होने के बाद यह पत्र पटना चला आया और 21 मार्च 1924 ई० तक यह प्रकाशित हुआ। 'बिहार बंधु' मूलतः एक साप्ताहिक समाचार-पत्र था, किन्तु साहित्यिक सामग्री का भी इसमें

प्रकाशन होता था। इसमें कई महत्त्वपूर्ण कविताएं प्रकाशित हुईं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

> "स्वागत ! प्रिय बिहार बंधु ! हो स्वागत तेरा,
> नूतन भाव नयी आशा के स्वागत तेरा !
> नवजीवन संचार हुआ है उदय तुम्हारा,
> बहुत सो चुके बन्धु ! उठो, दो हमें सहारा !"[22]

'बिहार बंधु' की साहित्यिकता के प्रति इतिहास ग्रंथों की उपेक्षा पर प्रहार करते हुए डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद ने सच ही लिखा है- "यह बड़े खेद और आश्चर्य की बात है कि हिन्दी के इतने प्रभावकारी और लोकप्रिय पत्र के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य का इतिहास अभी मौन है और हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में इसका अभी तक समुचित मूल्यांकन भी नहीं हुआ है। इस पत्र के बिना बिहार के हिन्दी साहित्य का अध्ययन अधूरा रह जायेगा। 19वीं शताब्दी के हिन्दी साहित्येतिहास में 'बिहार बंधु' की अपनी देन है। हिन्दी के अनुसन्धायकों का ध्यान इस ओर आना चाहिये। इस पत्र की पुरानी फाइलों का उद्धार शीघ्र होना चाहिए। इस दिशा में बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् और काशी नागरी प्रचारिणी सभा को कारगर कदम उठाने चाहिए।"[23]

'बिहार बंधु' के बाद 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिकाओं में 'विद्यार्थी' (1876), 'आर्यवृक' (1878), 'विद्या धर्म दीपिका' (1889), 'विद्या विनोद' (1880), 'मोतीचूर' (1880), 'चैतन्य पत्रिका' (1883) 'आर्यावर्त्त मासिक' (1888), 'द्विज' (1889), 'ब्राह्मण' (1897)[24] उल्लेखनीय हैं।

19वीं शताब्दी में बिहार से प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी पत्रिकाओं में 'बिहार हेराल्ड' (1872), 'इन्डियन क्रॉनिकल' (1873), 'कायस्थ गजट' (1880), 'बिहार टाइम्स' (1881) उल्लेखनीय हैं। मूलतः ये पत्र अंग्रेजी समाचार पत्र थे किन्तु इनमें साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन भी होता था। डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा के कई उपयोगी लेख इन पत्रों में प्रकाशित हुए।

19वीं शताब्दी में बिहार में सबसे पहले उर्दू पत्रकारिता ही विकसित हुई। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, "बिहार से निकलने वाले समाचार पत्रों में सबसे पहले उर्दू का ही समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। यह साप्ताहिक अखबार बंगाल-बिहार की राजधानी कलकत्ता से 1810 ई० में निकला

था इसका नाम उर्दू अखबार था [25] बगाल से अलग होने के बाद बिहार से जो पहला उर्दू अखबार निकला, वह था- 'नूरूल-अनवार'। यह साप्ताहिक अखबार था और इसमें खबरों के साथ उर्दू गजलें भी छपती थीं। तत्कालीन बिहार के कई प्रमुख शायरों की रचनाएं इस अखबार में प्रकाशित हुई। 1868 ई० में मुजफ्फरपुर से 'अखबारूल अखयार' नामक उर्दू पत्र प्रकाशित हुआ। 1869 में पटना से 'चश्म-ए-इल्म' नामक पाक्षिक अखबार प्रकाशित हुआ। इन दोनों पत्रों में साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन भी होता था। पटना, आरा और मुजफ्फरपुर के अतिरिक्त बिहार के अन्य शहरों से भी उर्दू के कई महत्त्वपूर्ण अखबार प्रकाशित हुये। ऐसे अखबारों में 'गुलदस्त-ए-नजायर', 'मेरातुल हिन्द', 'जि़या-उल-अबसार', 'अंजुमन मोजाकर-ए-एल्मीया', 'सफीरे सफीर', 'मजमउल फवायद', 'अल-पंच', (यह बिहार का पहला हास्य रस का पत्र था), 'नसीमे सहर', 'नसीमे सारन', ' मुशीरे बिहार', ' सुबहेवतन', 'शरहुल अखबार', 'गुलदस्त-ए-बिहार' उल्लेखनीय है। इन पत्रों ने न केवल उर्दू पत्रकारिता की जीवन्तता को रेखांकित किया बल्कि इनके द्वारा उर्दू साहित्य का विकास भी सभव हो सका।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि उन्नीसवीं शताब्दी में बिहार में उर्दू पत्रकारिता अपनी विकसित अवस्था में थी। शताब्दियों तक फ़ारसी के राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होने के कारण उर्दू पाठकों की सख्या अधिक थी। कोर्ट, कचहरी में भी उर्दू और फारसी का ही प्रचलन था। इसलिये बिहार में उन्नीसवी शताब्दी में उर्दू पत्रकारिता की जीवत परम्परा विद्यमान थी। यह सच है कि 19वीं शताब्दी में बिहार से प्रकाशित होनेवाली अधिकाश उर्दू पत्रिकाए समाचारपरक थीं, किन्तु उनमें साहित्यिक सामग्री का भी पर्याप्त प्रकाशन होता था।

उन्नीसवीं शताब्दी में बिहार में हिन्दी पत्रकारिता की भी स्थिति अच्छी ही कही जायेगी क्योंकि इस शताब्दी में बिहार से लगभग छह दर्जन से अधिक हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन संभव हो सका। इनमें से अधिकांश पत्रिकाएं अपने मूलरूप में साहित्यिक थीं। तत्कालीन बिहार में शोषण का साम्राज्य था। समस्त उत्तरी बिहार निलहों के अत्याचार से आक्रान्त था। प्रेस को भी पूरी स्वतंत्रता न थी। इसलिये अनेक समस्याओं को साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से रेखांकित किया जाता था। इस

प्रकार तत्कालीन परिस्थितियों ने बिहार को हिन्दी पत्रकारिता को मूलत साहित्यिक पत्रकारिता के रूप में विकसित होने को बाध्य किया।

उन्नीसवीं शताब्दी में बिहार में अंग्रेजी पत्रों का प्रकाशन अत्यल्प हुआ। बंगाल की तरह बिहार जागरूक और पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति से परिचित प्रान्त नहीं था। यहाँ अंग्रेजी पाठकों की संख्या भी अत्यल्प थी। अत: अंग्रेजी पत्रकारिता उस शताब्दी में अपना कोई सार्थक इतिहास नहीं बना सकी। राष्ट्रीयता का अभाव भी कई अंग्रेजी पत्रों में परिलक्षित हुआ। फिर भी, अंग्रेजी पत्रों के माध्यम से अत्यल्प ही सही, अंग्रेजी की साहित्यिक रचनाओं को प्रकाशित होने का मौका मिला।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बिहार में साहित्यिक पत्रकारिता के लिये अनुकूल वातावरण तैयार हो गया था। 20वीं शताब्दी में बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता ने रचनात्मकता, अनुसंधान और आलोचना के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ प्राप्त कीं।

संदर्भ

1- सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, डॉ० ए० आर० देशाई०, पृ०-193

2- Poetry (Literature) is the criticism of life - M Arnold

3- हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, त्रयोदश भाग,

स०- डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, पृष्ठ - 96.

4- उपर्युक्त, - पृष्ठ - 96.

5- उपर्युक्त, - पृष्ठ - 97

6- उपर्युक्त, - पृष्ठ - 99.

7- उपर्युक्त, - पृष्ठ - 100

8- उपर्युक्त, - पृष्ठ - 100

9- भारत मित्र, 17 मई, 1878, पृष्ठ - 1

10- हिन्दी पत्रकारिता; डॉ० कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठ - 118-119.

11 उपर्युक्त, पृष्ठ 1.9

12 त्रयोदश भाग, पृष्ठ - 103

13- हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास, प० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, पृष्ठ - 167

14- हिन्दी पत्रकारिता, डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र, पृष्ठ - 123

15- Rise and Growth of Hindi Journalism, Page - 3

16- पत्र और पत्रकार, पृष्ठ - 115.

17- हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास, पृष्ठ - 23

18- हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ - 458.

19- उचितवक्ता, 7 अगस्त 1880 ई०, पृष्ठ - 2

20- पहला समाचार पत्र 'अल्मोडा अखबार' है।

21- सन् 1872 में कलकत्ते के 79, मानिकतला स्टीट से इसका प्रकाशन आरंभ हुआ था।

समाचार पत्रों का इतिहास, पं० अम्बिका दत्त व्यास, पृष्ठ - 141.

22- 'बिहार बंधु', 30 अप्रैल 1922, कवि - श्री चन्द्रदीप प्र० गुप्त।

23- बिहार का प्रथम हिन्दी पत्र 'बिहार बन्धु', नई धारा, अप्रैल-मई 1975, पृष्ठ - 34.

24- यह पहले कानपुर से प्रकाशित होता था किन्तु 1897 ई० में बाबू रामदीन सिंह के स्वत्वक्रय के बाद खड्ग विलास प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ।

25- बिहार में पत्रकारिता का विकास, लेखक - शिवेन्द्र नारायण, कांग्रेस अभिज्ञान ग्रंथ, 1962 (पटना), पृष्ठ - 176



2

'बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का आरंभिक चरण'
(1872–1900 ई०)

यह सर्वविदित है कि बिहार की हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव 'बिहार बंधु' नामक साप्ताहिक-पत्र के प्रकाशन के साथ 1872 ई० में कलकत्ते में हुआ। इस पत्र का अपना समृद्ध प्रेस था जो 1874 में स्थानान्तरित होकर पटना चला आया।[1] 'बिहार बंधु' साप्ताहिक समाचार पत्र होने के बावजूद अपने साहित्यिक स्वरूप के कारण काफी चर्चित हुआ। पत्र के परवर्ती संपादक बाबू कमला प्रसाद वर्मा का कथन है कि 'बिहार बंधु' की सृष्टि पं० बालकृष्ण भट्ट के निरीक्षण में हुई थी।[2] डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद ने वर्मा जी के मत का खंडन करते हुये लिखा है कि 'बिहार बंधु' के प्रारंभिक प्रकाशन में प्रयाग के पं० बालकृष्ण भट्ट का न तो कोई योग था, न उनके निरीक्षण में इसका जन्म हुआ था और न ये पं० केशवराम भट्ट के सगे भाई ही थे। हाँ, आगे चलकर, जब 'बिहार बन्धु' का प्रकाशन पटना से होने लगा तब पं० बालकृष्ण भट्ट की कुछ चीजें जब कभी अवश्य छपती थीं।[3] वासुदेव जी ने अनेक साक्ष्य देकर यह भी स्पष्ट किया है कि 'बिहार बंधु' का प्रकाशन 1872 ई० में न होकर 1873 में हुआ था। 'बिहार बंधु' की ही फाइल से निम्नलिखित उद्धरण देते हुये उन्होंने अपनी बात प्रमाणित की है–"रे। सारे

जहान के मालिक छोटे को बड़ा करने वाले कम अकल को अकल देनेवाले सब बातों के जाननेवाले तुझसे हमारी यह प्रार्थना है कि जिस तरह से हम तेरी कृपा की लाठी को थामे हुये बराबर एक बरस तक चले गये, वैसे ही आगे भी चलें। अपने काम को नेक नियति के साथ करें और अपने पढ़ने वालों के काम आवें।'' [5]

'बिहार बन्धु' के प्रकाशन वर्ष की तरह इसके आद्य सम्पादक के नाम पर भी काफी मतभेद है। पत्रकार रामजी मिश्र मनोहर ने पं० केशवराम भट्ट को इसका प्रथम सम्पादक स्वीकार किया है,[5] जबकि युगलकिशोर अखौरी ने *मुंशी हसन अली* को इसका आद्य सम्पादक सिद्ध किया है।[6] 'बिहार बंधु' की सूचना के आधार पर यह स्वत: सिद्ध हो जाता है कि 1876 के पूर्व इसके सम्पादक मुंशी हसन अली थे, जबकि 1876 में इसका सम्पादन *दामोदर शास्त्री* ने किया। 1877 में पं० *केशवराम भट्ट* इसके सम्पादक बने और उनके सम्पादन में इस पत्रिका ने काफी लोकप्रियता अर्जित की।[7] श्री केशवराम भट्ट मुंशी हसन अली के सहपाठी थे और उनके सम्पादनकाल में भी पत्रिका को अपना सहयोग देते थे।

प्रारम्भ में 'बिहार बन्धु' साप्ताहिक पत्र था और इसमें हिन्दी और फारसी भाषा का प्रयोग होता था। कुछ दिनों के बाद यह पूर्णरूपेण हिन्दी का पत्र हो गया। कालान्तर में यह पाक्षिक और फिर मासिक रूप में भी प्रकाशित हुआ। तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर इसने सजग दृष्टि रखी और कम ही समय में एक मानक हिन्दी-पत्र के रूप में इसकी पहचान बन गयी। 'बिहार बन्धु' 1923 ई० तक प्रकाशित होता रहा। बीच-बीच में इसके सम्पादक बदलते रहे, कुछ दिनों के लिए प्रकाशन भी स्थगित हुआ, किन्तु इसने परिस्थितियों के सामने हार नहीं मानी और आधी शताब्दी तक एक मुखर पत्र के रूप में सामयिक समाचार एवं विचारों के साथ साहित्यिक रचनाएं भी पाठकों को प्रदान करता रहा।

'बिहार बंधु' का हिन्दी पत्रकारिता के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार की अपितु एक समर्थ साहित्यिक वातावरण भी तैयार किया। इसकी महत्ता को रेखांकित

करते हुये श्री ज्ञानवर्धन मिश्र ने सच ही लिखा है-'बिहार बधु' अपने जमाने का उत्तर भारत का सबसे लोकप्रिय पत्र था। इसका राष्ट्रीय स्वर भी मुखर था। यह अंग्रेजी शासन या उस समय के ताकतवर राजा-महाराजाओं के खिलाफ भी आवाज बुलद करने में नहीं हिचकता था। 'बिहार बंधु' ने हिन्दी पत्रकारिता के विकास तथा खड़ीबोली आंदोलन को सफल बनाने में जो ऐतिहासिक योगदान दिया, दुर्भाग्यवश हिन्दी साहित्य के इतिहास में उसका उल्लेख महत्त्वपूर्ण ढग से नहीं किया गया। 'बंधु' की पुरानी फाइलों के अवलोकन मे पता चलता है कि यह पत्र खडीबोली आन्दोलन का प्रमुख पुराधा था। मगर हम बधु को बिहार के राजनीतिक, सास्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक एव आर्थिक विकास की अर्द्ध शताब्दी का जीवत इतिहास कहें तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।''[8]

बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने भी 'बिहार बधु' की प्रशसा करते हुये लिखा है-''बांकीपुर का 'बिहार बंधु' हिन्दी के पुराने जीवित अखबारों में दूसरा है-यदि बिहार निवासी 'बिहार बंधु' को फिर से ताजा कर लेंगे तो उन्हें अभिमान करने की जगह होगी कि हिन्दी में उन्ही का अखबार है।'[9] इतना ही नहीं, बिहार के तत्कालीन गवर्नर ने इस पत्र की लोकप्रियता पर प्रकाश डालते हुये स्पष्ट लिखा है-"The Behar Bandhu, a Hindi Journal is reported to be an excellent paper, un objectionable in tune and largely subscribed to by Hindus, among whom it has much influence."[10]

'बिहार बधु' सामाजिक समस्याओं के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने के साथ प्रबल साहित्यिक पत्र भी सिद्ध हुआ। हिन्दी भाषा के विकास के लिये 'बिहार बंधु' द्वारा किये गये प्रयत्न काफी मूल्यवान कहे जा सकते है। डॉ० आनन्द नारायण शर्मा ने 'बिहार बंधु' के ऐतिहासिक अवदानों को रेखांकित करते हुए लिखा है- ''इसने बिहार में आने के कुछ दिनों बाद कचहरियों में उर्दू के साथ हिन्दी को स्थान दिलाने के लिये आन्दोलन किया, जिसके परिणाम स्वरूप 1 जनवरी 1881 ई० को न्यायिक कार्यों में फारसी के साथ नागरी लिपि के प्रयोग की घोषणा हुई। दरअसल, हिन्दी भाषा या नागरी लिपि जनचेतना का प्रतीक थी और इनकी स्वीकृति का अर्थ था प्रशासन द्वारा लोकचेतना का सम्मान। इस प्रकार 'बिहार बधु' का यह कार्य व्यापक राष्ट्रीय आन्दोलन का ही अंग था।''[11]

'बिहार बधु' ने अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं की तरह राष्ट्रीय आंदोलन को सार्थक रचनात्मक अभिव्यक्ति दी। गोरी सरकार की दमन नीति और भेद-भाव बर्ताव पर आक्षेप करते हुये 'बिहार बधु' ने स्पष्ट लिखा था-"आजकल तो हम हिन्दुस्तानियों की हालत भेड, बकरे से भी बदतर हो गई है। भेड़-बकरी के तो सींग भी हैं जिनमें वह अपने दुश्मन पर हम्मला करती हैं। पर हमें क्या है जिससे हम अपने दुश्मन पर हमला करें। हर्बा छीनकर सरकार ने हम हिन्दुस्तानियों को लगड़ा लूला तो बना ही रखा था, कानून अखबार जारी करके हमें गूगा बना दिया।"[12]

'बिहार बंधु' में छपी रचनाओं का साहित्यिक मूल्य था। पं० बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, देवी प्रसाद, बनवारी लाल इस पत्र के मुख्य लेखक थे।[13] 'बिहार बंधु' ने अनेक साहित्यिक प्रवृत्तियों को पहली बार अपने पत्र के माध्यम से उजागर किया। इसमें 1881 ई० में 'स्वप्न' शीर्षक कविता का प्रकाशन हुआ[14] जो छायावादी संस्कार की कविता है। डॉ० आनन्द नारायण शर्मा ने इस कविता को मुक्त छंद की प्रथम हिन्दी रचना मानते हुये स्पष्ट लिखा है-"लेकिन अब यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि कम से कम मुक्त छद के प्रवर्त्तन का श्रेय निराला को नही है। वह उनके जन्म से भी पहले हिन्दी में महेश नारायण की 'स्वप्न' शीर्षक कविता के माध्यम से आ चुका था।"[15] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'बिहार बंधु' अपने युग का एक समग्र पत्र था और बिहार में साहित्यिक परिवेश के निर्माण में इसकी भूमिका ऐतिहासिक रही।

पटना से 1876 ई० में प्रकाशित होनेवाले 'विद्यार्थी' नामक पाक्षिक का भी साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। दो अंकों के बाद इसका प्रकाशन स्थगित हो गया। पुनः 1878 ई० में *पं० दामोदर शास्त्री* के सम्पादन में यह खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर से प्रकाशित हुआ। मात्र दो वर्षों तक प्रकाशित होने के बावजूद इस पत्र ने अनेक नये रचनाकारों को अभिव्यक्ति का सार्थक मंच प्रदान किया।

ज्येष्ठ गंगा दशमी संवत् 1938 वि० (सन् 1881 ई०) में पटना के खड्ग विलास प्रेस से 'क्षत्रिय पत्रिका' नामक एक जातीय पत्रिका प्रकाशित हुई। जातीय पत्रिका होने के बावजूद मूलरूप में यह सहित्यिक पत्रिका थी। यह डबल डिमाई आकार में प्रकाशित होती थी और इसमें 40 पृष्ठ होते थे। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर इसका उद्देश्य प्रकाशित होता था-

विकसित क्षत्रिय पत्रिका भारत सरवर मौंह
करहि कृपा यापर सदा जौ क्षत्रिय नरनाह
तौ यइ थोरहिं दिवस में सकै सकल दुख मेटि।
करै एकता प्रबल पुनि सब क्षत्रियन समेटि।।''

''क्षत्रिय पत्रिका' के प्रकाशन का उद्देश्य क्षत्रिय-समाज की बुराइयां दूर करना और उसकी समुन्नति का दिशा-बोध कराना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने इस देश के राजे-रजवाड़ों से आर्थिक सहायता के लिये निवेदन किया था।''[16] 'क्षत्रिय पत्रिका' मूलतः विविध विषय विभूषित पत्रिका थी किन्तु इसका मूल स्वर साहित्यिक ही था। इसके प्रथम अक में क्षत्रियों का इतिहास प्रकाशित हुआ। जातीय शीर्षक होने के बावजूद यह पत्रिका एक विस्तृत रचनात्मक दृष्टिकोण लेकर प्रकाशित हुई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प० दामोदर शास्त्री, खड्ग बहादुर मल्ल, प० अम्बिका दत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी इस पत्रिका के मुख्य रचनाकार थे। लंदन के किंग्स कॉलेज के संस्कृत, अरबी, फारसी के अध्यापक जी० एफ० निकोल की भी कई रचनाएं इसमें प्रकाशित हुई।

'क्षत्रिय पत्रिका' 1889 ई० तक प्रकाशित हुई। ग्राहक संख्या सीमित होने के कारण इसका प्रकाशन बीच में एक वर्ष के लिए बन्द भी हुआ था। अपनी सीमाओं के बावजूद, इस पत्रिका ने साहित्यिक परिवेश के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इस संबंध में डॉ० कृष्णानन्द द्विवेदी ने सच ही लिखा है, ''यह जातीय उत्थान तथा हिन्दी की प्रगति के लिए निरन्तर सचेष्ट रही। साहित्यिक पत्रकारिता को उसने नई गति एव नवीन चेतना प्रदान की। भाषिक दृष्टि से विचार करने पर इस तथ्य का खुलासा होता है कि पूर्व प्रकाशित 'बिहार बन्धु' की उम्दा भाषा से इसने कोई सीख नहीं ली। इसी कारण 'बहड़ाईच', 'ऐम्यता', सेंदुर', 'माईल' और 'सारी' (साड़ी के लिए) के साथ-साथ क्रिया-पदों का दोप खटकता है। फिर भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इसने लोगों की साहित्यिक अभिरुचि बढ़ाने में एवं हिन्दी सेवकों का मनोबल ऊंचा करने में महत् योग दिया था।''[17]

खड्ग विलास प्रेस, पटना से ही 1883 ई० में 'भाषा प्रकाश' नामक पत्र प्रकाशित हुआ। यह मूलतः छात्रोपयोगी पत्र था किन्तु इसमें

साहित्यिक रचनाएं भी छपा करती थीं। 1883 ई० में ही पं० अम्बिका दत्त व्यास ने भागलपुर से 'वैष्णव पत्रिका' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन-सम्पादन आरम्भ किया। 1884 ई० में इसका नाम बदल कर 'पीयूष प्रवाह' कर दिया गया। यह डिमाई अष्ट पत्री आकार की पत्रिका थी और इसमें सोलह पृष्ठ होते थे। इसमें पर्याप्त साहित्यिक सामग्री छपती थी। 'श्री हरिश्चन्द्र कला' के प्रकाशन पर इस पत्रिका ने कविता में अपना विचार व्यक्त किया था—

"हिन्दी कविता के सविता के जस पुंजन सौं।
सरस सुजानन को पुलकित कीनो तैं।।
बाबू हरिचन्द जू के ग्रथन के खोज वारे।
रसिक समूहन सौं धन्यवाद, लीनो तैं।।
कबि अम्बादत्त तोहि कहा लौं सराहै आजु।
करि दोनों भाषा को अभाग अति छीनों तैं।।
रहो बाबू रामदीन सिंह धीर बीरवर।
नागरी को उमगि खजानो भरि दीनो तैं।।
- - - - - - - - - - - - - -
कपटी कलंकी कूर सरबस हारिन की।
नासिका मरोरि कै पताल सरसातो कौन।।
अम्बादत्त कहै या बिहार के बिहारिन को।
नर अरू नारिन को छाती सरसातो कौन।।
होतो जो न रामदीन सिंह सो उछाही आज।
हरीचन्द कला को पियूष बरसातो कौन।।"[18]

1884 ई० में चम्पारन से 'चम्पारन हितकारी' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसने न केवल चम्पारण के दलितों की आवाज बुलन्द की, अपितु साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन भी किया। इसकी सारी सामग्री इसके संपादक पं० शक्तिनाथ झा स्वयं लिखते थे। सन् 1884 ई० में प्रकाशित होने वाला चम्पारण का पहला पत्र 'चम्पारन-हितकारी' निस्संदेह चम्पारण मे प्रकट होने वाली विद्रोह भावना का पहला आभास है। पं० शक्तिनाथ झा के संपादकत्व में प्रकाशित होनेवाला यह साप्ताहिक पत्र अल्पजीवी होने के बावजूद अपनी प्रगतिशील चेतना और सार्थक सामाग्रियों के कारण विशेष महत्त्व का अधिकारी है।

खड्ग विलास प्रेस, बाकीपुर, पटना के स्वत्वाधिकारी *बाबू रामदीन सिंह* ने 1885 ई० में 'श्री हरिश्चन्द्र कला' नामक एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। पैंतीस वर्षों तक प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृतियों को धारावाहिक रूप में छापकर लोगों तक पहुंचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सहित्यिकता और राष्ट्रीयता से अनुप्राणित इस पत्रिका ने लोकरुचि के साहित्यिक संस्कार के साथ राष्ट्रीय चेतना उदीप्त करने में भी योग दिया।''[19] बाबू रामदीन सिंह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के घनिष्टतम मित्रों में थे। ''उनके निधन के बाद बाबू साहब ने उनकी स्मृति में 'श्री हरिश्चन्द्र कला' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।''[20]

भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध साहित्यकार गोपाल राम गहमरी ने अपने संस्मरण में इसके प्रकाशन का उल्लेख करते हुये लिखा है- ''मैं पटना नार्मल स्कूल में पढ़ता ही था कि 1884 ई० में बाबू रामदीन सिंह ने भारतेन्दु की 'श्री हरिश्चन्द्र कला' का वृहदाकार प्रकाशन आरंभ कर दिया था। उस कला की बधाई में बिहार के बड़े-बड़े कवियों ने अपनी काव्य शक्ति का परिचय दिया था। मुंगेर के पण्डित कन्हाईलाल मिश्र, पटना कॉलेज के पण्डित छोटूराम त्रिपाठी, दरभंगा के पं० भुवनेश्वर मिश्र, भागलपुर के साहित्याचार्य पण्डित अम्बिका दत्त व्यास आदि बड़े-बड़े कवियों की बधाइयां मिली थीं। 'ये नई-उनई हरिश्चन्द्र कला' समस्या की पूर्ति में एक बड़ी पुस्तक तैयार हो गई थी।''[21] यह पत्रिका रॉयल साईज में छपती थी और 1936 ई० तक प्रकाशित हुई। बाबू रामदीन सिंह के बाद इसका संपादन उनके पुत्र श्री रामरणविजय सिंह और श्री नरेन्द्र नारायण सिंह ने किया। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर इसके मूल उद्देश्य को रेखांकित करने के लिये निम्नलिखित छंद छपता था-

''जगत उजागर औ नागर त्यौ नागरी को
गये कविराज सुनि कठिन हियो करो ।
भारत का प्रेमी अरू नेमीहु बिलोकि ताहि
ताके जस-पुजन को गोनहु कियो करो ।।
ताकी कवितान को वितान एक ठौंहि गाँथि
कीनो है प्रकास थापै नजर दियो करो ।

चहकि चहू दिसतें रसिक चकार गन
हरीचदकला के पियूष का पियो करो

बुध को हिय वारिधि सा उलगै हुलसै अति प्रीतिहु की कमला ।
अति कूरन की कलुषी कविताहु चलो मति ज्यों कुलटा अबला ।।
चुप ह्वानो सबै तिमि चोर चलाकहु नाहि करै किहूँ को जो भला ।
रसखाने अमंद अनंद करो या नई उनई हरिश्चन्द्र कला ।।''

ऐसा नहीं है कि इस पत्रिका में सिर्फ बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाए ही छपती थीं। भारतेन्दु-युग और द्विवेदी-युग के कई चर्चित लेखकों की प्रमुख रचनाओं का प्रकाशन इस पत्रिका में होता था। इसके सात लगातार अकों[22] में 'प्रियप्रवास' का धारावाहिक प्रकाशन हुआ। तत्पश्चात् पुस्तक प्रकाशित हुई।[23] आगे चलकर इस पत्रिका में अनेक प्रकार की रचनाएं प्रकाशित होने लगी। डॉ० धीरेन्द्र नाथ सिंह के अनुसार,-''इस पत्रिका का सम्पादन-भार जब नरेन्द्र नारायण सिंह ने उठाया, तब इसमें समाचार, पुस्तक समीक्षा, स्वतंत्र लेखों के प्रकाशन के साथ ही पुस्तकों का धारावाहिक प्रकाशन भी होता रहता था। इसमें प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की पृष्ठ-संख्या अलग होती थी और पत्रिका की पृष्ठ-संख्या अलग।''[24] निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 'श्री हरिश्चन्द्र कला' बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता की एक महान् उपलब्धि है। इस पत्रिका ने न केवल बिहार अपितु समस्त हिन्दी प्रदेशों के लेखकों को स्थापित किया, उन्हें विस्तृत पाठक वर्ग प्रदान किया। 1888 ई० में *अम्बिका दत्त व्यास* एव *भवानीचरण मुखोपाध्याय* के संयुक्त संपादकत्व में 'सारन सरोज' नामक एक पत्र प्रकाशित हुआ। यह पत्र भी वास्तविक रूप में एक साहित्यिक पत्र था और बिहार के साहित्यिक जागरण में इसकी उल्लेखनीय भूमिका थी।

चम्पारन से प्रकाशित होने वाली दूसरी साहित्यिक पत्रिका 'विद्या धर्म दीपिका' है। बीस पृष्ठों की यह पत्रिका विविध विषय विभूषित मासिक पत्रिका थी और 1889 ई० से इसका प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके सम्पादक *पं० चन्द्रशेखरधर मिश्र* भारतेन्दु युग के मूर्धन्य कवि और विख्यात वैद्य थे। ये खड़ीबोली हिन्दी के आदिकवि[25] ही नहीं आशुकवि[26] भी थे। एक घंटे में ये एक सौ अनुष्टुपछन्दों की रचना कर लेते थे।[27]

इसका प्रकाशन मिश्र जी के गाँव रत्नमाला (बगहा) से होता था। इसके कुछ अंक गोरखपुर से भी प्रकाशित हुए। [28]

'विद्या धर्म दीपिका' भारतेन्दु युग की प्रतिनिधि पत्रिका थी। यह विद्याधर्म के प्रचार और कुरीतियों के परिहार के लिये कटिबद्ध थी और इसकी प्रतियाँ मुफ्त बाँटी जाती थीं। [29] लगभग सोलह वर्षों तक प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका की प्रसार संख्या लगभग एक हजार थी। [30] इसके वितरण में यह ध्यान अवश्य रखा जाता था कि इसकी प्रति सही हाथों तक पहुंचे। 'विद्या धर्म दीपिका' विविध विषय विभूषित पत्रिका होने के बावजूद अपनी साहित्यिक सामग्री के कारण काफी चर्चित हुई। तत्कालीन परिस्थितियों और मानसिकता पर इस पत्रिका ने तीखा कटाक्ष किया। 'पूरे बाबू' और 'निरे पण्डित' शीर्षक व्यंग्यात्मक वार्तालाप में इस तथ्य को देखा जा सकता है।

''बाबू- कैसा पूरा बाबू
पण्डित जी- लीजिये सुनिये एक लावनी (खड़ीबोली)

लावनी

जो अद्भुत अपनी रंगत चाल दिखावें ।
वे ही जग में पूरे बाबू कहलावैं ।।
जो होटल में जा मदिरा खूब उड़ावें ।
औ बिस्कुट, रोटी, बीफ मांस भी खावै ।।
तज सती अपानी नारि उसे कलपावें ।
वेश्या को अपनी प्यारी नारि बनावैं ।।
वे ही जग में पूरे बाबू कहलावैं ।।(1)

नारी से अपनी उलटी वृत्ति करावें ।।
घर रुपये हों नहीं तो ऋण मंगवावें ।
व्यापार नहीं जो रहे तो घर बिचवावें ।।
या बेच जमींदारी ही रुपये आवें ।
वे ही जग में पूरे बाबू कहलावैं ।।(2)

जितनी वेश्या आवें तो नाच करावें ।
चाहे अपने लड़के भूखों मर जावें ।।

सैतानी सूरत म्लेच्छ चाल मनभावें
तज जाति पाँति का भाँति मुच्छी न्हावें ।।

वे ही जग में पूरे बाबू कहलावें ।।(३)
घर में भुमरी का बच्चा भगने गावे ।
चाहे खान बिन उपास तो कर जावें ।।
पर मौका महफिल सादी का आ जावें ।
तो बढ़कर नवाब से भी ठाट बढ़ावें ।।
वे ही जग में पूरे बाबू कहलावें ।।(४)"[31]

'विद्या धर्म दीपिका' का प्रकाशन चम्पारन की पत्रकारिता को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण हिन्दी पत्रकारिता की एक महान उपलब्धि रही है। इसमें देश के महान साहित्यकारों की महत्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के सारे अंकों की खोज करने पर भारतेन्दु युगीन हिन्दी साहित्य के संबंध में कुछ नये तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं। बहुत से अज्ञात् किन्तु समर्थ साहित्यकारों का पता चल सकता है और बहुत से ज्ञात साहित्यकारों के विषय में नयी जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है।

दिसम्बर 1890 ई० में [32] बेतिया के चन्द्रिका प्रेस से 'चम्पारन – चन्द्रिका' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हुआ। यह पत्र खड़ीबोली कविता आंदोलन का मुखपत्र था। पं० भुवनेश्वर मिश्र इसके प्रथम संपादक थे। [33] "बाबू अयोध्या प्र० के खड़ीबोली आन्दोलन का संपादन पं० भुवनेश्वर मिश्र करते थे।" [34] 'चम्पारन – चन्द्रिका' ने खड़ीबोली काव्य आन्दोलन को पूरी गति दी। "खड़ीबोली के विषय में 'चम्पारण – चन्द्रिका' और 'हिन्दुस्तान' में भी आन्दोलन हुआ और उक्त बाबू साहब की उत्तेजना से बाबू गोविन्द प्रसाद ने खड़ीबोली के कई उत्तमोत्तम पद्य 'चम्पारण चन्द्रिका' में छपवाए।" [35] खड़ीबोली आंदोलन के पुरोधा अयोध्या प्रसाद खत्री ने भी 'चम्पारन चन्द्रिका' के माध्यम से अपने आंदोलन को सबल बनाया। चन्द्रिका के एक अंक में उन्होंने घोषणा की कि रामचन्द्र का पद्यमय खड़ीबोली में वर्णन करने वाले को 10 रुपये प्रति पद्य की दर से पुरस्कार देंगे। [36] चार वर्षों तक प्रकाशित होने वाले इस पत्र के पहले संपादक मिश्रटोला

दरभंगा निवासी पं. भुवनेश्वर मिश्र थे। मिश्र जी के पश्चात् इसका सम्पादन क्रमशः पं. चन्द्रशेखरधर मिश्र, श्री महावीर सिंह 'बीरन'[37] और पं० बलराम मिश्र[38] ने सभाला। इस पत्र के व्यवस्थापक बेतिया निवासी श्री बृजवंश लाल मिश्र थे।[39] चन्द्रिका के प्रकाशन में रामनगर के राजा श्री मोहन विक्रम शाह देव, उनके सभासद पं० देवी प्रसाद उपाध्याय, दीवान विन्ध्यवासिनी प्रसाद और बेतिया राज के कार्यालय अधीक्षक श्री महावीर प्रसाद ने वित्तीय सहयोग दिया।

चम्पारन में प्रकाशित होनेवाली इन तीनों पत्रिकाओं पर अपना मंतव्य देते हुये डॉ० सतीश कुमार राय ने लिखा है - ''इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी में चम्पारन से मात्र तीन ही पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं। संख्या में अल्प होने के बावजूद प्रभाव की दृष्टि से इनका ऐतिहासिक महत्त्व है। यह भी एक संयोग है कि इन तीनों पत्रिकाओं का प्रकाशन बेतिया राज के अन्तिम महाराजा हरेन्द्र किशोर के शासन काल (1883-1893ई०) में हुआ। कला, साहित्य और संस्कृति के संरक्षक महाराजा हरेन्द्र किशोर ने इन तीनों पत्रों को अपना उदार संरक्षण दिया और इन पत्रों ने चम्पारन की सीमाओं को ही नहीं, संभावनाओं को भी अभिव्यक्त कर अपनी महान भूमिका सिद्ध की। 'चम्पारन हितकारी' अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण के लिये, 'विद्या धर्म दीपिका' अपनी साहित्यिक और वैद्यक सामग्री के लिये और 'चम्पारण चन्द्रिका' खड़ीबोली काव्य आन्दोलन में अपनी अग्रता के लिये हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी बनी रहेगी।''[40]

खड्ग विलास प्रेस, पटना से 1890 ई० में 'द्विज पत्रिका' नामक एक पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके संपादक का नाम इस पर प्रकाशित नहीं होता था, किन्तु प्राप्त विवरण के आधार पर यह ज्ञात होता है कि तारनपुर निवासी *बाबू दीनदयाल सिंह* इसके सम्पादक थे।[41] यह पत्रिका भी साहित्यिक पत्रिका थी और यह चौदह पृष्ठों में प्रकाशित होती थी। कुछ लोगों ने इसे जातीय पत्रिका की श्रेणी में रखा है।[42] किन्तु यह साहित्यिक पत्रिका थी और 'द्विज' से इसका अभिप्राय बुद्धिजीवी और बौद्धिक वर्ग था। इसका सिद्धान्त वाक्य था-

''अहो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कुलोत्तम
आलस आपनो दूरि धरो ।

कुल देस औ धर्म के प्रेम
उमग सों एकता के रसरङ्ग भरा
जुपै रीति औ नीतिन दखन चाहहु
मानहु बोल हमारो खरो
अति विद्या विवेक भरी उमगी
'द्विज पत्रिका पै अनुराग करो।''

'द्विज पत्रिका' के स्वरूप और प्रसार के संबंध में सूचना देते हुये डॉ० धीरेन्द्र नाथ सिंह ने लिखा है- ''इसकी दो सौ प्रतियाँ छपती थीं। यह ऐसी पत्रिका थी, जिसमें समाचार ही नहीं छपते थे, बल्कि पुस्तकों का धारावाहिक प्रकाशन भी होता था। मुख्यतः बिहार की पाठशालाओं के विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकों से लेकर समकालीन लब्ध-प्रतिष्ठा साहित्यकारों की कृतियों का भी इसमें धारावाहिक प्रकाशन होता था।''[43] इस पत्रिका में भारतेन्दु युग के मूर्धन्य लेखकों की रचनाएं प्रकाशित होती थीं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अतिरिक्त प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास, खड्ग बहादुर मल्ल जैसे लेखकों की कई प्रसिद्ध रचनाओं का इसमें प्रकाशन हुआ है।

''भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के स्त्री सेवा-पद्धति, भूकम्प, नौकरों की दिशा, आशा, लाख-लाख की एक बात, ईश्वर के वर्त्तमान होने के विषय में, शब्द में प्रेरक शक्ति, बुरी रीतें, भगवत-स्तुति जैसे निबन्ध आज दुर्लभ है, जो इस पत्रिका के विभिन्न अंकों में बिखरे पड़े हैं। इनका 'सूर्योदय' शीर्षक निबन्ध इस पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।''[44] इतना ही नहीं, पं० प्रतापनारायण मिश्र का 'अपभ्रंश' शीर्षक प्रसिद्ध लेख इसी पत्रिका में छपा था।[45] इस प्रकार यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि 'द्विज पत्रिका' ने साहित्यिक पत्रकारिता के उन्नयन में निर्णायक पहल की। इसकी प्रसार संख्या अल्प थी किन्तु इसके पाठक सजग और साहित्यिक प्रवृत्ति के थे। पूरे देश में इसके पाठक फैले हुये थे। अतः कहा जा सकता है कि 'द्विज पत्रिका' ने बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता को एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान किया।

खड्ग विलास प्रेस से ही 'ब्राह्मण' नामक प्रसिद्ध पत्रिका के प्रकाशन ने बिहार की समृद्ध साहित्यिक पत्रकारिता का साक्ष्य प्रस्तुत किया। पहले इसका प्रकाशन कानपुर से *पं० प्रतापनारायण मिश्र* के संपादन में होता था।

यह मार्मिक पत्रिका थी और निर्भीक साहित्यिक पत्रकारिता होने के कारण हिन्दी पाठकों में काफी लोकप्रिय भी थी इसका पहला अंक होली के दिन 15 मार्च 1883 को प्रकाशित हुआ था। बिहार में इसका प्रकाशन 1890 ई. में आरंभ हुआ। बीच में 17 महीने तक इसका प्रकाशन बंद रहा। किन्तु 1887 ई. में मिश्र जी के निधन तक यह नियमित रूप से प्रकाशित होता रहा। 1890 ई. में जब यह पटना आया तो भी मिश्र जी संपादक के रूप में उससे सम्बद्ध थे। मिश्र जी के निधन के बाद बाबू रामदीन सिंह ने इसका संपादन किया। 1897 ई. तक वे संपादक के रूप में इससे सम्बद्ध रहे। मिश्र जी के निधन के बाद इसका श्रद्धांजलि अंक[46] प्रकाशित हुआ जो सामग्री और संचयन की दृष्टि से काफी सराहनीय माना जा सकता है। मिश्र जी के निधन के पश्चात् 'ब्राह्मण' के ग्यारहवें वर्ष का आरंभ नये ढंग से हुआ। मंगलाचरण में कहा गया-

"जै जय ग्राहक पाठक दर्शक। अन्त बिने तुम लोगन पाही ।
है कर में तुम लोगन के यह। ब्राह्मण राखन राखन नाही ।।4।।
जैसी दया तुम राखत आवत। राखिहौ जो उहि भाँति सदाहीं ।
तो हमहूं रघुनाथ कृपा मुंह मोरब ना निज जीवन माही ।।5।।
हानि औ लाभ की नाहिं हमें परवाह अहै यह सत्य बतावैं ।
केवल मित्र प्रतापनारायण मिश्र के नाम को पत्र चलावैं ।।6।।
जेते सहायक त्यों शुभचिन्तक ताके अहै सब पाहि सुनावैं ।
पूरन वर्ष भये दश के दस ग्यारह में हम हाथ लगावैं ।।7।।[47]

बाबू रामदीन सिंह ने 'ब्राह्मण' की पृष्ठ संख्या बढ़ा दी और वार्षिक चन्दा में भी छह आने की वृद्धि कर दी। "ब्राह्मण बराबर छपा करेगा यह निश्चय किया गया है। प्रतिमास 5 फार्म रहा करेगा। जिन लोगों को लेना हो उनलोगों को उचित है कि मूल्य अग्रिम एक रुपया और पोस्टेज छह आना भेज दें। ऐसा न होने से ब्राह्मण मेरे प्रेमी लोगों के सिवाय किसी के पास न जायेगा - रामदीन सिंह।"[48] इसके पहले खड्ग विलास प्रेस के मैनेजर ने भी इस आशय की सूचना दी थी- "यदि सचमुच 'ब्राह्मण' के हितैषी है, तो कृपापूर्वक इसका मूल्य, जितना आपके यहाँ बाकी है, भेज दीजिए; क्योंकि अब इसका आकार प्रतिमास पाँच फार्म रहेगा और डाक व्यय प्रतिमास आठ आना लगेगा। यदि आप पहले मूल्य न भेजेंगे तो यह कभी आपके पास न जायेगा, सचेत होइए और

मुझे आशा है कि आप नादेहन्द ग्राहकों में अपना नाम न लिखाइएगा। इसके सिवा कोई पृथक् पत्र भी अब आपके पास न आयेगा मूल्य म पास 15 अगस्त तक आ जाना चाहिए।''[50]

'ब्राह्मण' 15 जुलाई 1889 ई० [50] में श्री खड्ग विलास प्रेस से छपने लगा किन्तु आठवें वर्ष इसके प्रबंध का पूरा भार बाबू रामदीन सिंह ने अपने ऊपर ले लिया। मिश्र जी ने अपनी पुस्तकों तथा 'ब्राह्मण' के अधिकार भी बाबू साहब को दे दिया था।इस संबंध में उन्होंने स्वयं लिखा है- ''हमारी पुस्तकों तथा 'ब्राह्मण' पत्र के स्वत्वग्रहीता खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर के स्वामी श्री महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह महोदय हैं। हमने जो कुछ लिखा है, लिखते हैं, लिखेंगे उसके अधिकारी वही हैं अथवा वह जिसे आज्ञा दें वह सही, फिर हमसे लोग न जाने क्या जानकर एतद् विषयक पत्र-व्यवहार करते हैं। हम इस विज्ञापन द्वारा सब साहबों को सूचना दिये देते है कि जिन्हें हमारे लेख देखने की साध हो अथवा छापने की इच्छा हो उन्हें बांकीपुर के पते पर चिट्ठी-पत्री भेजना चाहिए, हम जवाब-अवाब न देंगे बल्कि जवाबी कार्ड या टिकट हजम कर जायेंगे . . स . . म . . . झे ?''[51]

यह सच है कि 'ब्राह्मण' अपनी तेजस्विता के साथ कानपुर में प्रकट हुआ लेकिन पटना ने उसे जीवतता दी, आर्थिक सम्बल दिया, सुव्यवस्था दी और मिश्र जी को व्यवस्थापकीय दायित्वों से मुक्त कर उन्हें अमर साहित्य रचने का अवसर प्रदान किया। इतना ही नहीं, मिश्र जी के निधन के बाद बाबू रामदीन सिंह ने अपने सुयोग्य संपादन से इसकी स्तरीयता को बनाये रखा। मिश्र जी ने बाबू रामदीन सिंह की सदाशयता और आत्मीयता पर मुग्ध होते हुए कहा था- ''किन्तु ! हाँ श्रीमन्म् महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह महोदय को धन्यवाद न देना कृतघ्नता है। जिन्होंने हिन्दी के प्रचारार्थ तन, मन और वित्त बाहर धन उस दशा में लगा रखा है, जबकि सद्ग्रंथों के ग्राहक इतने भी नहीं है कि कनिष्ठिका से लेकर अंगुष्ट तक तो गिने जाएँ। इस प्रत्यक्ष प्रमाण से यह तो एक बालक भी समझ सकता है कि धन बटोरने के लिये झूठ-मूठ देश-भक्ति के गीत नहीं गाते परन्तु सचमुच सद् विद्यारत्न का वितरण करना चाहते हैं और इस प्राकृतिक उदारता के पलटे में अपनी नामवरी फैलाने की भी गुप्त अथवा प्रगट कारवाई नहीं करते वरंच दूसरों ही का

नाम चिरस्थायी [illegible] निःस्वार्थ देशबन्धु का [illegible] वह उपकार [illegible] अपना स्वार्थ [illegible] करते हैं कि [illegible] पर इस [illegible] हो जाने पर [illegible] हमें फिर भी [illegible] हमारे कथन [illegible] हम उन्हें [illegible]

'ब्राह्मण' [illegible] नामक एक [illegible] प्रकाशित होने [illegible] बाबू चण्डीप्रसाद [illegible] और बिहार [illegible] गया था। इसमें [illegible] था। इतना ही नहीं, हिन्दी की [illegible] थी।

1897 ई. में भारतेन्दु [illegible] 'कवि समाज पत्र' आरम्भ किया। [illegible] के प्रमुख थे और उन्होंने पटना कवि समाज की स्थापना की [illegible] कवि समाज में स्थानीय कवियों के अतिरिक्त [illegible] समस्यापूर्तियाँ पढ़ते थे। उन समस्यापूर्तियों के लिये 'कवि समाज' मासिक पत्र के रूप में प्रकाशित होता था। [illegible] 'समस्यापूर्ति' था, किन्तु कवि समाज का पत्र होने के कारण इसे 'कवि समाज पत्र' कहा जाता था। इसका पहला अंक 25 मार्च 1897 ई. को प्रकाशित हुआ। प्रसिद्ध साहित्यकार बाबू [illegible] संपादक थे। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार इसके तीन वर्षों तक प्रकाशित होने का विवरण मिलता है। समस्यापूर्ति के माध्यम से [illegible] की वृद्धि में इस पत्र का उल्लेखनीय योगदान [illegible] बिहार में होता था।

खड्ग विलास प्रेस, पटना से प्रकाशित होनेवाला अन्तिम पत्र 'शिक्षा' है। 'शिक्षा' भी [illegible] ई. में ही प्रकाशित हुई। इसके प्रथम संपादक पं.

सकलनारायण शर्मा थे। यह डबल डिमाई सोलह पेजी आकार में मुद्रित होती थी। इसमें बालकों के लिये शिक्षा विषयक लेख मुख्य रूप से छापे जाते थे। कभी-कभी इसमें समाचार भी छपते थे किन्तु वे काफी संक्षिप्त होते थे। यह पत्रिका लगभग चालीस वर्षों तक प्रकाशित हुई। बाद में इसमें साहित्यिक लेख और पुस्तक समीक्षाओं का प्रकाशन भी होने लगा। पहले यह साप्ताहिक पत्रिका थी, किन्तु कालांतर में यह मासिक हुई। इसके सम्पादकों में ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रो० अक्षय मिश्र और दुर्गा प्रसाद त्रिपाठी के नाम महत्त्वपूर्ण है। शैक्षिक विकास के साथ साहित्यिक विकास के लिए भी 'शिक्षा' द्वारा किये गये प्रयत्न सराहनीय कहे जा सकते है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में प्रकाशित होनेवाली प्रमुख पत्रिकाओं में 'आर्यावर्त्त' का भी विशेष स्थान है। 1 अप्रैल 1898 ई० को पटना से आर्यसमाज के मुखपत्र के रूप में यह प्रकाशित हुआ। प्रारंभ में इसका प्रकाशन मासिक पत्रिका के रूप में हुआ किन्तु आगे चलकर यह साप्ताहिक हो गया। दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों की प्रस्तुति के साथ इस पत्रिका ने आर्यो पर कई उपयोगी लेखों का प्रकाशन किया। इतना ही नहीं, इसमें अन्य विधाओं की साहित्यिक रचनाएं भी प्रकाशित होती थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में ही प्रसिद्ध साहित्यकार *पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा* ने आरा से 'मनोरंजन' नामक एक साहित्यिक-पत्र का प्रकाशन सम्पादन आरंभ किया। तीन वर्षों तक प्रकाशित होनेवाला यह पत्र अपनी सुरुचिपूर्ण सामग्री और प्रखर संपादकीय दृष्टि के कारण काफी लोकप्रिय हुआ। इसमें शर्मा जी के अतिरिक्त आचार्य शिवपूजन सहाय[53] सहित कई महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों की रचनाएं प्रकाशित होती थी।इसी के आसपास आरा से ही साप्ताहिक 'राम' के प्रकाशन का विवरण भी मिलता है।[54] 'राम' भी साहित्यिक पत्र था और इसमें हिन्दी के मूर्धन्य लेखकों की रचनाएं छपती थीं। 1934 ई० में इस पत्रिका के किसी अंक में आचार्य शिवपूजन सहाय का जस्टिस सर ज्वाला प्रसाद पर लिखी जीवनी छपी है।[55] कहना न होगा कि अपनी साहित्यिक सामग्री और आदर्शवादिता के कारण साप्ताहिक 'राम' का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है।

इस प्रकार, उन्नीसवीं शताब्दी में बिहार ने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को अनेक जीवंत और समर्थ पत्रिकाएं प्रदान किया। न केवल

राजधानी पटना में बल्कि भागलपुर, चम्पारन, सारण और आरा से भी कई साहित्यिक पत्रिकाओं ने बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता की जीवन्तता को रेखांकित किया। अम्बिका दत्त व्यास द्वारा सम्पादित 'पीयूष प्रवाह' के अतिरिक्त 'श्रीकमला', 'प्रेमाभक्ति', 'हितकारि सत्संग', 'गृहस्थ' 'सारन सरोज' जैसे क्षेत्रीय पत्रों ने भी साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन कर अपने-अपने क्षेत्र में साहित्यिक परिवेश का निर्माण किया।

वस्तुतः उन्नीसवीं शताब्दी बिहार के संदर्भ में पत्रकारिता का आरंभकाल है किन्तु इस आरंभकाल में ही बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान बांकीपुर, पटना के खड्ग विलास प्रेस का रहा। यह प्रेस तत्कालीन हिन्दी साहित्यकारों का मुख्य केन्द्र था और भारतेन्दु युग के प्रायः समस्त महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों की रचनाएं इसी प्रेस में प्रकाशित होती थीं। इस प्रेस ने लगभग दस साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। उन पत्रिकाओं में प्रमुख रचनाकारों की रचनाएं सहज ही उपलब्ध हो जाती थीं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बिहार की साहित्यिक हिन्दी पत्रकारिता ने न केवल बिहार के ऐतिहासिक जागरण को अभिव्यक्त किया बल्कि इसने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के समक्ष एक प्रतिमान भी रखा। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि उन्नीसवीं शताब्दी की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में बिहार और उत्तरप्रदेश का योगदान ही सर्वाधिक है।

संदर्भ

1- भूलती भागती यादें, कमला प्र० वर्मा, पृष्ठ-166.

2- उपर्युक्त, पृष्ठ-169

3- बिहार का प्रथम हिन्दी पत्र 'बिहार बंधु,' नई धारा, वर्ष-26, अंक-1-2, अप्रैल-मई, 1975, पृष्ठ-20.

4- बिहार बंधु, जिल्द दो, संख्या-एक, 1 मार्च 1874, पृष्ठ-6.

5- आर्यावर्त, 28 दिसम्बर 1982.

6- सरस्वती, 1909 ई० पृष्ठ-197

7- बिहार बन्धु, 15 दिसम्बर 1904, पृष्ठ-2.

8 बिहार बंधु का [illegible]

[illegible]

9 [illegible] प्रथम भाग

10- बिहार बंधु 13 अक्टूबर 1881, पृष्ठ 2

11- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, पाटलिपुत्र टाइम्स 1 जनवरी 1987, पृष्ठ 6

12- बिहार बंधु, 21 अगस्त 1881, पृष्ठ 2

13- भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता डॉ. [illegible], पृष्ठ 143

14- बिहार बंधु, 13 अक्टूबर 1881 ई.

15- हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन, पृष्ठ 434.

16- आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्ग विलास प्रेस की भूमिका, डॉ. धीरेन्द्र नाथ सिंह, पृष्ठ 106.

17- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ 44

18- पीयूष-प्रवाह, भाग-तीन, संख्या-चार. 25 मई 1885 ई., पृष्ठ 16-17

19- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, डॉ. आनन्द नारायण शर्मा, पाटलिपुत्र टाइम्स, 1 जनवरी 1987, पृष्ठ-6.

20- आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्ग विलास प्रेस की भूमिका, डॉ. धीरेन्द्र नाथ सिंह, पृष्ठ-169.

21- जयंती स्मारक ग्रंथ, सं. - बाबू शिवपूजन सहाय, पृष्ठ 390.

22- चैत्र शुक्ल द्वितीया संवत् 1970 से आश्विन शुक्ल द्विज संवत् 1970 (सन् 1913 ई.) तक.

23- 'प्रियप्रवास' का प्रथम पुस्तकाकार संस्करण 1914 ई. में प्रकाशित हुआ।

24- आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्ग विलास प्रेस की भूमिका, पृष्ठ - 171.

25- हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ - 407.

26- मिश्रबंधु विनोद, पृष्ठ - 421.

27- हिन्दी साहित्य और बिहार, भाग-तीन, पृष्ठ-137.

28 समाचार पत्रों का इतिहास अम्बिका प्रसाद वाजपेयी पृष्ठ- 01

29- मैंने विद्या धर्म दीपिका नाम की एक मासिक पत्रिका निकाली थी, उद्देश्य था विद्या-प्रचार, कुरीति-परिहार और विद्याधर्म विस्तार आर उसकी प्रतियाँ मुफ्त बाँटी जाती थीं।'' - प. चन्द्रशेखर धर मिश्र, पचम बिहार-हिन्दी साहित्य सम्मेलन (19 अप्रैल, 1924 ई०) को दिये गये अध्यक्षीय अभिभाषण से।

30- 'उसकी दो हजार प्रतियाँ एक ही बार छपी थीं, नहीं तो सदा एक ही हजार छपती रहीं।' उपर्युक्त.

31- 'विद्या धर्म दीपिका' खंड दो, सख्या-12, पृष्ठ-16.

32- श्री रमेशचन्द्र झा ने 'चम्पारन की साहित्य-साधना' में इसका प्रकाशन वर्ष 1887 माना है जो भ्रामक है। समाचार पत्रों का इतिहास, हिन्दी साहित्य और बिहार, भाग-तीन और पश्चिमी चम्पारन की हिन्दी पत्रकारिता में इसका प्रकाशन वर्ष 1890 ई० माना गया है। यही प्रामाणिक प्रकाशन वर्ष है।

33- मिश्र जी बाद में 'हिन्दी बंगवासी' के सम्पादक भी हुये। इनके उपन्यास 'बलवन्त भूमिहार' को हिन्दी का प्रथम यथार्थवादी उपन्यास माना जाता है।

34- अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ, संपादक-शिवपूजन सहाय, प्रो० नलिन विलोचन शर्मा, पृ- 232.

35- उपर्युक्त, पृष्ठ 232.

36- 'चम्पारन-चन्द्रिका' में खत्री जी ने एक सूचना दी थी कि जो रामचन्द्र का पद्यबद्ध वर्णन खडीबोली के पद्य में करेगा, उसे प्रति पद्य 10 रु० पुरस्कार दिया जायेगा। रामचरित मानस के अनुवाद के लिये भी उन्होंने घोषणा की थी कि जो कोई मानस का अनुवाद खडीबोली में करेगा, उसे प्रत्येक दोहे और चौपाई के लिये (1) रुपया पुरस्कार वे देंगे - खत्री स्मारक ग्रंथ, पृष्ठ - 311

37- राज हाई स्कूल, बेतिया के प्रधान पडित और प्रसिद्ध कवि गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य गुरु।

38- हिन्दी साहित्य और बिहार, भाग-चार, पृ०-226

39- बिहार की साहित्यिक प्रगति, प्रकाशक-बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना।

40- पश्चिमी चम्पारन की हिन्दी (द्वितीय सम्करण पृ 53

41- आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्ग विलास प्रेस की भूमिका डॉ. धीरेन्द्रनाथ सिंह पृष्ठ 17।

42- Journalism in Bihar Page - 69

43- आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्ग विलास प्रेस की भूमिका, पृष्ठ 172

44- उपर्युक्त, पृष्ठ-172.

45- खंड-एक, संख्या - 23.

46- दसवें वर्ष का अंक 11-12 (संयुक्तांक) और ग्यारहवें वर्ष का पहला अंक।

47- 'ब्राह्मण', खंड-11, संख्या-एक।

48- 'ब्राह्मण', खंड-10, संख्या-11 और 12, विशेष विज्ञापन, पृष्ठ - 44

49- ब्राह्मण, खंड-नौ, संख्या-12, 'पहले इसे पढ़ लीजिए'

50- ब्राह्मण, खंड-छह, संख्या-12

51- 'ब्राह्मण', खंड-सात, संख्या-12.

52- 'ब्राह्मण', खंड-आठ, संख्या एक, नवसम्भाषण, पृष्ठ - 4

53- शिवपूजन रचनावली, खंड-चार, पृष्ठ-69-71.

54- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, शैलेन्द्र कुमार मोहन, हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, भाग-एक, पृष्ठ-178.

55- शिवपूजन रचनावली, खंड-चार, पृष्ठ-83-85



'बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता की विकास यात्रा'

(1901–1947 ई०)

बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध राजनीतिक हलचल, सांस्कृतिक जागरण और साहित्यिक उन्नयन का काल है। इस काल में जहाँ एक ओर देश को महात्मा गाँधी का नेतृत्व मिला, अंग्रेजों की दमन-नीति के खिलाफ देशवासी संगठित होने लगे, वहीं दूसरी ओर संचार माध्यमों का विकास हुआ और हिन्दी पत्रकारिता की व्यापक प्रगति भी हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति इस काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रवृत्ति, इस कालावधि में प्रकाशित होनेवाली हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाओं में भी मिलती है।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक बिहार की साहित्यिक हिन्दी पत्रकारिता एक दिशा प्राप्त कर लेती है। बीसवी शताब्दी के आरम्भिक तीन दशकों में बिहार में अनेक राजनीतिक घटनाएं घटित होती है। शोषण से त्रस्त जनता का प्रतिकार आन्दोलन का रूप लेता है। महात्मा गाँधी चम्पारन जाकर निलहों के अत्याचार के खिलाफ सत्याग्रह करते है, असहयोग आन्दोलन शुरू होता है और पूरे प्रान्त में जागृति की एक नई लहर व्याप्त हो जाती है। इसी अवधि में बिहार अलग प्रान्त घोषित होता है। ये सारी घटनाएं इस कालावधि की पत्रकारिता को प्रभावित करती है। 'युवक', 'तरुण भारत', 'देश' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन राष्ट्रीय

का पूर्ण गति देता है विवेच्य में प्रकाशित हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का परिचय निम्नलिखित है।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बिहार से निकलने वाली पत्रिकाओं में औरंगाबाद से प्रकाशित 'लक्ष्मी उपदेश लहरी' का उल्लेखनीय स्थान है। कालान्तर में यही पत्रिका 'लक्ष्मी' के नाम से गया से प्रकाशित होने लगी। इसके संस्थापक *राय साहब लक्ष्मीनारायण लाल* थे। इस पत्रिका का अपना मुद्रणालय था और यह 1921 ई० तक लगातार प्रकाशित होती रही।[1] इसके संपादकों में *लाला भगवान दीन* भी एक थे। 'लक्ष्मी' मूलतः साहित्यिक पत्रिका थी और द्विवेदीयुगीन महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों की रचनाएं इसमें प्रकाशित होती थीं। 'लक्ष्मी' ने बिहार की साहित्यिक प्रगति के लिये एक समर्थ रचनात्मक मंच तैयार किया। मासिक 'लक्ष्मी' ने रचनात्मक साहित्य के साथ अनेक आलोचनात्मक रचनाओं को भी प्रकाशित कर अपनी समग्र साहित्यिकता का परिचय दिया। 'लक्ष्मी' में प्रकाशित कुछ लेख है- 'नाटक',[2] 'हिन्दी कवियों की अनोखी सूझ',[3] 'सुख और शांति',[4] 'अरे आनन्द'।[5] मन्नूलाल पुस्तकालय, बोध गया में आज भी 'लक्ष्मी' की फाइल उपलब्ध है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ही गया से 'उपन्यास कुसुमांजलि', 'साहित्य माला', 'विद्या' एवं 'हरिचन्द्र कौमुदी', नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। अल्पकाल तक प्रकाशित होनेवाली इन पत्रिकाओं ने भी अपनी समर्थ साहित्यिक दृष्टि का परिचय दिया। गया के देव नामक स्थान से प्रकाशित होने वाला मासिक पत्र 'कृष्ण' भी अल्पजीवी पत्र था किन्तु इसके बावजूद उसने विचारपरक साहित्य को महत्त्व दिया।

1902 ई० में दरभंगा से 'मिथिला मिहिर' नामक पत्रिका प्रकाशित हुई। 'मिथिला मिहिर' वस्तुतः द्विभाषीय पत्रिका थी और इसमें हिन्दी एवं मैथिली की रचनाएं प्रकाशित होती थीं। यह भी अपने वास्तविक स्वरूप में साहित्यिक पत्रिका थी और अनेक नये साहित्यकारों को इसने अभिव्यक्ति का एक सार्थक मंच प्रदान किया। इसी समय आरा से *बाबू ब्रजनन्दन सहाय* के संपादकत्व में 'साहित्य पत्रिका' नामक एक प्रौढ़ साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित हुई। वस्तुतः यह नागरी प्रचारिणी सभा, आरा की ओर से *पं० सकलनारायण शर्मा* के संपादन में प्रकाशित होनेवाली 'नागरी हितैषिनी पत्रिका' का ही परिवर्तित रूप थी।[6] 'ये दोनों पत्रिकाएं शुद्ध साहित्यिक पत्रिकाएं थीं। राष्ट्रभाषा और नागरी लिपि के प्रचार के

माथ समथ आर कातया का इसमें प्रकाशन हुआ

आरा प्रारम्भ से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। काशी के सीधे सम्पर्क में रहने के कारण आरा साहित्यिक चेतना से सम्पन्न क्षेत्र माना जाता रहा है। आरा से निकलनेवाली इन दोनों पत्रिकाओं ने बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता को न केवल समृद्ध किया। अपितु उसे एक सार्थक स्वरूप भी प्रदान किया। प्रसिद्ध साहित्यकार *पं० ईश्वरी प्र० शर्मा* ने आरा से ही 'मनोरंजन' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन-संपादन आरंभ किया। 'मनोरंजन' अपनी स्तरीय सामग्री और समर्थ संयोजन के कारण काफी चर्चित हुआ। तीन वर्षों तक प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका ने द्विवेदीयुगीन हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने के साथ हिन्दी पत्रकारिता की जीवंत साहित्यिकता का प्रतिमान भी प्रस्तुत किया। आरा से इसी समय 'राम' नामक एक साहित्यिक पत्र के प्रकाशन का विवरण भी मिलता है।[7]

1905 ई० में मोतिहारी से 'कुसुमांजलि' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। इसका पहला अंक जनवरी माह में मोतिहारी के क्राउन प्रेस से *पाण्डेय आनन्द बिहारी वर्मा* द्वारा प्रकाशित किया गया था। हिन्दी की प्रगति और साहित्यकारों का निर्माण करना ही उनके जीवन का मूलभूत उद्देश्य था। प्रारंभ में यह 48 पृष्ठों की पत्रिका थी किन्तु 1918 ई० में मूल्य को यथावत रखते हुये इसके पृष्ठों में कमी कर दी गई और यह 32 पृष्ठों में प्रकाशित होने लगी। यह पूर्णत. साहित्यिक पत्रिका थी और 1920 तक इसने बिहार में साहित्यिक जागरण के लिये ऐतिहासिक कार्य किये। इसमें उपन्यास, नाटक, कहानी, समालोचना, व्यंग्य, कविता, निबन्ध आदि विभिन्न विधागत रचनाएं छपती थीं। कभी-कभी इसमें राष्ट्रीय समाचार भी प्रकाशित होते थे। एक उदाहरण द्रष्टव्य है : "मोतिहारी की कचहरियों में काम करते हुए कुछ उत्साही सुजनों ने मिलकर स्वदेशी व्यवसाय को यथाशक्य उन्नत करने की इच्छा से यहाँ 'चम्पारन श्री लक्ष्मी शिल्पशाला' नाम का एक कार्यालय स्थापित किया है जिसमें अभी बम्बे के सलमेशन आर्मी का बना एक करघा और जुलाहोंवाला एक पिटलूम चल रहा है। अभी उस दिन कर्मयोगी महात्मा गाँधी ने शिल्पशाला में पदार्पण कर इसके संचालकों को उत्साह के साथ-साथ काम की कितनी बातों का उपदेश दिया। कवि ने कहा है- 'मंदाकिनी जल परस ते, कौन

पाप नहा कटि गए चम्पारण जिले के संबंध में महात्मा गांधी के अनुग्रह कुछ इसी तरह का दीख पड़ता है।[8]

1911 ई० में बिहार थियासाफिकल फेडरेशन द्वारा 'आत्मविद्या' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका प्रवेशांक मार्च में छपा और इसके सम्पादक *गोकुलनन्द प्रसाद वर्मा* थे। इस पत्रिका ने मुख्य रूप से धार्मिक पुनर्जागरण पर बल दिया। इसका उद्देश्य समाज को धार्मिक रूढ़ियों से मुक्त करना था। इसमें मानव प्रेम को रेखांकित करनेवाले साहित्य का प्रकाशन होता था और पुस्तक समीक्षाएं भी नियमित छपती थी। इस प्रकार साहित्यिक पत्रिका के रूप में भी इसका उल्लेख अनपेक्षित नहीं है। चार वर्षों तक निकलनेवाली यह पत्रिका पहले भागलपुर से प्रकाशित हुई, किन्तु शीघ्र ही इसका प्रकाशन पटना से होने लगा।

1914 ई० में पटना से दो महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ- 'प्रजाबंधु' और 'पाटलिपुत्र'। 'प्रजाबन्धु' साप्ताहिक पत्र था और *राजेन्द्र प्रसाद* तथा *जीवानंद शर्मा* ने इसका प्रकाशन आरंभ कराया। पटना सिटी से प्रकाशित होनेवाली इस साप्ताहिक पत्रिका ने अपने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के साथ साहित्यिक स्वरूप को भी बनाए रखा। 'पाटलिपुत्र' हिन्दी की एक समर्थ पत्रिका के रूप में चर्चित हुआ। इसका संपादन सुप्रसिद्ध बैरिस्टर *काशी प्रसाद जायसवाल* ने किया। इस पत्रिका के स्वरूप को स्पष्ट करते हुये *डॉ० आनन्द नारायण शर्मा* ने सच ही लिखा है- "गरचे इसमें इतिहास-पुरातत्व-संबंधी लेख अधिक छपते थे, लेकिन जायसवाल जी के क्रान्तिकारी विचारों ने इसे लोक-जागरण का भी संदेश-वाहक बना दिया। जायसवाल जी के बाद क्रमशः *बाबू सोना सिंह चौधरी* और *पारसनाथ त्रिपाठी* इसके संपादक हुए, पर इसमें वह तेजस्विता नहीं रह गई।"[9] 'पाटलिपुत्र' पुरातात्विक और ऐतिहासिक सामग्री के लिये भले ही चर्चित रहा हो किन्तु इसमें साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन भी कम नहीं हुआ है। हिन्दी के मूर्धन्य प्रारंभिक कहानीकार पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'बुद्धू का काँटा' पाटलिपुत्र में ही प्रकाशित हुई थी।"[10]

साप्ताहिक 'पाटलिपुत्र' का प्रकाशन हथुआ नरेश के एक्सप्रेस प्रेस से हुआ था। यह राष्ट्रवादी पत्र था और इसका मूल उद्देश्य भारतीय

जनजीवन में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करना था हों०   ने छह माह तक ही इसका सम्पादन किया किन्तु इस अल्प अवधि में भी उन्होंने स्पष्ट घोषणा की, "विश्व परिवेश में अंगरेजी सरकार युद्धों में फँस चुकी है और उसे अपनी कमजोर स्थिति का आभास होने लगा है। इसीलिए भारतवर्ष के स्वातंत्र्य आंदोलन को भी वह सख्ती से कुचल देना चाहती है। ताकि यह उपनिवेश भी इसके हाथों से न निकल जाय। परतु सरकार को यह सोच लेना चाहिए कि वह देश-प्रेम की व्यापक उत्तेजना को रोक सकने में अन्ततोगत्वा असफल रहेगी।" [11] गाँधी जी की चम्पारन-यात्रा की सार्थकता को रेखांकित करते हुए 'पाटलिपुत्र' ने लिखा था- "गाँधी जी की प्रवृत्ति, स्वभाव और काम करने में वैधानिक तरीकों से पूरे राष्ट्र का काम एक वैसे व्यक्ति के द्वारा संभव हो ही नहीं सकता जो सविनय अवज्ञा का एक निष्ठावान प्रवर्तक है . . . . . उनके काम में जितना भी अड़ंगा लगाया जाय, जनता उतनी ही उत्तेजित और दृढ़ सकल्प युक्त होती जाएगी। इसलिए इस अवसर पर एकमात्र बात जो कही जा सकती है वह यह है कि उनके काम को शांतिपूर्ण ढंग से चलने दिया जाय।" [12] 1921 ई० तक यह पत्र नियमित प्रकाशित होता रहा, किन्तु उसके बाद प्रकाशक और सम्पादक के मतभेद के कारण इसका प्रकाशन स्थगित हो गया। बाद में 1924 ई० में इसके कुछ अक आरा से भी प्रकाशित हुए।

1915 में आर्यसमाज की मासिक पत्रिका 'जिज्ञासु' का प्रकाशन शुरू हुआ। यह भी धार्मिक पुनर्जागरण की पत्रिका थी, किन्तु इसका साहित्यिक मूल्य भी कम नहीं था। यह सचित्र पत्रिका थी। *हरिनारायण शर्मा* और *वीरकेश्वर सिंह* इसके सम्पादक थे। इसके प्रथम अंक में ही सम्पादक ने इसके उद्देश्य को घोषित करते हुए लिखा, "प्यारे देशवासियों! राजनैतिक दृष्टि से भारत की वर्तमान अवस्था गिर चुकी है, हम पंगु होते जा रहे हैं। अतः ऐसी घड़ी में आप अपना सच्चा हितैषी निःस्वार्थ समुपदेशक 'जिज्ञासु' का आदर कीजिए, यथोचित प्रोत्साहन दीजिए, क्योंकि आप ही के हितार्थ नाना विघ्न-बाधाओं को पार कर यह आपके पास आया है। अतः अनुरोध है कि आप अपने उत्तरदायित्व को सोचिए-विचारिए।" [13] 'जिज्ञासु' ने अतीत गौरव का स्मरण कराते हुए देशवासियों को जागृत करने का रचनात्मक प्रयत्न भी किया था-

हाँ एसा मंत्र फूंक दो सब जाति जाग उठे
फिर लोक में दिला दो सम्मान मानवाना
चुपचाप बैठने का यह वक्त अब नहीं है
यों बेजबाँ रहोगे, कब तक जवान वालो ।।" [14]

1920-21 में मुजफ्फरपुर से प्रसिद्ध साहित्यकार *ललित कुमार सिंह नटवर* के सम्पादन में 'आशा' नामक पत्रिका आरम्भ हुई किन्तु तीन-चार अंकों के बाद ही इसका प्रकाशन स्थगित हो गया। 1920 में ही *डॉ० राजेन्द्र प्रसाद* ने पटना से 'देश' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। आरंभ में राजेन्द्र बाबू ही इसके संपादक थे। बाद में *आचार्य बदरीनाथ वर्मा* इसके संपादक हुये। [15] इसके सम्पादक मंडल में पं० रामचन्द्र त्रिवेदी, पं० मथुरा प्रसाद दीक्षित, श्री गजाधर प्रसाद अम्बष्ठ, पं० पारसनाथ त्रिपाठी और पीर मुहम्मद मूनिस सक्रिय थे। वस्तुतः "यह गाँधीवादी विचारधारा-प्रधान शुद्ध राष्ट्रीय पत्र था। बिहार के पत्रों में इसका वही स्थान है, जो उत्तरप्रदेश के पत्रों में *गणेश शंकर विद्यार्थी* के 'प्रताप' का था।' इसकी संपादकीय टिप्पणियों और प्रखर देशभक्तिपूर्ण कविताओं ने पाठकों को विशेष प्रेरणा दी।" [16] इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि अपने मूल रूप में राष्ट्रवादी होने के बावजूद, 'देश' ने पर्याप्त साहित्यिक सामाग्रियाँ प्रकाशित कीं।

1921 ई० में पटना से प्रकाशित होनेवाले 'तरुण भारत' को भी प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्रों में परिगणित किया जाता है। पटना, चौधरीटोला के रईस *नागेश्वर प्रसाद सिंह* ऊर्फ *लाल बाबू* ने इसका प्रकाशन कराया। वस्तुतः यह गाँधी जी द्वारा संपादित 'यंग इंडिया' का हिन्दी रूपान्तर था। *मथुरा प्रसाद दीक्षित* इसके संपादक थे और *रामवृक्ष बेनीपुरी* उनके मुख्य सहयोगी। गाँधीवादी पत्र होने के वावजूद यह अपने उग्र दृष्टिकोण के कारण काफी चर्चित हुआ। इतना ही नहीं, उग्र दृष्टिकोण के कारण ही इसके स्वत्वाधिकारी नागेश्वर बाबू को जेल की यातना भी झेलनी पड़ी थी। [17] इसके कुछ अंकों का संपादन *पं० बटुकदेव शर्मा* ने भी किया था किन्तु उनके संपादन में यह पत्र अपनी तेजस्विता की रक्षा नहीं कर सका।

चैत्र 1978 वि० (1921 ई०) में आरा से *आचार्य शिवपूजन सहाय* के संपादकत्व में 'मारवाड़ी सुधार' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। वस्तुतः यह आरा की मारवाड़ी सुधार समिति का मुखपत्र था। मारवाड़ी सुधार समिति की स्थापना तीन मारवाड़ी नवयुवकों श्री

नवरग लाल तुल्स्यान श्री हरिद्वार प्रसाद जालान और श्री दुर्गा प्रसाद पोद्दार न 1920 ई० में की थी [8] इस पत्रिका ने अपने उद्देश्य को रेखाकित करत हुये लिखा- इसका प्रधान उद्देश्य केवल मारवाडी-समाज की कुरीतियां को दूर करके उस समाज का वास्तविक परिष्कार करना ही है। इसके द्वारा समय-समय पर मारवाड़ी समाज की कुप्रथाओं की तीव्र एव निर्भीक आलोचना की जायेगी। मारवाडी- जाति की उन्नति का अपना एकमात्र लक्ष्य बनाकर यह सदा निष्पक्ष भाव से अपने मन्तव्य पर डटा रहेगा। यदि इसके द्वारा मारवाडी-समाज का कुछ भी मगल-साधन हो सका, तो यह अपना जन्म सार्थक समझेगा।'' [19]

'मारवाड़ी-सुधार' वैस एक जातीय पत्रिका थी किन्तु इसमें साहित्यिक रचनाए भी प्रकाशित होती थीं। इतना ही नही, राष्ट्रीयता के स्वर का भी इसके द्वारा मुखर किया जाता था। इसके संपादकीय वक्तव्यों में स्वयं आचार्य शिवपूजन सहाय ने कई महापुरूषो की जीवनिया लिखकर हिन्दी के जीवनी साहित्य को विकसित किया है। ऐसी जीवनियों में 'विजयी विद्यार्थी', [20] 'पं० भवानी दयाल जी की हिन्दी सेवा' [21] आदि प्रसिद्ध है। ललित निबधों में 'वसंत का स्वागत' विशेष महत्वपूर्ण है। इसकी कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है- ''सुबह का वक्त था। तड़के ही मीठी नींद लगी थी। पपीहे की मधुर-मधुर रट ने नींद उचटा दी। ऑखों का सुख जाता रहा। कानों का सुख सरसाने लगा। पपीहा भी अमृत बरसाने लगा। आनन्द से हृदय थिरकने लगा। प्राणों में पुलकावली छा गई। अनायास अन्तरात्मा ने पुकार कर कहा - 'आओ, आओ, प्यारे वसन्त! आओ प्रजारंजक ऋतुराज! आओ! कुसुम-किरीटी! आओ। सुमनशर सखे! किन्तु, हाँ, हाँ संभलकर आना, मचलकर नही। सबल होकर आना, निर्बल होकर नहीं। सफल होने आना, विफल होने नहीं।'' [22]

'मारवाड़ी-सुधार' में सटीक व्यंग्यों का प्रकाशन भी हुआ है। ऐसे व्यंग्यों में 'किरानी की त्रिमूर्ति' प्रसिद्ध है। उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है-

> ''*प्रथम मूर्ति*- सुबह में हाट-बाजार करना, रसोई बनाना, कपड़े कचारना, बच्चे-कुच्चों को गोद में लेकर खेलाना, अनेक घरेलू कामों में गृहिणी की सहायता करना। इस प्रकार प्रात:काल में किरानी स्त्रीलिङ्ग है।

द्वितीय मूर्ति दस बजते ही गैजी कमान की धुन में आफिस जाना और वहां कोल्हू के बैल की तरह हाडतोड मिहनत करके शाम तक खटते रहना बीच बीच में मालिक की कनेठियाँ और झिड़कियाँ तथा स-बूट पदाघात सहन करना। इस प्रकार वह दिन में पुल्लिङ्ग. है।

"*तृतीय मूर्ति*- दिनभर खटने और पदाघातपूर्वक अपमान सहते रहने से, रात को बेचारा किरानी देह के दर्द से सुस्त हो जाता है। घर आते ही निर्जीव की तरह सो जाता है। इसलिये वह रात को नपुंसक लिङ्ग. है।" [23]

इस व्यंग्य में न केवल किरानियों की दुर्व्यवस्था का चित्रण किया गया है बल्कि उन प्रक्रियाओं पर प्रहार भी किया गया है जो इन दयनीयताओं का कारण रही हैं। अपने समकालीन पत्रों पर भी 'मारवाड़ी-सुधार' ने व्यंग्यात्मक प्रहार किये थे। पत्रों की आर्थिक असमर्थता और स्वत्वाधिकारियों के अकारण हस्तक्षेप की ओर भी इस पत्रिका ने सकेत किया था। *'आदर्श की भ्रूण हत्या'* शीर्षक संपादकीय में इस तथ्य को देखा जा सकता है- "मेरे हाथ में दो पत्र हैं। एक तो यह और दूसरा 'आदर्श'। दोनों ही के प्रकाशक मारवाड़ी हैं। यह 'सुधार' तो मारवाड़ियों की एक सार्वजनिक संस्था का मुखपत्र है, पर 'आदर्श' एक खास व्यक्ति की निजी सम्पत्ति है। ईश्वर की कृपा से दोनों ही पत्र मुझे ऐसे मिले कि भाग्य को कोसने के सिवा और कोई चारा नहीं। मारवाड़ी-समाज की उदासीनता से 'सुधार' का बेड़ा शुरू से ही मंझधार में अँटका पड़ा है और 'आदर्श' का बेडा तो तीर ही की रेत में धंस गया। जिस समय 'आदर्श' का सम्पादन मेरे काँपते हुये हाथों में जबरदस्ती सौंपा गया, उस समय ऐसी-ऐसी लम्बी आशाएं मेरे सामने उपस्थित की गयीं कि साहित्य सेवा के नाम पर स्वार्थसिद्धि का बीड़ा मैंने झट उठा लिया। भावी आशाओं पर विश्वास करके मुझे आग्रह और अनुरोध अंगीकार करना पड़ा। किन्तु नतीजा बुरा हुआ। पाँच अंक निकलकर 'आदर्श' बंद हो गया।" [24] हिन्दी साहित्यकारों के निधन पर भी इस पत्रिका ने शोक व्यक्त करते हुये उनके महत्त्व को रेखांकित किया है। उदाहरणार्थ- 'हिन्दी का दुर्भाग्य' [25] शीर्षक संपादकीय देखा जा सकता है।

पटना सिटी से 1921 ई० में ही 'चैतन्य चन्द्रिका' नाम की मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई इसका पहला अंक फाल्गुन 1978 वि० (1921 ई०

में प्रकाशित हुआ यह पत्रिका भी अपनी साहित्यकता के कारण चर्चित हुई असमय ही हो जाने के कारण इस पर सुधी आलोचकों और अन्वेषकों का ध्यान नहीं गया। 25(क) इस पत्रिका के दूसरे अंक में आचार्य शिवपूजन सहाय का 'प्रेम मन्दिर के प्रेम पुजारी का परलोक प्रस्थान' नामक एक स्मृतिलेख छपा था। 26 इस लेख में आचार्य शिवजी ने आरा निवासी श्री देवेन्द्र प्रसाद जैन की सार्थक हिन्दी सेवा का उल्लेख करते हुये उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी है। छह पृष्ठों के इस स्मृतिलेख में उन्होंने जैन जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सारी विशेषताओं को रेखांकित कर दिया है। यह विविध विषयों से विभूषित एक महत्वपूर्ण पत्रिका थी और इसका सम्पादन भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध साहित्यकार राधाचरण गोस्वामी के पुत्र *कृष्ण चैतन्य गोस्वामी* ने किया। वस्तुतः यह चैतन्य सभा की पत्रिका थी और चैतन्य सभा का उद्देश्य ही राष्ट्रभाषा हिन्दी और नागरी लिपि का विकास था। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर यह पत्र छपता था-

"खिले चंद्रिका यों तमोनाश हो,
नहीं चेतना का कभी ह्रास हो,
सदा ज्ञान-पीयूष की वृष्टि हो,
नए भाव की देश में सृष्टि हो ।"

यह महत्त्वपूर्ण हिन्दी-पत्रिका थी और इसमें उस समय के चर्चित कवियों की कविताएं छपती थीं। लगभग एक वर्ष तक यह प्रकाशित होती रही।

अप्रेल 1924 ई० में पटनासिटी से प्रकाशित 'गोलमाल' एक प्रमुख साहित्यिक-पत्र था। इस हास्यव्यंग्य प्रधान साप्ताहिक के प्रकाशन के मूल में कलकत्ता से प्रकाशित 'मतवाला' की मुख्य प्रेरणा थी। एक मारवाड़ी युवक *दीनानाथ सिंगतिया* ने इसका प्रकाशन आरम्भ किया था और *आचार्य शिवपूजन सहाय* का मार्गदर्शन इस पत्र को प्राप्त था। इसका सम्पादन *रामवृक्ष बेनीपुरी* करते थे, किन्तु सम्पादक के रूप में सिंगतिया का नाम छपता था। इस संबंध में बेनीपुरी जी ने लिखा भी है, "एक मारवाड़ी युवक दीनानाथ सिंगतिया व्यंग्य और हास्य प्रधान पत्र निकालने की फिक्र में है और उन्होंने शिवपूजन जी को एक आदमी देने के लिए आग्रह किया था जिससे मेरी बुलाहट हुई थी। पत्र का नाम रखा गया 'गोलमाल' और पहले अंक के सभी शीर्षक और लेख शिवपूजन जी ने ही ठीक किया। मुझे

समझा बुझाकर, तरह-तरह से प्रोत्साहित कर मुझमें आत्मविश्वास की भावना भर शिवपूजन जी चले गए। छह महीने तक पटना सिटी से 'गोलमाल' निकलता रहा। 'स्टेट्समैन' तक ने उस पर टिप्पणी की। मित्रों ने प्रशंसा की झड़ी लगा दी, बुजुर्गों ने खूब सराहा। शिवपूजन जी हरेक अंक के बाद एक खत लिखते, मुझे खूब बढ़ावा देते और नई-नई सलाहें भी देते रहे''।[27]

'गोलमाल' दस पृष्ठों का एक लोकप्रिय साप्ताहिक था और कई स्थायी स्तंभों के साथ इसका सम्पादकीय भी व्यंग्य से परिपूर्ण होता था। एक उदाहरण द्रष्टव्य है- ''कर्जन नाम से हिन्दुस्तानी वैसे ही भड़कते हैं जैसे लाल कपड़ा को देखकर बैल। लार्ड कर्जन कैंची लिए कान फटफटा रहे हैं। दाढ़ी हिन्दुओं ने खुद मूँड़ ली, चुटिया मुसलमानों ने मुड़वा दी और मूंछों को लार्ड कर्जन ने सफाचट कर दिया। अब न मालूम ये नए कर्जन क्या मुड़ेंगे?''[28] इसका स्थायी स्तम्भ 'गृद्ध दृष्टि' भी हास्य और व्यंग्य से परिपूर्ण होता था। - ''कमीशन ने शिमले में शहादतें लेनी शुरू कर दी और एक-एक कर गर्दनिया पाए हुए मिनिस्टरों को न्योता देकर आटे-दाल का भाव पूछना शुरू कर दिया तो सब-के-सब एक स्वर से काँख उठे तौबा-तौबा! गए तो थे सुधार पर निसार होने लेकिन इधर सरकार और उधर माननीय मेंबरों की दुलत्तियाँ खाकर सीखना पड़ा कि सुधार निस्सार है और हम मिनिस्टरान तो धोबी के कुत्ते की तरह न घर के रहे न घाट के। न सरकार हमें अपने भेदों से अवगत कराएगी और न ही हम पर प्रतिनिधि वर्ग विश्वास करेंगे। इसलिए जरूरत है कि फौरन से पेश्तर सुधारों का सुधार किया जाय क्योंकि 60-70 हजार का तोड़ा लाद लाते वक्त तो अगूर मीठे थे परंतु गर्दनिया मिलते ही खट्टे हो गए।''[29] कुछ दिनों के लिए इस पत्र का प्रकाशन कलकत्ता से भी हुआ। यह पत्र एक वर्ष ही प्रकाशित हुआ किन्तु अपनी प्रखर व्यंग्य दृष्टि के कारण काफी लोकप्रिय हुआ।

वसंत पंचमी 1926 ई० से लहेरियासराय, दरभगा से प्रकाशित होनेवाला 'बालक' बाल-साहित्य की लोकप्रिय पत्रिका के रूप में काफी चर्चित हुआ। इसका संपादन *आचार्य रामलोचन शरण, आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी* और *कविवर रामदयाल पाण्डेय* जैसे समर्थ साहित्यकारों ने किया। 'बालक' बाल साहित्य की प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्रिका के रूप में दीर्घजीवी रहा। 1926 में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से *जगतनारायण लाल* के सम्पादन में पटना से 'महावीर' नामक पत्र का

प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह कांग्रेस का प्रचार पत्र था किन्तु इसके अद्यांक का विशेष साहित्यिक मूल्य है।

बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में 'युवक' का प्रकाशन एक अविस्मरणीय घटना है। नवम्बर 1928 ई. में *श्री रामवृक्ष बेनीपुरी* और *बाबू गंगाशरण सिंह* के संयुक्त संपादकत्व में यह प्रकाशित हुआ था। कुछ जगह जनवरी 1929 ई. में इसके प्रकाशित होने का विवरण भी मिलता है।[30] [illegible] की यह मासिक पत्रिका समाजवादी विचारों की वाहिका थी। इसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशित होता था "शक्ति, साहस और साधना का मासिक।" इसके अगले अंकों में यह छंद प्रकाशित होने लगा–

"सफलता पाई अथवा नहीं उन्हें क्या ज्ञात, दे चुके प्राण ।
विश्व को चाहिए उच्च विचार? नहीं केवल अपना बलिदान ।।"

'युवक' अपने समय का सर्वाधिक लोकप्रिय पत्र था। अपनी वैचारिकता, साहित्यिकता और त्याग के कारण इसने पर्याप्त ख्याति अर्जित की थी। इसकी तेजस्विता को रेखांकित करते हुये डॉ० आनन्द नारायण शर्मा ने सच ही लिखा है "यह समाजवादी विचारधारा का सतेज मासिक था, जिसने अपने अग्निगर्भ लेखों, क्रांतिकारी कविताओं और ओजस्वी निबंधों से युवक समाज को आन्दोलित कर दिया। इसकी तेजस्विता का कुछ अनुमान इससे भी होता है कि अनेक बार इसके कार्यालय पर छापा पड़ा और अंक जब्त किये गए।"[31] अपनी प्रखरता के कारण यह पत्र तत्कालीन सरकार की कुदृष्टि का शिकार हो गया। वस्तुतः "ऐसी सामयिकतापूर्ण और युगानुकूल चेतना का प्रतिनिधि पत्र पहले कभी नहीं निकला था।"[32]

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में चम्पारन से भी कई महत्वपूर्ण पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन पत्रों में 'अग्रहरि सेवक', 'निर्भीक' और 'आदर्श' जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रवादी पत्र उल्लेखनीय हैं। 'अग्रहरि सेवक' वस्तुतः जातीय मासिक पत्रिका थी किन्तु इसमें हिन्दी के प्रसिद्ध वैश्य कवियों की रचनाएं प्रकाशित होती थीं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध कविता 'अच्छी आँख मिचौनी खेली' प्रथमतः इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।[33] *श्री बैजनाथ प्रसाद अग्रहरि* इसके संपादक थे। यह मोतिहारी के कमला प्रेस से मुद्रित होकर प्रकाशित होता था। 'निर्भीक' राष्ट्रीय विचारों का संवाहक

पत्र था और *पाण्डेय आनन्द बिहारी वर्मा* इसके सम्पादक थे मात्र दो वर्षों तक प्रकाशित होनवाले इस पत्र ने राष्ट्रवाद का स्वर मुखर किया और प्रखर राष्ट्रवादी रचनाओं को प्रकाशित भी किया। 'आदर्श' का प्रकाशन 1924 ई० में मोतिहारी से हुआ किन्तु अंग्रेजी सरकार की कुदृष्टि का शिकार होने के कारण यह तुरन्त ही कालकवलित हो गया। 'आदर्श' में भी साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन होता था।

नवम्बर 1930 ई० में सुल्तानगंज से 'गंगा' नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। इसके संस्थापक बनैली राज के *कुमार बाबू कृष्णानन्द सिंह* थे। *पं० रामगोविन्द त्रिवेदी* इसके प्रधान संपादक थे और *पं० गौरीनाथ झा* तथा *शिवपूजन सहाय* ने इसका संपादन किया। अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुये इसने लिखा- "गंगा सदैव साहित्य-वृक्ष का मूल चिन्तन करेगी। काव्य, इतिहास, विज्ञान, भूगोल, खगोल . . कला संबंधी लेख, रंगीन चित्र . . . . . शिक्षाप्रद कहानियाँ . . . . आदि का प्रकाशन 'गंगा' में होता रहेगा।" [34] इस पत्रिका का 'पुरातत्वांक' अनूठी शोध-सामग्रियों से परिपूर्ण था। आज भी अपनी शोधपरक सामग्री और कलात्मक संचयन के कारण यह अंक याद किया जाता है। 'वेदांक' और 'विज्ञानांक' भी इसके प्रसिद्ध विशेषांक हैं। 'पुरातत्वांक' का संपादन महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने किया था।

'गंगा' के प्रवेशांक में निवेदन करते हुये आचार्य शिवपूजन सहाय ने इस पत्रिका के प्रकाशन को बिहार का अहोभाग्य माना है और लिखा है- "हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के लिए ऊसर कहे जानेवाले बदनाम बिहार प्रान्त का यह परम सौभाग्य है कि श्रीमान् कुमार कृष्णानन्द सिंह बहादुर के संरक्षण में पं० रामगोविन्द त्रिवेदी वेदान्त शास्त्री के प्रधान सम्पादकत्व और पं० गौरीनाथ झा व्याकरणतीर्थ के प्रवर्त्तकत्व तथा सम्पादकत्व में 'गंगा' जैसी सुन्दर पत्रिका निकल रही है। श्रीमान् कुमार साहब का हिन्दी-प्रेम निस्सदेह अभिनन्दनीय एवं आदर्श है। आपका उत्कट उत्साह और आपकी उद्भट उदारता देखकर अनायास ही विश्वास होता है कि बिहार के ललाट पर बरसों की जमी हुई कलंक-कालिमा को अवश्य ही धो बहावेंगे। पुनः त्रिवेदी जी और झा जी के समान प्रकाण्ड विद्वानों का सहयोग प्राप्त हो जाने से 'सोने में सुगन्ध' वाली कहावत चरितार्थ हो गयी है। प्रधान सम्पादक त्रिवेदी जी के विशेष परिचय की कोई आवश्यकता नहीं है। हिन्दी-संसार में 'आर्य-महिला' का सफल संचालन

और विष्णुपुराण तथा सेनापति का सराहनीय सम्पादन करके आप यथेष्ट यशस्वी हो चुके हैं, बल्कि हिन्दी में दर्शन-परिचय, हिन्दी विष्णु पुराण आदि उत्कृष्ट ग्रंथों को लिखकर अपनी विद्वता का पूर्ण परिचय भी दे चुके हैं। आपने अभी हाल में विदेश-भ्रमण द्वारा जो अभिनव अनुभव अर्जन किया है, उससे 'गंगा' के विशेष लाभान्वित होने की आशा है। और झा जी तो संस्कृत-साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित होकर भी हिन्दी के इतने हिमायती हैं कि, जैसे रामचन्द्र जी की कीर्त्ति-पताका के दण्ड स्वरूप लक्ष्मण जी थे वैसे ही श्रीमान् कुमार साहब के हिन्दी-प्रेम प्रासाद के आधार-स्तम्भ आप हैं। प्रायः ऐसा देखने में आता है कि, संस्कृत के दिग्गज विद्वान् हिन्दी से सर्वथा विरक्त रहा करते हैं। परन्तु, बिहार के सौभाग्य से झा जी इसके अपवाद हैं। आपके हृदय में हिन्दी के लिये जो सच्ची लगन है, वास्तव में वही 'गंगा' के रूप में फूट निकली है और कुमार साहब का विशाल हृदय उस लगन लहरी के लिए प्रशस्त प्रवाह-क्षेत्र बन गया है। लक्ष्मी और सरस्वती के कृपा-पात्रों की यह मानसी-धारा ऊसर बिहार को उर्वर करे, भक्त-कल्पद्रुम भगवान विश्वनाथ से इतनी ही प्रार्थना है।'' [35]

मासिक 'गंगा' में आचार्य शिवजी ने महत्वपूर्ण विषयों पर सपादकीय लिखा। ऐसे विषयों में साहित्यिक विषयों की संख्या काफी अधिक थी। वे सारे संपादकीय शिवपूजन रचनावली के चतुर्थ खंड में संकलित हैं। ऐसे संपादकीय वक्तव्यों में 'हिन्दी की आत्मकथाएं', [36] 'हिन्दी में भूगोल का अभाव', [37] 'प्रतापी पुरूष का बलिदान' (गणेश शंकर विद्यार्थी के वीरगति प्राप्त होने पर), [38] 'कराची कांग्रेस में हिन्दी', [39] 'कलकत्ता में साहित्य-सम्मेलन', [40] 'संपादक सम्मेलन', [41] 'दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार' [42] महत्वपूर्ण है। 'कराची कांग्रेस में हिन्दी' शीर्षक सम्पादकीय में कांग्रेस द्वारा हिन्दी अपनाये जाने पर और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा इसके प्रचार पर बल देने को विशेष महत्व दिया गया है।[43]

सन् 1931 ई० में *श्री वैद्यनाथ प्रसाद अग्रहरि* के सम्पादकत्व में 'विकाश' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन मोतिहारी से आरंभ हुआ। कहने के लिये तो यह बाल-पत्रिका थी परन्तु इसमें गम्भीर साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन भी होता था। बाल-साहित्य की यह प्रतिनिधि पत्रिका थी। इसके प्रवेशांक में गोपाल सिंह नेपाली की दो

कविताए प्रकाशित हुईं- 'तारा'[44] और 'भूगोल'[45]। 'भूगोल' कविता में नेपाली ने बच्चों को कविता के माध्यम से भूगोल का रचनात्मक बोध कराया है-

"मन देकर तुम पढो बालको पृथ्वी का भूगोल।
गलित धातु से बनी हुई यह है अण्ड सी गोल।।
कितने पर्वत, कितनी नदियाँ, कितने रेगिस्तान।
हैं इसके अन्दर कितने ही वन, समुद्र, उद्यान।।
चार भाग में, एक भूमि है, शेष तीन में नीर।
ऊंच नीच है थल, जल भी है छिछला तग गंभीर।।
याद रखो तुम अपने मन में देना यह न बिसार।
पृथ्वी की तह विषम किन्तु सम जल की सतह अपार।।
मानचित्र में लखो हमारा भारतवर्ष महान।
बसा पूर्व जिसके ब्रह्मा है पश्चिम बलुचिस्तान।।
उत्तर इसके शृंग हिमालय दक्षिण लंका द्वीप।
अफगानिस्तान, स्याम, तिब्बत इसके बसे समीप।।
गंगा, यमुना, सरयू, गण्डक, ब्रह्मपुत्र औ सिन्धु।
महानदी है इसकी नदियाँ जहाँ चमकते इन्दु।।
बम्बे, सी० पी०, यू० पी० इसके है कितने ही प्रान्त।
उत्तर में पंजाब प्रान्त के हैं प्रदेश सीमान्त।।"

1931 ई० में ही मुजफ्फरपुर से 'लेखमाला' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ, किन्तु यह पत्रिका अल्पजीवी सिद्ध हुई।[46]

1933 ई० में पटना सिटी से प्रमोद शरण पाठक के संपादन में **'भूदेव'** नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। यह हिन्दी और संस्कृत की द्विभाषीय साहित्यिक पत्रिका थी। इसका पहला अंक विजयादशमी के अवसर पर प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् साप्ताहिक 'योगी' नामक पत्रिका प्रकाशित हुई। 1933 ई० में प्रकाशित इस पत्रिका के संपादक *श्री रामवृक्ष बेनीपुरी* और *ब्रजशंकर वर्मा* थे। 'योगी' लम्बी अवधि तक प्रकाशित होनेवाला लोकप्रिय साप्ताहिक था। इसमें गीतकार गोपाल सिंह नेपाली ने भी सह-सपादक के रूप में अपना योगदान किया। इसमें प्रकाशित होनेवाले स्थायी स्तम्भ 'गोलघर के मुँडेरे से' को काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। आचार्य शिवपूजन सहाय ने साप्ताहिक 'योगी' में सामयिक विषयों



पर कई महत्त्वपूर्ण लेख लिखे ऐसे लेखों में माननीय अनुग्रह नारायण सिंह [47] विभूतिविहीन बिहार [48] उल्लेखनीय है

1934 ई० में 'प्रताप' में स्व० विद्यार्थी जी के मुख्य सहयोगी रह चुके *श्री देवव्रत शास्त्री* ने 'नवशक्ति' नामक साप्ताहिक का प्रकाशन-सपादन आरभ किया। इसका पहला अक 31 अगस्त 1934 ई० को प्रकाशित हुआ। [49] 25 अक्टूबर 1936 ई० से दैनिक पत्र के रूप में यह अपनी प्रथम वर्षगाठ भी नही मना सकी। 'नवशक्ति' में तत्कालीन लेखकों की महत्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन होता था। इसके प्रवेशांक में प्रकाशित आचार्य शिवपूजन सहाय का लेख 'बॉसुरी नहीं, पाञ्चजन्य।' काफी चर्चित हुआ। इस लेख द्वारा इस पत्र के उद्देश्य को स्वर दिया गया था। लेख की अन्तिम पंक्तियाँ द्रष्टव्य है- "आज हम भुवन-मोहिनी वंशी की सुरीली तान पर कान न देंगे, पार्थ-रथ की बागडोर पकड़नेवाले हाथों में शोभायमान पाञ्चजन्य के प्रलय-निनाद पर बलि-बलि जायेंगे। हमें कदम्ब-तरुतल की त्रिभंगी छवि भी न चाहिए, हमें तो सगम संग्राम सिन्धु मथनेवाला गागेय-गर्व-गंजन चक्रधर चाहिए। हम नवनीत नहीं चाहते, हम चाहते हैं 'नवशक्ति,।" [50]

आचार्य शिवपूजन सहाय ने 'नवशक्ति' में कई विषयों पर अपना मन्तव्य दिया। ऐसे विषयों में 'केलकर वाङ्मय की समीक्षा', [51] 'दैनिकों' के साप्ताहिक विशिष्ट संस्करणों का मूल्याकंन', [52] 'हिन्दी गद्य साहित्य और बिहार, [53] 'हिन्दी में हास्य-रस की चहल-पहल' [54] उल्लेखनीय है। 'नवशक्ति' में प्रकाशित एक टिप्पणी द्रष्टव्य है - "हर साल की तरह इस साल भी हिन्दी पत्रों ने होली मनाई। बूढ़े 'हिन्दी बङ्गवासी' और 'वेङ्कटेश्वर समाचार' ने भी कन्धे से गुलाल की झोली लटकाई। 'वर्त्तमान' (कानपुर), 'विश्वमित्र', 'जागृति' (कलकत्ता), 'हिन्दी मिलाप' (लाहौर) 'तरंग' और 'अलबेला' (काशी), 'मदारी' (प्रयाग) आदि के होलिकाकों को निचोड़ने पर मुश्किल से रस का प्याला भरा; क्योंकि इनमें भी नवीनता की मात्रा अन्दाज से ही है- जितना दाल में नमक होना चाहिए! 'खुदा की राह पर' (काशी) ने बहुत गहरी छानी। और सबने सिर्फ रस्म अदा की।" [55]

26 अप्रैल 1934 ई० को *श्री धनुषधारी प्रसाद गुप्त* ने मोतिहारी से 'चम्पारन संदेश' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन-संपादन आरभ किया। यह राष्ट्रवादी और साहित्यिक पत्र था। गॉधीवादी विचारधारा के

प्रसिद्ध साहित्यकार भगवतीचरण जी की नाटिका 'जसमा' इसी में प्रकाशित हुई थी। 'जसमा' के प्रकाशन पर काफी तहलका मचा और प्रशासन ने नाटिका के निम्नलिखित अंश पर आपत्ति करते हुये स्पष्टीकरण मांगा-

'छठा दृश्य!

स्थान - मजदूरों की झोपड़ियाँ।

मजदूरों द्वारा समवेत् स्वर में गाया जानेवाला गीत इस प्रकार था-

'हमें कहाँ आराम जगत में, केवल बोझा ढोना है ।।
जोत-जातकर हम गरमी में, अपना कंठ झुराना है ।
भरकर घर औरों का, फिर तो अपने स्वय पुराना है ।।
चलें कारखाने सब हमसे, लाखों गज कपड़े बन जायें ।
करोड़पति बन जावे कोई, हम नंगे ही बन-ठन जायें ।।
दुनिया भर को हमीं जिलावें, दुनिया मारे हमही को ।
खुशी-खुशी सब चहक रहे, पर हम अपनावें गम ही को ।।
कहें कि हो मत वेतन कम है, क्यों? बलवा हो जाता है ।
पर अकाल जब मरने लगते, विश्व सभी सो जाता है ।।'' [56]

1936 ई० में पटना से प्रकाशित साप्ताहिक 'बिजली' का भी अपना साहित्यिक महत्त्व है। 'बिजली' का संपादन प्रख्यात साहित्यकार *प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'* और *हंस कुमार तिवारी* ने किया। यह पत्रिका अपनी रचनात्मक दृष्टि और सुरुचिपूर्ण सामग्री के प्रकाशन के कारण काफी लोकप्रिय हुई। 1937 ई० में प्रकाशित 'बिजली' का 'होलीकांक' काफी प्रसिद्ध हुआ। 1936 ई० में ही पटना से बिहार साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में 'साहित्य' नामक त्रैमासिक शोध-पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ। यह पत्रिका पहली बार 1936 ई० से 1938 ई० तक प्रकाशित हुई। दूसरी बार 1950 ई० से 1961 ई० तक इसका प्रकाशन हुआ और तीसरी बार मई 1993 ई० में इसका विशेष अंक प्रकाशित हुआ। यह विशेषांक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 'अमृत महोत्सव' के अवसर पर प्रकाशित हुआ था और इसमें बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कुछ अधिवेशनों के सभापतियों का अभिभाषण प्रकाशित हुआ था।

'साहित्य' का प्रकाशन हिन्दी की शोध-पत्रिका की दिशा में बिहार की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसका संपादन हिन्दी के ख्यात् विद्वानों

जनार्दन प्र० झा 'द्विज' *डॉ० लक्ष्मी नारायण सुधांशु, आचार्य बदरीनाथ वर्मा आचार्य शिवपूजन सहाय नलिन विलोचन शर्मा* और *केसरी कुमार* जैसे समर्थ विद्वानों एवं आचार्यो ने किया। सम्प्रति इसका संपादन पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी *आचार्य डॉ० निशान्तकेतु* कर रहे हैं। आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा लिखे संपादकीय लेखों में 'साहित्यकारों की चिट्ठियों का संग्रह', [56(क)] 'दैनिक आज का नगर विशेषांक', [57] 'बिहार के प्रकाशक और लेखक', [58] 'हिन्दी में प्रूफ रीडिंग की कला', [59] 'लेखक सम्पादक संबंध', [60] 'हिन्दी में हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाएं', [61] 'लेखक प्रकाशक संबंध', [62] 'क्या साहित्य में गत्यावरोध है', [63] 'राष्ट्रभाषा का विरोध', [64] 'राष्ट्रभाषा का स्वरूप', [65] 'राष्ट्रभाषा और उर्दू', [66] 'महाकवि निराला की अस्वस्थता', [67] 'हिन्दी शिष्टमंडल दक्षिण भारत की ओर', [67(क)] 'आर्यभाषा पुस्तकालय की हीरक जयंति', [68] 'बिहार के दो साहित्यकारों का राष्ट्रीय सम्मान', [69] 'हिन्दी में पत्र साहित्य की कमी', [70] 'साहित्य और गाय', [71] 'बिहार के कवियों की गद्य रचनाएं', [72] 'हिन्दी में साहित्यिक शोध के साधनों की कमी', [73] 'हिन्दी का विरोध', [74] 'भारतीय हिन्दी परिषद्', [75] 'स्वर्गीय आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय', [75(क)] आदि उल्लेखनीय हैं।

'साहित्य' में चर्चित पुस्तकों की समीक्षा भी प्रकाशित होती थी और साहित्यिक गतिविधियों का परिचय भी दिया जाता था। समीक्षाओं में 'बेनीपुरी ग्रंथावली', [76] 'श्री रामचन्द्र वर्मा की शब्द-साधना', [77] 'संस्कृति के चार अध्याय', [78] 'हिन्दी साहित्य कोश', [79] महत्वपूर्ण है जबकि साहित्यिक गतिविधियों की सूचनाओं में 'महाकवि निराला की अस्वस्थता', [80] डॉ० अमरनाथ झा का आकस्मिक निधन', [81] 'रजत जयंती समारोह के अध्यक्ष कविवर दिनकर', [82] 'बिहार के दो वयोवृद्ध साहित्य सेवियों का देहावसान', [83] उल्लेखनीय है। आरम्भ में 'साहित्य' त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होता था किन्तु छठे वर्ष अर्थात् 1955 ई० में यह मासिक रूप में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् 1956 ई० में यह पुनः त्रैमासिक हो गया।

1937 ई० में बेतिया से 'प्रकाश' नामक एक साहित्यिक पत्र आरंभ हुआ। दो वर्षो तक प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका का प्रथम वार्षिकांक 1937 ई० में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक थे कवि, शिक्षक *श्री हरिहर प्रसाद 'रसिक'*। इस वार्षिकांक की विषय-सूची निम्नलिखित है-

ससार क गमय ७ मानस

गद्यगीत श्री कृष्ण प्रसाद

कहना न होगा, 'प्रकाश' ने स्थानीय स्तर पर साहित्यकारों का एक सार्थक रचनात्मक मंच तैयार करने का ऐतिहासिक कार्य किया।

दिसम्बर 1937 में *रामवृक्ष बेनीपुरी* के सम्पादन में प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'जनता' समाजवादी विचारों की एक महत्वपूर्ण साप्ताहिक पत्रिका थी। 26 पृष्ठों की इस पत्रिका ने जनतंत्र की मान्यता का समर्थन और पूंजीवाद का विरोध किया। पहली बार यह ढाई वर्षों तक प्रकाशित हुई फिर 1946 में इसका प्रकाशन शुरू हुआ, किन्तु इस बार भी यह दीर्घायु नहीं हो सकी। इसमें प्रगतिशील साहित्य का प्रकाशन होता था। रामदयाल पाण्डेय की प्रसिद्ध कविता 'झण्डागान' इसी पत्रिका के 18 मई 1939 के अंक में प्रकाशित हुई–

बढ़ो किसान, बढ़ो मजूर
दुनिया वाले देखें नूर
चूर-चूर हो जाय गरूर
जालिम हो जाय मजबूर
पीकर खून चूसकर हड्डी
कौन हुआ है मालामाल
झंडा लाल : झंडा लाल
ले लो अपना खेत किसान
काटो गेहूँ काटो धान
मुट्ठी में लो अपनी जान
पूरा करने को अरमान
मौत खड़ी है तो क्या डर है
सीना खोलो ठोको ताल। झंडा लाल. . .

सन् 1938 ई० में *पं० रामदहीन मिश्र* ने ग्रंथमाला प्रकाशन, पटना से 'किशोर' नामक मासिक पत्रिका का सपादन-प्रकाशन आरभ किया। इस पत्रिका का संपादक मंडल में श्री मिश्र के अतिरिक्त बालकृष्ण उपाध्याय, देवकुमार मिश्र जनक किशोर यादव किशोर जैसे

साहित्यकार सक्रिय थ वस्तुत यह किशारों का पत्रिका था किन्तु अपन साहित्यिक स्वरूप क कारण साहित्यिक पत्रिका क रूप म चर्चित हुई। आचार्य शिवपूजन सहाय का रचनात्मक सहयाग और परामर्श इस पत्रिका को सहज ही उपलब्ध था। इसमें आचार्य शिवपूजन सहाय ने महत्त्वपूर्ण विषयों पर कई रचनाएं लिखीं। किशोरों को समसामयिक जीवन का ज्ञान कराने के लिये कई महापुरूषों की जीवनियाँ इसमें प्रकाशित हुईं। राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के अनुज सर राजीव रंजन की जीवनी पहली बार इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई। [84] सर राजीव रंजन ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। वे एक स्वतंत्र प्रकृति के युवक थे। 1917 ई० में फौजी शिक्षा के लिये मिले किंग्स कमीशन को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। 'किशोर' में भारतेन्दुजी के सहपाठी कमलेश जी की जीवनी भी प्रकाशित हुई। [85] कमलेश जी संस्कृत, पाली, हिन्दी, अरबी, फारसी, मराठी, गुजराती भाषा के धुरन्धर विद्वान थे। इनकी संस्कृत-हिन्दी रचनाएं 'बिहार-बन्धु', 'पाटलिपुत्र', 'साहित्य सरोवर', 'प्रियवदा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। [86]

1938 ई० में ही पटना से 'जन्मभूमि' नामक एक मासिक पत्रिका आरंभ हुई। इस पत्रिका का संपादन *श्री राजेश्वर नारायण सिंह, विश्वनाथ सिंह शर्मा* और *प्रफुल्लचन्द्र ओझा* मुक्त ने किया। यह भी साहित्यिक पत्रिका थी और अल्पजीवी होने के बावजूद इसने सार्थक साहित्य का प्रकाशन किया। इसी वर्ष पटना से 'रोशनी' नामक पत्रिका आरंभ हुई। पहले साप्ताहिक के रूप में इसका प्रकाशन हुआ किन्तु बाद में यह पाक्षिक हो गयी। प्रसिद्ध कवि-साहित्यकार *श्री ब्रजकिशोर नारायण* इसके मुख्य संपादक थे। संपादक मंडल में डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री और कृपानाथ मिश्र जैसे विद्वान थे। वस्तुतः यह पत्रिका समाज शिक्षा बोर्ड, बिहार द्वारा प्रकाशित होती थी। इसमें नागरी और फारसी लिपि में शिक्षा संबंधी लेख छापे जाते थे। इसमें साहित्यिक रचनाओं यथा कविता, कहानी इत्यादि का भी पर्याप्त प्रकाशन होता था।

जनवरी 1941 ई० में पटना से मासिक 'आरती' का प्रकाशन आरंभ हुआ। [87] इसका संपादन प्रसिद्ध साहित्यकार *श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'* और प्रयोगवाद के प्रवर्त्तक *श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय* ने किया। 'आरती' एक श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका का प्रतिमान बनकर प्रकाशित हुई मात्र दो वर्षों तक प्रकाशित होने के बावजूद

आरता ने प्रयोगधर्मा साहित्य का प्रकाशन कर नवांकुरों को स्थापित किया तथा हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी। 1941 में ही पटना में दो दैनिक पत्र भी प्रकाशित हुये- 'राष्ट्रवाणी' [88] और 'आर्यावर्त्त' [89]। ये दोनों मुख्यतः समाचार पत्र थे किन्तु इनमें कविताओं का प्रकाशन भी होता था और समय-समय पर इनका साहित्यिक विशेषांक भी प्रकाशित होता था।1942 ई० में गया से साप्ताहिक 'उषा' नामक पत्रिका के प्रकाशन का विवरण मिलता है। इस पत्रिका के दूसरे वर्ष के दसवें अंक में आचार्य शिवपूजन सहाय का लेख 'हिन्दी की कुछ समस्याएं' [90] प्रकाशित है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि यह साप्ताहिक भी मूलतः साहित्यिक था और इसमें रचनात्मक तथा आलोचनात्मक साहित्य का प्रकाशन होता था। 16 पृष्ठों की इस साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन *हंस कुमार तिवारी, पन्ना लाल महतो हृदय* और *शारदा रंजन पाण्डेय* ने किया।

1944 ई० में मुंगेर से साप्ताहिक 'प्रभाकर' का प्रकाशन आरंभ हुआ। 'प्रभाकर' भी साहित्यिक पत्र ही था और इसमें साहित्यिक गतिविधियों की सूचना के साथ साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन भी होता था। प्रसिद्ध साहित्यकार 'द्विज' जी की विदाई की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है- "उस दिन भाई द्विज जी सदा के लिए छपरा छोड़ गये। जब तक उनका परिवार यहाँ था, वे आते-जाते रहे, छपरा ही औरंगाबाद था। इस बार आशा-तन्तु भंग हो गया। मकान या सामान, कुछ भी उनका यहाँ न रहा। उनके स्नेह से सिक्त भूमि रह गई। उनके प्रेम से परिप्लावित कुछ हृदय रह गए। उनकी मुस्कान से मुग्ध कुछ आँखें रह गईं। उनकी वाणी की गूंज से भरे कुछ कान रह गये। पर न रहा वह आँख-कान को तृप्त करनेवाला साकार साहित्य।" [91]

1944 ई० में ही पटना से साप्ताहिक 'हुंकार' के प्रकाशन का विवरण मिलता है। [92] इस पत्रिका के 15 अक्टूबर 1944 के अंक में आचार्य शिवपूजन सहाय का लेख 'बिहार की साहित्यिक प्रगति' प्रकाशित है। [93] इस लेख में बिहार की साहित्यिक प्रगति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। लेख के उपशीर्षक निम्नलिखित है- काव्य के क्षेत्र में, कथा साहित्य के क्षेत्र में, निबन्ध, समालोचना साहित्य, पत्र-पत्रिकाएं, प्रकाशन और साहित्यिक संस्थाएं। बिहार में प्रकाशन संस्थाओं के अभाव और इसके कारण लेखकीय उपेक्षा की ओर संकेत करते हुये उन्होंने लिखा है-

निबन्ध-रचना में हमारे यहाँ के कुछ समर्थ कलाकार बड़े निपुन हैं, परन्तु प्रकाशकों द्वारा प्रोत्साहन न मिलने से उनका जौहर खुल नहीं पाता। ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' के समान विद्वान और चिन्तनशील निबन्धकार यदि दूसरी किसी भाषा के क्षेत्र में होता तो वह भाषा निहाल हो गई होती। हिन्दी में उन्होंने इधर जो एक विद्वतापूर्ण ग्रन्थ लिखा है- 'जीवन के तत्त्व और काव्य के सिद्धान्त' - वह अपने ढंग का एक अतुलनीय ग्रन्थ है, जो भागलपुर के युगान्तर-साहित्य-मन्दिर से हाल ही में प्रकाशित हुआ है। सुना है कि जेल में उन्होंने फिर एक विशाल साहित्यिक ग्रन्थ की रचना की है, जो निकट भविष्य में ही प्रकट होनेवाला है। श्री जानकी वल्लभ शास्त्री का 'साहित्य-दर्शन' नामक ग्रन्थ जिसे चारों ओर से हताश होकर स्वयं उन्होंने ही प्रकाशित किया है, पांडित्यपूर्ण निबन्धों का बहुत ही सुन्दर संग्रह है।'' [94]

1945 ई० में पटना से उच्च कोटि की साहित्यिक पत्रिका 'हिमालय' का प्रकाशन आरंभ हुआ। अल्पजीवी होने के बावजूद इस पत्रिका ने अपनी साहित्यिक पहचान बनाई। आचार्य शिवपूजन सहाय ने इसमें कई महापुरुषों की जीवनियाँ लिखीं। ऐसी जीवनियों में पं॰ किशोरी लाल गोस्वामी, [95] प० अमृतलाल चक्रवर्ती [96] आदि उल्लेखनीय हैं। *आचार्य शिवपूजन सहाय* और *रामवृक्ष बेनीपुरी* के संयुक्त संपादन में प्रकाशित 'हिमालय' का प्रकाशन पुस्तक भंडार, हिमालय प्रेस, पटना से होता था। इसके एक अंक का मूल्य 1 रु० तथा वार्षिक मूल्य 10 रुपया अंकित था। 'हिमालय' के प्रवेशांक की समीक्षा करते हुये हंसराज ने लिखा है- ''हिमालय का प्रकाशन जिस परिस्थिति में, जिस उद्देश्य को लेकर और जिन महान साहित्यिकों के तत्वावधान में हुआ है, वह बिहार के लिए ही नहीं, समस्त हिंदी जगत के लिए महत्त्व का विषय है। यों तो प्राकृतिक वैभव, प्राचीन संस्कृति और उदात्त भावनाओं की दृष्टि से बिहार बहुत समृद्ध है, परंतु बहुत सी ऐसी बातें भी हैं जिनमें यह प्रांत अपने पड़ोसी प्रांतों से बहुत पीछे है। उगलियों पर गिने जाने योग्य हिंदी के प्रथम श्रेणी के लेखकों और कवियों की गणना में बिहार का स्थान भले ही ऊंचा हो, परंतु जहाँ तक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का संबंध है, प्रमुख हिन्दी प्रांत होते हुए भी बिहार अपने पड़ोसी सयुक्त प्रांत से पीछे है। (मासिक साहित्य के विषय में यह बात और भी लागू होती है।) ऐसी स्थिति में हिमालय के समान उच्चकोटि के मासिक साहित्य के प्रकाशन का हम हृदय

से स्वागत करते है। इसके सपादन का भार हिन्दी जगत के भीष्मपितामह *श्री शिवपूजन सहाय* ओर *श्री बेनीपुरी जी* जैसे महारथी - साहित्यिकों ने ग्रहण किया है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और आचार्य नरेन्द्र देव जैसे महान व्यक्तियों का इस पर वरदहस्त है। पहले ही अंक में 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' वाली उक्ति चरितार्थ हो रही है।

"डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा में हमें बिहार के वास्तविक सामाजिक जीवन का जितना सुन्दर चित्र मिला है, सभवत: अब तक किसी अन्य साहित्यिक की कलम से ऐसा सजीव चित्र अंकित नहीं हुआ है। हिंदी साहित्य के लिए इसका मूल्य इसीलिए नहीं है कि यह राजेन्द्र बाबू की जीवनी है, उसके द्वारा हमारे सामने लोक-जीवन का वास्तविक चित्र भी उपस्थित होता है।

"आचार्य नरेन्द्रदेव के 'व्यक्ति और समष्टि', बाबू फूलन प्रसाद वर्मा के 'मार्क्सवाद और साहित्यकला', श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र के 'सस्कृति समन्वय' एवं श्री जानकीवल्लभ शास्त्री के 'काव्य-परिचय' के रूप में हिमालय द्वारा जो गंभीर लेख प्रस्तुत किए गये है, उनसे स्पष्ट है कि हिन्दी में गंभीर लेख के लिखनेवालों की कमी नहीं है कमी है गुण ग्राहकों की। दिनकर जी की तीनों ही कविताएं अपने अपने ढग की अनूठी हैं। 'बलदेव सिह' का चित्रण तो बहुत ही सजीव हुआ है। बेनीपुरी जी उसके लिए बधाई के पात्र है।"[97] कहने की आवश्यकता नहीं कि 'हिमालय' का प्रकाशन एक समग्र साहित्यिक पत्रिका के रूप में हुआ था। इसने परंपरा का अनुशीलन भी किया और उसका पोषण भी।

1946 ई० में पटना से ही 'कहानियाँ' नामक एक कहानी पत्रिका प्रकाशित हुई। इसका संपादन *गुरु प्रसाद उप्पल* और *शकुन्तला* ने किया। प्रारंभ में यह साप्ताहिक थी लेकिन 1947 ई० से मासिक हो गई। हिन्दी कहानी के विकास में इस पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह अपने समय में कहानी की अकेली और लोकप्रिय पत्रिका थी। 1946 ई० में ही नकेनवाद के प्रवर्त्तक और समर्थ आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने पटना से *शिवचन्द्र शर्मा* के साथ 'पारिजात' नामक साहित्यिक पत्रिका का सपादन-प्रकाशन आरंभ किया। पहले यह पत्रिका त्रैमासिक रूप में आरभ हुई किन्तु बाद में मासिक हो गई। 'पारिजात' में वस्तुत: शोधपरक और आलोचनात्मक साहित्य का प्रकाशन होता

था। इनमें कई साहित्य मनीषियों की जीवनियाँ भी प्रकाशित हुई, जिनमें पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा,[98] बाबू शिवनन्दन सहाय[99] आदि विशेष उल्लेखनीय है।

1947 ई० में पटना से साप्ताहिक 'स्वदेश' का प्रकाशन आरंभ हुआ। 'स्वदेश' अपनी राष्ट्रीयता और साहित्यिकता के कारण काफी लोकप्रिय हुआ। इसमें सामयिक विषयों पर भी लेख प्रकाशित होते थे। संपादकों की दुरवस्था की ओर संकेत करते हुये आचार्य शिवपूजन सहाय ने पहली बार इसी पत्र में[100] संपादकों के अधिकार पर अपना विचार व्यक्त किया था। उनके लेख की कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य है- ''मै पिछले तीस वर्षों से देखता आ रहा हूं कि हिन्दी के पत्र-संचालक, जिनमें अधिकतर पूंजीपति है और जो पूंजीपति नही है, वे भी पूंजीपति की मनोवृत्ति और प्रवृत्ति के शिकार हो ही जाते है, सम्पादकों का वास्तविक महत्व नहीं समझते- उनका यथोचित सम्मान नही करते- उनके अधिकारों की रक्षा पर ध्यान नहीं देते- उनकी कठिनाइयों को दूर करने का सपना भी नहीं देखते। जहाँ तक मेरी जानकारी है हिन्दी में तीन ही आदर्श पत्र संचालक हुए है- बाबू चिन्तामणि घोष (इन्डियन प्रेस), बाबू रामानन्द चटर्जी (विशाल भारत) और बाबू शिवप्रसाद गुप्त (ज्ञानमण्डल)। तीनों अब इस ससार में नही है, किन्तु उनका आदर्श चिरस्मरणीय है। वे अपने पत्र के सम्पादक का जैसा और जितना आदर करते थे, वैसा और उतना आदर करनेवाला आज तक पत्र-संचालक नही पैदा हुआ होगा, मैंने नहीं देखा-सुना।[101]

1947 ई० में पटना से ही *श्री देवव्रत शास्त्री* ने 'नवराष्ट्र' नामक दैनिक पत्र का प्रकाशन-संपादन आरंभ किया। इस पत्र का पहला अंक 26 जनवरी 1947 ई० को प्रकाशित हुआ। यह मूलतः समाचार पत्र था किन्तु इसमें समसामयिक साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन भी होता था। ऐसी रचनाओं में *आचार्य शिवपूजन सहाय* का 'सर्वोदय-दिवस'[102] उल्लेखनीय है। 1947 में पटना से प्रकाशित 'प्रकाश' नामक साप्ताहिक को भी साहित्यिक पत्रकारिता के अन्तर्गत रखा जा सकता है। इसका सपादन *मुरलीमनोहर प्रसाद* और *नरेश* ने किया था।

इस प्रकार, बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। जिस कालखण्ड में आचार्य

शिवपूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, देवव्रत शास्त्री जैसे राष्ट्रीय स्तर पर ख्यात् पत्रकार उपस्थित हों उसकी महिमा का अलग से रेखांकित होना ही चाहिए। युग महापुरूषों से महान होता है। यह कालखण्ड हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में महान पुरूषों का युग है। इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ होता है और ये पत्रिकाएं साहित्य को सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्त्तनों के माध्यम के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

सन्दर्भ

1 बिहार में पत्रकारिता का विकास, श्री शिवेन्द्र नारायण, कांग्रेस अभिज्ञान ग्रंथ, 1962 पृ.-172

2 मासिक 'लक्ष्मी' गया भाग 14, दर्शन-4 अक्टूबर, 1916

3- मासिक 'लक्ष्मी', गया, 1918 ई.

4 उपर्युक्त भाग 18, अंक 9, मार्च 1920.

5- उपर्युक्त, 1917 ई.

6 बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, शैलेन्द्र कुमार मोहन, हिन्दी पत्रकारिताः विविध आयाम, पृष्ठ 178.

7- उपर्युक्त पृष्ठ-178.

8- कुसुमांजलि (मासिक), भाग-14: खंड-2, फरवरी 1918, पृष्ठ-3

9- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, पाटलिपुत्र टाइम्स, 1 जनवरी 1987, पृष्ठ-6

10- उनकी पहली कहानी 'सुखमय जीवन' सन् 1911 ई० में 'भारतमित्र' में प्रकाशित हुई थी। 'बुद्धू का कॉटा' सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेता स्व० काशी प्र० जायसवाल के तत्सामयिक 'पाटलिपुत्र' में प्रगट हुई और 'उसने कहा था' हिन्दी की प्रमुख मासिक पत्रिका 'सरस्वती' के अक्टूबर 1915 ई० के अंक में निकली।

-गुलेरी गरिमा ग्रंथ, सं०-झाबरमल्ल शर्मा, पृ० - 158.

11- 10 अगस्त, 1914, (पाटलिपुत्र).

12- 12 मई, 1917 (")

13- जिज्ञासु, अंक-1, पृष्ठ-3

4 उपर्युक्त अक 5 पृष्ठ 21

15- हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास त्रयोदश भाग, पृष्ठ-113

16- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, डॉ० आनन्द नारायण शर्मा, पाटलिपुत्र टाइम्स, 1 जनवरी 1987, पृष्ठ-6

17- उपर्युक्त,

18- शिवपूजन रचनावली, खड-चार, पृष्ठ-321.

19- उपर्युक्त, पृष्ठ-322

20- वर्ष-एक, अक-सात, आश्विन 1978 वि०

21- वर्ष-दो, अंक-दो, कार्तिक 1979 वि०

22- वर्ष-एक, अक-10-11, पौष-माघ 1978 वि० शिवपूजन रचनावली, खड-चार, पृ०-351-352

23- वर्ष-दा, अक-तीन, अग्रहायण 1979 वि० शिवपूजन रचनावली, खंड-चार, पृ०-364

24- वर्ष-दो, अक-आठ, वैशाख 1980 वि० शिवपूजन रचनावली, खड चार पृ०-377.

25- वर्ष 2, अक 7, चैत 1980, वि० शिवपूजन रचनावली, खण्ड 4, पृष्ठ - 372-73

25(क)- बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित अमृत महोत्सव स्मारिका में पटना से प्रकाशित होने वाले लगभग 800 पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख हुआ है। लेकिन इसका नामोल्लेख तक नहीं है।

26- शिवपूजन रचनावली, खड-चार में पृष्ठ 280 से 286 तक संकलित।

27- नयी धारा, सितम्बर 1956, पृष्ठ-9

28- गोलमाल, 28 अगस्त 1924, पृष्ठ-4

29- उपर्युक्त, 21 अगस्त, 1924, पृष्ठ-5

30- हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, त्रयोदश भाग, पृष्ठ-120 और अमृत महोत्सव स्मारिका, पृष्ठ-15.

31- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, पाटलिपुत्र टाइम्स, 1 जनवरी 1987 ई०, पृष्ठ-6.

32- बिहार की हिन्दी पत्रकारिता, शैलेन्द्र कुमार मोहन, हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम, पृ०-180.

33- अग्रहरि सेवक, वर्ष-एक, अंक-6-7, जून-जुलाई 1921 इ० के अंक में प्रकाशित।

34- नवम्बर 1930, (प्रवेशांक).

35- शिवपूजन रचनावली, खंड-चार, पृष्ठ-381

36- मासिक 'गंगा', प्रवाह-एक, तरंग-दो, पौष संवत् 1987 वि०

37- उपर्युक्त

38- मासिक 'गंगा', प्रवाह-एक, तरंग-छह, वैशाख 1988 वि०

39- उपर्युक्त

40- मासिक 'गंगा', प्रवाह-एक, तरंग-आठ, आषाढ 1988 वि०

41- उपर्युक्त

42- मासिक 'गंगा', प्रवाह-एक, तरंग-10, श्रावण 1988 वि०

43- शिवपूजन रचनावली, खंड-चार, पृष्ठ-392

44- प्रवेशांक, मई 1931 ई०, पृष्ठ-27.

45- उपर्युक्त

46- बिहार में पत्रकारिता का विकास, श्री शिवेन्द्र नारायण, कांग्रेस अभिज्ञान ग्रंथ, 1962, पृष्ठ-173

47- साप्ताहिक 'योगी', वर्ष-18, अंक-24, 16 जून 1951

48- उपर्युक्त, वर्ष-24, अंक-26, 13 जुलाई 1957

49- डॉ० जितेन्द्र वत्स ने बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'अमृत महोत्सव स्मारिका' में इसका प्रकाशन जन्माष्टमी 1933 ई० में स्वीकार किया है। किन्तु देवव्रत शास्त्री स्मृति दर्पण (सं० केदारनाथ कलाधर, मार्कण्डेय प्रवासी) की विवरणिका में इसका पहला अंक 21 मई 1934 ई० को प्रकाशित दिखाया गया है। शिवपूजन रचनावली खंड तीन में इसका पहला अंक 21 अगस्त 1934 ई० को प्रकाशित उल्लिखित है।

50- वर्ष-1, अंक-1, 31 अगस्त 1934 ई०, शिवपूजन रचनावली, खंड-तीन, पृष्ठ-292.

51- साप्ताहिक 'नवशक्ति', अप्रैल 1938 ई०

52- उपर्युक्त, जून 1938 ई०

53- उपर्युक्त, अगस्त 1938 ई०

54 उपर्युक्त अप्रैल 1938 ई

55- साप्ताहिक 'नवशक्ति', अप्रैल 1938 ई०, शिवपूजन रचनावली पृ०-497

56- 'चम्पारन-सदेश', वर्ष-1, अंक-6, 7 जून 1934 ई०, पृ०

56(क)- त्रैमासिक, 'साहित्य', पटना, वर्ष-1, अक 1, मार्च 1950 ई

57- उपर्युक्त, वर्ष-1, अक-3, अक्टूबर 1950 ई०

58- उपर्युक्त, वर्ष-1, अक-4, जनवरी 1951 ई०

59- उपर्युक्त, वर्ष-2, अक-1, अप्रैल 1951 ई०

60- उपर्युक्त, वर्ष-2, अक-3, अक्टूबर 1951 ई०

61- उपर्युक्त, वर्ष-2, अक-3, अक्टूबर 1951 ई०

62- उपर्युक्त, वर्ष-2 अक-4, जनवरी 1952 ई०

63- उपर्युक्त, वर्ष-3, अक-2, जुलाई 1952 ई०

64- उपर्युक्त, वर्ष-4, अंक-3, अक्टूबर 1953 ई०

65- उपर्युक्त, वर्ष-4, अक-4, जनवरी 1954 ई०

66- उपर्युक्त, वर्ष-5, अक-1, अप्रैल-1954 ई०

67- उपर्युक्त वर्ष-5, अंक-1, अप्रैल-1954 ई०

67(क)- उपर्युक्त, वर्ष-5, अक-2, जुलाई-1954 ई०

68- उपर्युक्त, वर्ष-5, अंक-2, जुलाई-1954 ई०

69- उपर्युक्त, वर्ष-5, अक-3, अक्टूबर-1954 ई०

70- मासिक 'साहित्य', वर्ष-6, अंक-1, अप्रैल-1955 ई०

71- मासिक 'साहित्य', वर्ष-6, अक-4, जुलाई-1955 ई०

72- त्रैमासिक 'साहित्य' वर्ष-7, अंक-2, जुलाई-1956 ई०

73- त्रैमासिक 'साहित्य' वर्ष-8, अक-1, अप्रैल-1957 ई०

74- त्रैमासिक 'साहित्य' वर्ष-8, अंक-3, अक्टूबर 1957 ई०

75- उपर्युक्त, वर्ष-8, अक-4, जनवरी 1958 ई०

75(क)- उपर्युक्त, वर्ष-9, अक-1, अप्रैल 1958 ई०

76- उपर्युक्त, वर्ष-5 अंक-3, अक्टूबर 1954 ई०

77- मासिक 'साहित्य', वर्ष-6, अंक-7, अक्टूबर 1955 ई०

78- त्रैमासिक साहित्य , वर्ष-7, अक-1, अप्रैल 1956 ई०

79- उपर्युक्त, वर्ष-7, अंक-2, जुलाई 1956 ई०

80- उपर्युक्त, वर्ष-5, अक-1, अप्रैल 1954 ई०

81- मासिक 'साहित्य', वर्ष-6, अक-5-6, अगस्त-सितम्बर -1955 ई०

82- साहित्य, रजत-जयती विशेषाक वर्ष-6, अक-8 से 12, नवम्बर 1955 ई० स मार्च 1956

83- त्रैमासिक साहित्य, वर्ष-7, अंक-3, अक्टूबर 1956 ई०

84- मासिक 'किशोर', वर्ष-12, अंक-1, अप्रेल 1949 ई०

85- उपर्युक्त, वर्ष-6, अक-10, जनवरी 1944 ई०

86- शिवपूजन रचनावली, चतुर्थ खड, पृ०-127

87- श्री शिवेन्द्र नारायण ने इसका प्रकाशन वर्ष 1940 ई० माना है। देखें-कांग्रेस अभिज्ञान ग्रथ, 1962, पृ०-174

88- डॉ० जितेन्द्र वत्स न 'अमृत महोत्सव स्मारिका' में इसका प्रकाशन वर्ष 1942 माना है, जो भ्रामक है। इसका प्रकाशन वर्ष 1941 है। देखें देवव्रत शास्त्री स्मृति दर्पण। राष्ट्रवाणी का पहला अक 28 मार्च 1941 ई० को प्रकाशित हुआ था।

89- इसका प्रथम अक 2 मई 1941 को प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक प० दिनेश रत्न झा थे।

90- शिवपूजन रचनावली, खड-तीन, पृ०-257 से 261

91- शिवपूजन रचनावली, खड-चार, पृ०-95

92- आश्चर्य है कि पटना से प्रकाशित होनेवाली 800 पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करनेवाले डॉ० जितन्द्र वत्स इस कैसे भूल गये।

93- शिवपूजन रचनावली, खड-तीन, पृ०-265 से 271

94- उपर्युक्त, पृष्ठ-267-268

95- मासिक 'हिमालय', वर्ष-1, अक-2, फाल्गुन 2002 वि०

96- मासिक 'हिमालय', वर्ष-1, अक-1, माघ 2002 वि०

97- आजकल, स्वर्ण जयती अक, मई-जून, 1994 प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली, स०-प्रताप सिह विष्ट, पृ०-67

98- त्रैमासिक 'पारिजात', फरवरी 1946 ई०

99 उपर्युक्त जनवरी 1948 ई०

100- साप्ताहिक 'स्वदेश' 19 नवम्बर, 1947 ई.

101- शिवपूजन रचनावली, भाग-3 पृ -262

102- दैनिक 'नवराष्ट्र', गाँधी अंक 30 जनवरी 1949 ई

आज़ादी के बाद बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का आरंभिक दौर

(1947–1960 ई०)

सन् सैंतालिस में एक लम्बे संघर्ष के बाद हमें आजादी मिली। राष्ट्र-मुक्ति के लिए किया जानेवाला संघर्ष सार्थक हुआ और हमारे देश में लोकतंत्र के एक नये युग का आरम्भ हुआ। अपनी स्वतत्रता को लेकर हमने जो सपने देखे थे, धीरे-धीरे वे टूटकर चकनाचूर होने लगे। हमारे राष्ट्रनायक महात्मा गाँधी की हत्या अपने ही एक बन्धु की गोली से हुई। भारत और पाकिस्तान का विभाजन देश की शांति के लिए काफी त्रासद सिद्ध हुआ। जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे शुरू हुए। हमारी अपनी सरकार ने इसपर नियन्त्रण अवश्य किया, किन्तु एक मुल्क की जगह हम अलग-अलग प्रान्तों में विभाजित होने लगे। पचशील का सिद्धान्त खोखला सिद्ध हुआ और भाई बनकर चीन ने हमारे देश की स्वतंत्रता पर आक्रमण कर दिया। इस तरह देश का जनमानस अपनी स्वतत्रता पर सोचने लगा। हम मोहभंग की स्थिति से गुजरने लगे। सुविधा भोगी वर्ग सत्ता के इर्द-गिर्द केन्द्रित होने लगा, साधना और संघर्ष की जगह चाटुकारिता को महत्त्व मिलने लगा। 1954 के बाद साहित्य में भी मोहभंग की यह स्थिति स्पष्ट देखी जा सकती है। वस्तुत: आजादी के

बाद हिन्दी साहित्य में भी काफी बदलाव आया है यह कई आन्दोलनों से प्रभावित होकर विकास की ओर अग्रसर होता है। ऐसी स्थिति में हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता ने न केवल हमें जागरूक किया अपितु उसने मानवीय संवेदना के सस्कार में भी मुख्य भूमिका का निर्वहन किया। इस कालावधि में प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाओं का विवरण इस प्रकार है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से 17 नवम्बर 1947 को दैनिक समाचार-पत्र के रूप में 'जनशक्ति' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह समाचार-पत्र था, किन्तु इसमें प्रगतिशील लेखकों की रचनाएं छपती थीं। नागार्जुन, रामविलास शर्मा जैसे रचनाकार 'जनशक्ति' में बराबर प्रकाशित होते थे। इधर इसका प्रकाशन साप्ताहिक रूप में होने लगा है। *श्री सूरज प्रसाद* इसका सम्पादन कर रहे हैं। मार्क्सवादी चिन्तन को प्रस्तुत करने में इसकी ऐतिहासिक भूमिका रही है।

1948 ई० में पटना से 'ज्योत्स्ना' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके सस्थापक और आदि संपादक *श्री शिवेन्द्र नारायण* थे। यह पत्रिका आज भी प्रकाशित होती है और आज इसका संपादन *श्री चक्रधर* करते है। बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में 'ज्योत्स्ना' की अपनी उपलब्धियाँ रही है। इसमें हिन्दी के प्रतिनिधि राष्ट्रीय रचनाकारों की रचनाए प्रकाशित होती रही है। वैचारिक साहित्य को भी 'ज्योत्स्ना' में पर्याप्त महत्व मिला। इसके दूसरे वर्ष के ग्यारहवें अंक में आचार्य शिवपूजन सहाय ने 'साहित्यिक शहीद' [1] शीर्षक विचार-लेख में साहित्य के विकास के लिये गुमनाम शहीद हो जानेवाले साहित्यकारों को नमन किया है। 1973 में रजत-जयंती वर्ष के अवसर पर प्रकाशित 'ज्योत्स्ना' का विशेषांक अपनी स्तरीय सामग्री और सुलझी सपादकीय दृष्टि के कारण काफी लोकप्रिय हुआ। इसमें दो खंड थे- रचना खड और आलोचना खंड। महत्वपूर्ण रचनाकारों व आलोचाकों का चित्र भी इसमें प्रकाशित किया गया था। इस अंक की विषय-सूची निम्नलिखित है -

रचना खण्ड

तीसरी औरत	कहानी	श्री कृष्ण चन्दर
समय	"	श्री यशपाल
इन्सान का जन्म	"	श्री राधाकृष्ण

ईश्वर भर बचार		रेणु
तितली		कमलेश्वर
प्लास्टिक का लाल ग्लास		नागार्जुन
मोनालिसा	"	भिखु
घर	"	मधुकर सिह
गढा हुआ सच	"	जुगनू शारदेय
मनोवृत्ति	"	निशिकान्त
अबोध आत्म विश्वास	"	सुष्मा देशमुख
अलीबाबा : एक मौलिक चिन्तन	व्यंग्य	के० पी० सक्सेना
अध्यक्ष महोदय	"	शरद जोशी
का पुरूष	एकांकी	विष्णु प्रभाकर
विहगावलोचन	आत्मकथा	बनारसीदास चतुर्वेदी
किचक् डोम	ललित निबंध	कुबेरनाथ राय
वैशाख पूर्नो की रात, डल की थिरकन और शंकराचार्य का दिग्विजय	"	शकर दयाल सिह
तीन कविताएं	कविता	रामधारी सिंह 'दिनकर'
मेरा खोया कैशोर्य	"	प० सुमित्रानन्दन पत
त्रिभग	"	आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री
सम्पूर्ण मै	"	केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'
तुम्हारी याद	"	हंस कुमार तिवारी
मंत्र	"	नागार्जुन
वसंत की प्रतीक्षा	"	पोद्दार रामावतार अरुण
शेष	"	डॉ० धर्मवीर भारती
दुख-दर्द के हमसफर (कवि श्रेष्ठ की स्मृति में)	"	वीरेन्द्र मिश्र
गीत	"	डॉ० शम्भूनाथ सिंह
मधुर मनुहार	"	आरसी प्रसाद सिह

इस प्रकार 'ज्योत्स्ना' का यह अंक अपनी बहुमूल्य सामग्रियों के संचयन के कारण काफी लोकप्रिय हुआ। इधर हाल में इसका 'शिवेन्द्र नारायण स्मृति अंक' प्रकाशित हुआ है। आज इस पत्रिका को स्तरीय रचनाएं नहीं मिल पा रही है, फिर भी इसके प्रबंध-संपादक प्रो० शिशिर कुमार की कर्मठता के कारण इसका नियमित प्रकाशन हो पा रहा है और पुराने रचनाकारों के साथ नये रचनाकारों को भी इसमें अभिव्यक्ति का पर्याप्त अवसर मिल रहा है।

1948 ई० में ही *आचार्य नलिन विलोचन शर्मा* और *शिवचन्द्र शर्मा* के संपादन में 'दृष्टिकोण' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसका पहला अंक फरवरी 1948 ई० में प्रकाशित हुआ। 1952 में यह त्रैमासिक हो गया। इसमें आलोचनात्मक लेखों का प्रकाशन होता था। हिन्दी की शोधपरक और आलोचनात्मक पत्रकारिता के विकास में 'दृष्टिकोण' ने हिन्दी कथा समीक्षा को एक नई दिशा दी। 'दृष्टिकोण' में छपी कथासाहित्य की समीक्षाएँ अपनी सटीक टिप्पणी और निष्पक्ष मूल्यांकन के लिये काफी महत्त्वपूर्ण हैं। 1948 ई० में पटना से प्रकाशित होनेवाली महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिकाओं में 'रिमझिम' और 'साप्ताहिक कहानियाँ' प्रसिद्ध है। 'रिमझिम' साप्ताहिक पत्र था और इसका पहला अंक 15 सितम्बर 1948 को प्रकाशित हुआ था। 'साप्ताहिक कहानियाँ' के संपादक प्रसिद्ध साहित्यकार *श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त* थे। 'साप्ताहिक कहानियाँ' के माध्यम से न केवल हिन्दी के नये कहानीकारों को अभिव्यक्ति का सार्थक मंच मिला बल्कि कहानी आंदोलन को एक सार्थक दिशा भी प्राप्त हुई। 1949 ई० में छपरा से 'यात्री' नामक एक साप्ताहिक-पत्र के प्रकाशन का विवरण मिलता है। इसका 'अस्वीकृत रचना अंक' सितम्बर 1949 ई० में प्रकाशित हुआ था। उस अंक में प्रसिद्ध पत्रकार और साहित्य शिल्पी आचार्य शिवपूजन सहाय का लेख छपा था- 'मेरी सबसे पहली अस्वीकृत रचना'।[2]

1 अप्रैल, 1950 को पटना से राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के सुपुत्र *श्री उदयराज सिंह* ने 'नई धारा' का प्रकाशन आरंभ किया। बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में 'नई धारा' का शीर्षस्थ स्थान है। इसका संपादन सुप्रसिद्ध साहित्यकार *रामवृक्ष बेनीपुरी* ने किया। रचनात्मक और आलोचनात्मक साहित्य को इसने समान महत्त्व दिया। इसके पहले अंक की विषय सूची निम्नलिखित है-

स्थायी शीर्षक	लेखशीर्षक	लेखक
उन्ही की लेखनी स	आशार्वाद	मैथिलीशरण गुप्त
	धारा जबकि भग पर आती	प्रभाकर माचवे
हम इनसे मिले थे	गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति	रामधारी सिंह 'दिनकर'
भ्रमण	डिरी डोल्मा	डॉ॰ सत्यनारायण
भारत भारती	तेलगु-साहित्य	वारणासि राममूर्ति 'रेणु'
वेद-वाणी	मधुसूक्त	मामय
जानी सुनी देखी	पूरब और पश्चिम	राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह
चिन्तन : मनन		महर्षि रमण
	'मैं' की खोज	साँवलिया बिहारी लाल वर्मा
नौ कवितायें	पिंजरे का पंछी	द्विज
	कैकेयी	प्रभात -
	शबनम की जंजीर	दिनकर -
	गोमुखी	जानकी वल्लभ शास्त्री
	शब्द-बेध	रूद्र
	कवि की चिंता है चिर नवीन	नारायण
	अकेला पंछी	कन्हैया
	कल्पना और रूप	रामसंजीवन
	ज्वार-भाटा	किशोर -
समीक्षा	आलोचना के नाम पर	प्रो॰ देवेन्द्र नाथ शर्मा
डायरी के पन्ने	आठ दिन	श्री मोहन लाल महतो 'वियोगी'
कोणार्क	भग्न रागिनी	श्री जगदीश चन्द्र माथुर
विश्व-भारती	ऑंद्रे जींद	प्रो॰ नलिन विलोचन शर्मा
आपकी चिट्ठी		सर्वश्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, द्विज, बनारसी दास, वियोगी, बच्चन

सवम प्यारी कविता 'प्रय श प बहुत ह रात बच्चन

प्यार न बाँधा जाये भवानी प्रसाद तिवारी

पत्रांजलि दो महत्वपुर्ण पत्र प० बनारसी दास चतुर्वेदी

हमें यह कहना है सम्पादकीय

'नई धारा' के माध्यम से अनेक नये रचनाकार सामने आये। हिन्दी क मूर्धन्य साहित्यकारों के साथ विदेशी रचनाकारों की रचनाएं भी इसमें प्रकाशित होती थी। मैक्सिम गोर्की [3] ऐसे रचाकारों में प्रमुख है। 'नई धारा' का 'बर्नार्ड शॉ अंक' [4] भी काफी लोकप्रिय हुआ। इसके माध्यम से शॉ की जीवनी के साथ उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण का विश्लेषण भी किया गया है। इतना ही नहीं, पाश्चात्य नाट्य शिल्प को भी इस अक में विवेचित किया गया था। 'फूल और कलियाँ' स्थायी स्तम्भ में हिन्दी के नये-पुराने कवियों को एक साथ प्रकाशित किया जाता था। 'नई धारा' का 'नलिन अंक', 'शिवपूजन सहाय अंक' का ऐतिहासिक महत्त्व है। 'नई धारा' का ही 'नाटक और रंगमंच विशेषांक' भी एक ऐतिहासिक विशेषांक है।

'नई धारा' में प्रकाशित होनेवाले विद्वानों में महाकवि निराला, [5] आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, [6] राष्ट्रकवि रामधारी सिह 'दिनकर', [7] कविवर आरसी प्रसाद सिंह, [8] जनार्दन झा द्विज' [9] केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' [10] कविवर रामगोपाल रूद्र, [11] जनकवि कन्हैया, [12] कविवर श्याम नन्दन किशोर, [13] धर्मवीर भारती, [14] कविवर मनोरंजन प्रसाद सिंह, [15] कविवर गंगा प्रसाद पाण्डेय, [16] श्री शैलेश मटियानी, [17] श्री ब्रजकिशोर नारायण, [18] पोद्दार रामावतार अरुण, [19] श्री व्योहार राजेन्द्र सिंह, [20] अवधेन्द्र देव नारायण, [21] मुरलीधर श्रीवास्तव, [22] भूपेन्द्र अबोध, [23] कविवर हरिवंश राय बच्चन, [24] डॉ० वचनदेव कुमार, [25] मोहन लाल महतो 'वियोगी', [26] राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, [27] राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, [28] डॉ० प्रभाकर माचवे, [29] आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, [30] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, [31] आचार्य शिवपूजन सहाय, [32] प्रो० कपिल, [33] महादेवी वर्मा, [34] माखन लाल चतुर्वेदी, [35] अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, [36] सुमित्रानन्दन पंत, [37] महापंडित राहुल सांकृत्यायन, [38] जगदीश चन्द्र माथुर, [39] उपेन्द्रनाथ अश्क, [40] उदय शंकर भट्ट, [41] शांतिप्रिय द्विवेदी, [42] सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, [43] मदन वात्स्यायन, [44] डॉ० सत्येन्द्र, [45] श्री कामेश्वर शर्मा, [46] रोमाँ रोलाँ, [47] आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय, [48]

गोविन्द चातक,[49] सावलिया बिहारी लाल वर्मा,[50] रवलदार त्रिपाठी 'सहृदय',[5] डा० ईश्वरचन्द्र,[52] लक्ष्मीशंकर व्यास,[53] वृन्दावन लाल वर्मा,[54] रामेश्वर शुक्ल 'अंचल',[55] प्रो० नलिन विलोचन शर्मा,[56] प्रो० चनकर झा,[57] आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र,[58] डॉ० त्रिलोकी नाथ दीक्षित,[59] श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त,[60] पृथ्वी नाथ शर्मा,[61] प्रो० कुमार विमल,[62] श्री रेणु,[63] प्रभुदयाल अग्निहोत्री,[64] डॉ० मुरली रेड्डी,[65] हरिमोहन झा,[66] आचार्य विनोबा,[67] ब्रजेन्द्र संगर,[68] प्रो० आनन्द नारायण शर्मा[69] आदि उल्लेखनीय है।

'नई धारा' के संपादक श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ने भी समय-समय पर इसमें कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपनी रचनाएं प्रकाशित की। उनका स्थायी स्तम्भ 'डायरी' काफी लोकप्रिय हुआ। डायरी के माध्यम से उन्होंने समसामयिक साहित्य, राजनीति, पत्रकारिता और संस्कृति पर अपना स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। पुराने साहित्यकार 'अगाध जी' के बारे में अपना मंतव्य देते हुये उन्होंने लिखा- "मनुष्य की कल्पना-शक्ति और प्रतिभा को मापने के लिए बड़ी-बड़ी घटनाओं को ही कसौटी बनाया जाय, यह आवश्यक नहीं। जीवन में कई छोटी-छोटी घटनाएं आये दिन होती रहती है और प्रतिभावान व्यक्तियों की सूझ-बूझ का पता उनसे ही लग जाता है। तो ऐसी ही एक छोटी सी घटना है जिसका उल्लेख न करने पर आप अगाध जी के गुणों की थाह न पा सकेंगे। एक दिन अगाध जी हमारे कार्यालय में आये तो सही, पर मेरे पास अधिक देर जमे नहीं। बस दो मिनट में ही चले गये। मैंने राहत की सांस ली। पर थोड़ी देर बाद एक रिक्शेवाले को लेकर चपरासी हाजिर हुआ कि एक अधेड़ बाबू जी उसके रिक्शे पर बैठकर आये थे और सुबह नौ बजे से ही उन्होंने रिक्शा ले रखा था। मुझे समझते देर न लगी। तलाश कराने पर मालूम हुआ अगाध जी पीछे के रास्ते से जा चुके थे।"[70]

'नई धारा' एक समग्र पत्रिका थी और इसने चिन्तन को एक सार्थक मंच प्रदान किया। इस साहित्यिक पत्रिका के माध्यम से कई नये लेखकों को प्रकाश में आने का अवसर मिला। ऐसे लेखकों में रामनिरंजन परिमल,[71] पाण्डेय आशुतोष,[72] दिनेश भ्रमर,[73] सियाराम शरण प्रसाद,[74] रमेश किरण,[75] अजातशत्रु,[76] बख्शी विद्यानन्द,[77] सुरेन्द्र प्रसाद जमुआर,[78] विमल चन्द्र झा 'विमल',[79] अमरेन्द्र कुमार पुनीत,[80] गोपाल जी स्वर्ण किरण,[81] प्रो० गीता श्रीवास्तव,[82] प्रो० रामप्यारे तिवारी,[83]

[illegible] नुवाद है। 'नई धारा' [illegible] की। साहित्य की प्रायः प्रत्येक विधा का इसने [illegible] किया।

इस प्रकार न केवल बिहार अपितु सम्पूर्ण हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के [illegible] 'नई धारा' का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है। आज [illegible] किन्तु [illegible] स्तरीयता में कमी आयी है। बेनीपुरी जी के बाद [illegible] राजा श्री उदयराज सिंह ने इसके स्वरूप को बनाये रखने की पूरी कोशिश की, किन्तु आज यह पत्रिका साधन और सहयोग के अभाव में अपनी स्तरीयता खोती जा रही है। बेनीपुरी जी के संपादन काल में साहित्यिक गतिविधियों की सूचना भी इस पत्रिका में दी जाती थी और सिद्ध साहित्य-सेवियों पर लेखमाला का प्रकाशन भी होता था। महापंडित राहुल जी की अस्वस्थता पर इस पत्रिका ने जो मंतव्य दिया था वह मात्र एक सूचना का तात्कालिक प्रभाव नहीं था बल्कि इसके मूल में अनवरत साधना करनेवाले साहित्यकारों की दुरवस्था पर आक्रोश भी व्यक्त किया गया था- "राहुल जी लंका में विद्यालंकार विश्वविद्यालय के दर्शन-विभाग के अध्यक्ष होकर गए हैं और वहाँ उनकी ऐसी अस्वस्थता हमें घोर चिन्ता में डाल रही है। यह कैसी विडंबना है कि राहुल जी जैसा सर्वमान्य विद्वान अर्थाभाव के चंगुल में फंसा। अपने देश के बाहर, एक उपेक्षित-सा, यों घुल-घुल कर मर रहा है और इस ओर अबतक किसी का ध्यान नहीं गया। राहुल जी का जीवन बिहार ही नहीं, सारे देश की एक थाती है और हमें विश्वास है देश उन्हें इस दलदल से निकालने में अब विलम्ब नहीं करेगा। परमात्मा राहुल जी को शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे-यही हमारी हार्दिक कामना है।" 86

'नई धारा' में समसामयिक साहित्यकारों और आचार्यों का जीवन-वृत्त भी प्रकाशित होता था। उदाहरणार्थ-आचार्य शिवपूजन सहाय पर लिखित श्री सिद्धनाथ कुमार का लेख देखा जा सकता है। लेख की आरंभिक पंक्तियाँ हैं- "वह साहित्यिक तपस्वी: मृत्यु-शय्या पर!! हाँ, यदि हमने तुरन्त ही ध्यान नहीं दिया, उनके यथोचित उपचार के लिए, दवा-दारू के लिए, किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान में शीघ्रातिशीघ्र उन्हें भेजने के लिए, तो आज पटना के टी० बी० अस्पताल के जिस बिस्तरे पर हिन्दी साहित्य के हमारे महान तपस्वी, बिहार के हिन्दी लेखकों की पिछली

पुश्त के स्रष्टा ऋषियों के जीवन की परम्परा के अन्तिम प्रतीक आचार्य शिवपूजन सहाय जी रखे गये है, वह उनके लिए मृत्यु शय्या सिद्ध हो सकता है, यह कहते हुये हमें अपार पीड़ा हो रही है, किन्तु यथार्थ बात यही है। . चाहे जिस कारण से हो, यह विवाद का विषय नहीं है। इस समय देखना सिर्फ यह है कि इस आखिरी वक्त में हम शिवजी को बचाने के लिए कुछ कर सकते हैं या नहीं। . . हाँ, यदि शिवजी के लिए कुछ करना है, तो चन्द दिनों के अन्दर दस हजार रुपये इकट्ठा कर देना हैं।'' [87]

उदयराज सिंह के सम्पादन में भी प्रारंभ में इस पत्रिका की स्तरीयता बनी रही किन्तु धीरे-धीरे इसकी पहचान समाप्त होने लगी और हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को एक नई दिशा देनेवाली 'नई धारा' आज महज प्रकाशन की औपचारिकता का निर्वाह भर कर रही है। यदा-कदा इसके किसी अंक में कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री देखने को मिल जाती है। वस्तुतः इसकी स्तरहीनता नवें दशक में ही आरम्भ हुई। उदयराज जी की अस्वस्थता के कारण यह पत्रिका अपने स्तर को बनाये रखने में असफल रही। सन् 1980 के पहले यह पत्रिका सुरुचिपूर्ण सामग्रियों से भरी रहती थी। अप्रैल-मई 1975 अंक की विषय-सूची देखी जा सकती है-

कविता

भद्रोचित	राजेन्द्र प्रसाद सिंह
सहपाठी दिनकर के प्रति	केसरी
सम्बन्धों की मृत्यु पर	कुमार विमल
पागल-पठार पर	राजकुमार कुम्भज
ओ कथावाचक!	जयघोष

भेंटवार्त्ता

पुलिस नम्बर दो	अमृता प्रीतम

विशेष लेख

बिहार का प्रथम हिन्दी पत्र : 'बिहार बंधु'	वासुदेव नन्दन प्रसाद

कहानी

दगाग्रस्त	तारादत्त उपाध्याय
इन्टीग्रिटी	राजकुमार कपूर

निबंध

हमारे विद्यार्थी : विद्रोह के पथ पर	जी० सुन्दर रेड्डी
नये प्रकाशन	सुरेन्द्र जमुआर

फिर भी, हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में 'नई धारा' अपनी ऐतिहासिक उपलब्धियों के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी है। इसने अनेक साहित्यिक आदोलनों का नेतृत्व किया, नवाकुरों को प्रतिष्ठित किया और एक समर्थ रचनात्मक मंच के रूप में इसने साहित्यकारों को अभिव्यक्ति के लिये प्रेरित किया।

'नई धारा' के बाद चर्चित साहित्यिक पत्रिका के रूप में 'मागधी' का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण है। यह हिन्दी की विभाषा मगही की पत्रिका थी और त्रैमासिक पत्रिका के रूप में एकंगर सराय से इसका प्रकाशन 1950 ई० में आरम्भ हुआ। इसके कुछ अक पटना से भी प्रकाशित हुये। *श्रीकान्त शास्त्री* इसके संपादक थे और *रामवृक्ष सिह* प्रकाशक।

1951 ई० में 'भारती' और 'मगध महिला कॉलेज पत्रिका' का प्रकाशन विशेष उल्लेखनीय है। 'भारती' बी० एन० कॉलेज, पटना के हिन्दी विभाग की वार्षिक पत्रिका थी और हिन्दी की स्तरीय रचनाओं का इसमें प्रकाशन होता था। इस पत्रिका के अंकों में कई महत्त्वपूर्ण शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं। हिन्दी विभागाध्यक्ष इसके पदेन संपादक होते है। अनियमित रूप में यह पत्रिका अब भी प्रकाशित होती है। 'मगध महिला कॉलेज पत्रिका' भी महाविद्यालय की पत्रिका थी और वार्षिक सकलन के रूप में इसका प्रकाशन होता था। *प्रो० जी० गांगुली, प्रो० इला मल्लिक* ने इसका संपादन किया। इसमें महाविद्यालय की छात्राओं एव प्राध्यापिकाओं की रचनाएं प्रकाशित होती थीं।

1950 के आसपास प्रकाशित हानेवाली अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं में 'आलोक, [88] 'ऋषि संदेश', [89] 'उल्टी गगा', [90] 'अतिशिखा', [91] 'अशोक' [92] और 'आलोक' [93] का प्रकाशन महत्वपूर्ण माना जा सकता है। अपने अल्पकालीन जीवन में इन पत्रिकाओं ने अपने अंचल की

साहित्यिक प्रगति के लिये प्रयत्न किये तत्पश्चात् नवम्बर 1952 ई० में *डा लक्ष्मीनारायण सुधांशु* के संपादन में अवंतिका नामक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। यह मासिक पत्रिका 1956 ई० तक प्रकाशित हुई। अपने चार वर्षीय जीवन में इसने बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता को एक नई अर्थवत्ता प्रदान की। विचारात्मक साहित्य की प्रगति के लिये 'अवंतिका' द्वारा किये गये कार्य ऐतिहासिक कहे जा सकते हैं। इस पत्रिका में शोध और समीक्षा को भी पर्याप्त महत्व मिला। जीवनी और संस्मरण जैसी उपेक्षित साहित्यिक विधाओं का भी 'अवंतिका' में पर्याप्त प्रकाशन हुआ। अनेक उपेक्षित किन्तु समर्थ साहित्यकार इस पत्रिका के माध्यम से प्रकाश में आये। प्रो० अक्षयवट मिश्र 'विप्रचंद्र को इस पत्रिका में प्रकाशित करते हुये आचार्य शिवपूजन ने लिखा था- "प्रोफेसर अक्षयवट मिश्र डुमराँव (शाहाबाद, बिहार) के निवासी थे। वे संस्कृत और प्राकृत के मर्मज्ञ विद्वान थे। संस्कृत और ब्रजभाषा में बड़ी मधुर कविता करते थे। द्विवेदी-युग के यशस्वी गद्य-लेखकों में उनका प्रतिष्ठित स्थान था। 'सरस्वती' में उनकी अनेक रचनाएं और लेखमालाएं प्रकाशित हुई थीं। बंगला तो वे मातृभाषा की तरह जानते और बोलते थे। ब्रजभाषा में आशुकवि के समान समस्यापूर्तियाँ करते थे। उन्होंने संस्कृत में दोहा छंद चलाकर बड़ा नाम कमाया था। पंडित विजयानन्द त्रिपाठी के समान धुरंधर विद्वान भी इस युग में संस्कृत के दोहा-छंद को उनका अविष्कार कहा करते थे।" [94] सुधांशु जी द्वारा लिखित 'अवंतिका' का आठ पृष्ठीय सम्पादकीय साहित्यिक, सांस्कृतिक, शिक्षा एवं भाषा और राजनीतिक दृष्टियों से काफी महत्वपूर्ण होता था। 'अवंतिका' का प्रकाशन अजन्ता प्रेस, पटना से होता था।

1952 ई० में पटना से 'जनता' [95] नामक दैनिक पत्र आरंभ हुआ। कुछ दिनों के बाद ही यह साप्ताहिक हो गया। इसका प्रकाशन एक मंडल करता था और इसके संपादन में अनेक महत्वपूर्ण साहित्यकार संलग्न थे। *श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रभाकर मिश्र, गंगाशरण सिंह, पद्मनारायण झा 'विरंचि'* इसके संपादक मंडल के सदस्य थे। 'जनता' समाजवादी विचारधारा का साहित्यिक पत्र था। साहित्य की वैचारिक भूमिका के निर्वाह में इस पत्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसमें अनेक महत्वपूर्ण रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

1952 ई० में ही पटना से 'पाटल' नामक एक मासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसका संपादन *श्री शिवचन्द्र शर्मा* और *श्री रामदयाल पाण्डेय* ने किया। आचार्य शिवपूजन सहाय 'पाटल' के नियमित लेखक थे। प्रेमचन्द जी पर लिखा उनका संस्मरणात्मक लेख काफी चर्चित हुआ।[96] हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में 'पाटल' की उल्लेखनीय भूमिका रही है। 1952 ई० में ही डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के संपादन में 'संस्कृति' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। साहित्य, कला और संस्कृति पर केन्द्रित इस पत्रिका ने न केवल प्राचीन सांस्कृतिक चेतना को रेखांकित किया बल्कि हिन्दी शोध को भी समृद्धि प्रदान की।

1953 ई० में प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में 'चाणक्य', 'जनजीवन' और 'बिहार थियेटर' महत्त्वपूर्ण हैं। 'जनजीवन' समाज कल्याण शिक्षा बोर्ड, बिहार की पत्रिका थी और इसके संपादक प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ब्रजकिशोर नारायण थे। 'जनजीवन' में न केवल समाज कल्याण और शिक्षा से संबंधित सामग्री का प्रकाशन होता था बल्कि इसमें साहित्यिक रचनाएं भी प्रकशित होती थीं। 'चाणक्य' हास्य-व्यंग्य की महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी और इसका प्रवेशांक जून 1953 ई० में प्रकाशित हुआ था। मासिक रूप में प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका का संपादन श्री शिवनन्दन साकृत्यायन और सुरेन्द्र कौशिक ने किया। यह पत्रिका भी पटना से ही प्रकाशित हुई।

'बिहार थियेटर' रंगमंच की एक आवश्यक साहित्यिक पत्रिका के रूप में चर्चित हुआ। इसका संपादन बिहार के तत्कालीन शिक्षा सचिव, प्रसिद्ध नाटककार, नाट्य समीक्षक और रंगकर्मी श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने किया। इसका प्रकाशन पटना से होता था और वर्ष में इसके तीन अंक प्रकाशित होते थे। लोकनाट्य और परम्पराशील नाट्य पर इस पत्रिका में कई गंभीर लेख प्रकाशित हुये। संगीत विषयक लेखों का प्रकाशन भी इसमें होता था। इतना ही नहीं, बिहार में हो रहे रंगकर्म का परिचय भी इस पत्रिका में दिया जाता था। इस प्रकार बिहार में रंग-चेतना के विकास में इस पत्रिका का विशेष योगदान है। जुलाई 1953 ई० में श्रीमती कुमुद शर्मा और विमला सिंह के संपादन में पटना से प्रकाशित होनेवाली बाल पत्रिका 'मुन्ना मुन्नी' का भी साहित्यिक मूल्य है। बाल साहित्य के प्रसार की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका घोषित होती है।

1954 ई० में पटना से कथानिका नामक एक कथा पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ यह मासिक पत्रिका थी इसके प्रधान संपादक *देवेन्द्र* थे और संपादक के रूप में *श्री रामेश्वर सिंह 'शांतिप्रिय' शत्रुघ्न राजीपुरी* अपना योगदान दे रहे थे। 1954 ई० में ही प्रकाशित होनेवाली 'कविता' नामक द्वैमासिक पत्रिका का साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है। प्रपद्यवादी काव्य-आन्दोलन के मुखपत्र के रूप में प्रकाशित इस पत्रिका का संपादन *आचार्य नलिन विलोचन शर्मा* करते थे। तत्कालीन हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों पर इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए। 'कविता' द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका थी, किन्तु इसके प्रकाशित चार अंकों में काफी अंतर है। इसका दूसरा अंक फरवरी 1956 में प्रकाशित हुआ और तीसरा अंक अगस्त 1957 में। मूलतः अज्ञेय जी द्वारा सम्पादित प्रकाशित 'प्रतीक' के समानान्तर बिहार से इसका प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके तीसरे अंक की विषय-सूची निम्नलिखित है-

	भालचद्र
काल का स्वरूप	(अनुवादक) गणेश
मुझे पी लेने के बाद?	सेवक
फुर्सत कहाँ?	अक्षय कुमार सिंह
भोर हो गई	रामदरस मिश्र
अभ्यास	केसरी कुमार
कविता और प्रयोजन	सेवक

1954 ई० से 1955 ई० तक प्रकाशित होनेवाली अन्य ाहित्यिक पत्रिकाओं में 'शंखनाद', [97] 'प्रभाती' [98] के नाम लिये जा सकते हैं। 1957 ई० में प्रकाशित होनेवाली 'विविधा' एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका थी। पटना से प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका का प्रसिद्ध कवि *राजेन्द्र किशोर* और विधिवेता *प्रभाशंकर मिश्र* ने किया रम्परा' भी एक सार्थक साहित्यिक पत्रिका थी और इसका पहला अंक 1 अक्टूबर 1958 ई० में पटना से प्रकाशित हुआ। इस त्रैमासिक पत्रिका के आरंभिक संपादक *श्री गोपीकृष्ण प्रसाद, नर्मदेश्वर प्रसाद* और *प्रभाशंकर मिश्र* थे। 1959 ई० में इसका प्रकाशन बंद हो गया। पुनः 1961 ई० में इसका प्रकाशन आरंभ हुआ और 1965 ई० तक यह पत्रिका प्रकाशित हुई। [99] इसका संपादन प्रसिद्ध कवि *श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह* ने किया। यह दो सौ पृष्ठों की पत्रिका थी और पुस्तकाकार प्रकाशित होती थी। स्तरीय सामग्री संकलन के कारण इस पत्रिका का ऐतिहासिक मूल्य है।

1956 में मुजफ्फरपुर से नवगीतकार *राजेन्द्र प्रसाद सिंह* के सम्पादन में 'सवेरा' नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके पूर्व 1954 में इसके तीन अंक *शारदा चरण जी* निकाल चुके थे। 'सवेरा' दूसरी बार एक वर्ष तक प्रकाशित हुआ और इसमें निराला और पंत की कविताएं भी प्रकाशित हुईं। 15 अगस्त 1957 ई० को मुजफ्फरपुर से 'आयाम' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसका सम्पादन *श्री रमण* ने किया। पहला अंक 'नई कविता : वस्तु और विवेचना' पर केन्द्रित था। इसके *कविता खण्ड* में कपिल, कृष्णनन्दन पीयूष, मदन वात्स्यायन, नरेश, ब्रजकिशोर नारायण, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, राधाकृष्ण सहाय, राजेन्द्र किशोर रमण और रमेश किरण की नई कविताएं प्रकाशित हुईं। *विवेचना खण्ड* में धर्मवीर भारती माचवे देवराज चितरंजन कनक

सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, कृष्ण नन्दन पीयूष, राजन्द्र प्रसाद सिंह, रमेश किरण, हरीश जायसवाल और रमण क लेख प्रकाशित किये गए।

इस प्रकार आजादी के बाद की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के उपरोक्त विवरण स पता चलता है कि इस काल में 'ज्योत्स्ना' एव 'नई धारा' ऐसी दो पत्रिकाएं थीं, जो लम्बे समय तक निकलती रहीं। हालांकि उनके प्रकाशन और स्तर में उतार-चढाव के कई दौर आए। इसी कालखण्ड में थोडे समय क लिए प्रकाशित होने वाली महत्वपूर्ण पत्रिकाओं की बडी संख्या सामने आई। 'जनता', 'अवन्तिका', 'कविता', आदि पत्रिकाओं की साहित्यिक भूमिका कम नहीं है जबकि इनका जीवन संक्षिप्त रहा। यह आश्चर्य का विषय है कि बाद के समय में, विशेष रूप से 1960 ई० के पश्चात्, जब हिन्दी साहित्य में परिवर्तन की धाराएं चलीं, यह प्रवृति ओर अधिक प्रभावशाली हो गई। बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के वर्तमान-काल में दो अंक, चार अंक निकलने वाली बहुत सारी ऐसी पत्रिकाएं हैं, जिनके साहित्यिक अवदान से इंकार नहीं किया जा सकता।

संदर्भ

1- शिवपूजन रचनावली, भाग-3, पृ०-208

2- शिवपूजन रचनावली, खंड-4, पृ०-101.

3- 'मैंने लिखना क्यों शुरू किया?' नई धारा, वर्ष-2 अक-3, जून 1951

4- वर्ष-1, अक-10, जनवरी 1951.

5- (1)- वर्ष-2, अक-1-2, अप्रैल-मई 1951, पृ०-2, 'होली' शीर्षक कविता।

(2)- वर्ष-2, अक-3, जून 1951, दो गीत, पृ०-1

(3)- वर्ष-1, अक-2, दो गीत, पृ०-2.

6- (1)- प्रवेशांक, अप्रैल 1950, गोमुखी (कविता), पृ०-54.

(2)- वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, कल्याणी (कविता), पृ०-57

(3)- वर्ष-2, अंक-3, फूल और कलियाँ

वर्ष-2, अंक-4, फूल और कलियाँ

वर्ष-11, अंक-5, जीवन दर्शन (कविता), पृ०-24.

वर्ष-11, अक-8, सौन्दर्य और काव्य-चेतना, विशेष लेख पृ०-3

7- (1)- वर्ष-1, अक-2 श्री जयप्रकाश नारायण (हम इनमें मिले थे), पृ०-27

(2)- वर्ष-11, अक-8, नवम्बर 1960, विदहिनी (कविता), पृ०-1.

(3)- वर्ष-1, अक-2, व्यष्टि-समष्टि (कविता), पृ०-55

(4)- वर्ष-1, अक-2, व्याल विजय (कविता), पृ०-90

8- (1)- वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, मुझे लौटकर जाने दो, (कविता), पृ०-56

(2)- वर्ष-11, अक-5, अगस्त 1960, तुलसीदास की आत्मकथा (विशेष लेख), पृ०-2.

(3)- वर्ष-11, अक-6, सितम्बर 1960, पलकों की छाया में (कविता), पृ०-1

(4)- वर्ष-12, अक-12, मार्च 1962, नये वर्ष की भेंट (कविता), पृ०-1

9- प्रवेशाक, अप्रैल 1950, पिंजड़े का पंछी (कविता), पृ०-50

10- (1)- वर्ष-11, अक-7, अक्टूबर 1960, मेरा भविष्य (कविता), पृ०-1

(2)- वर्ष-11, अक-12, मार्च 1961, कविता : कवि के प्रति, पृ०-1

11- वर्ष-11, अक-9, दिसम्बर 1960, प्रभाती (कविता), पृ०-1

12- वर्ष-1, अक-2, मई 1950, गीत

13 (1)- वर्ष-11, अक-4, जुलाई 1960, सौ गीत तुम्हारे मधुवन के पृ०-1

(2)- वर्ष-11, अंक-6, सितम्बर 1960, अब तक जो भगवान मिले है (कविता), पृ०-51.

14- वर्ष-2, अक-4, जुलाई 1951, कविता : फूल और कलियाँ

15- वर्ष-11, अक-3, जून 1960, अधिकार विसर्जन, पृ०-50.

16- वर्ष-11, अक-4, आदमी की कलम (कविता), पृ०-49

17- (1)- वर्ष-11, अक-5, अगस्त 1960, चार मुक्तक, पृ०-51

(2)- वर्ष-11, अक-9, दिसम्बर 1960, मुझको घिन है केवल उस भगवान से, पृ०-70

18- (1)- प्रवेशांक, कवि की चिन्ता है चिर नवीन (कविता), पृ०-60.

(2)- वर्ष-1, अक-2, मई 1950, व्याकरण और कविता, पृ०-60.

(3) वर्ष 11 अंक 3 जून 1960 [illegible] आश्रित हास्य लेख), पृ. 4

(4)- वर्ष-11, अंक 5, अगस्त 1960 15 अगस्त (कविता), पृ.-1

(5) वर्ष-11 अंक-7 अक्तूबर 1960 दिल्ली अभी दूर है (भ्रमण), पृ.-45

(6) वर्ष-11, अंक-8, नवम्बर 1960 ज्ञान विज्ञान मनोविज्ञान (लघु व्यंग्य कथा), पृ- 47

(7)- वर्ष 11, अंक-12 मार्च 1961, हालों की लाली (प्रहसन), पृ०-21

19- (1)- वर्ष-11, अंक-3, जून 1960, व्यक्तित्व का व्यक्तिगत मूल्यांकन (कविता), पृ०-38

(2)- वर्ष-11, अंक-6, सितम्बर 1960, फूल और कलियाँ

20- (1)- वर्ष-11, अंक-3, यम और नियम (चिन्तन-मनन), पृ०-29

(2)- वर्ष-11, अंक-6, मधुर प्रभाती (कविता), पृ०-53

(3)- वर्ष-11, अंक-8, अंधकार में प्रकाश (कविता), पृ०-51.

21- वर्ष-11, अंक-3, जून 1960, सभी का सगम चाँदनी में ही (गीत), पृ०-57

22- वर्ष-11, अंक-9, दिसम्बर 1960, गीत, पृ-46.

23- उपर्युक्त, गीत, पृ० -51

24- वर्ष-11, अंक-10, जनवरी 1961, धारा में बहते फूल (कविता), पृ०-1.

25- वर्ष-12, अंक-12, मार्च, 1962, त्रिपुरभेद (कविता), पृ०-53

26- (1)- प्रवेशांक, आठ दिन (डायरी के पन्ने), पृ०-77.

(2)- वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, अगस्त क्रांति के उतार के दिनों मे (डायरी के पन्ने), पृ०-11

27- (1)- वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, (पूरब और पश्चिम),जानी-सुनी देखी, पृ०-3

(2)- वर्ष-2, अंक-3, जून 1951, पूरब और पश्चिम (जानी सुनी देखी), पृ०-31.

28- वर्ष-2, अंक-1-2, अप्रैल-मई 1951

29- प्रवेशांक, धारा जबकि धरा पर आती, पृ०-4

30- वर्ष-1, अंक-2, आलोचना के नाम पर, पृ०-19.

31- वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, जीवेम शरद · शतम् (चिन्तन मनन), पृ०-37

32 उपर्युक्त प्रवास के सस्मरण (वे दिन वे लोग) पृ 6

33- उपर्युक्त, बाबू साहब का हाथी, पृ॰ 73.

34 वर्ष-2, अक-1-2, अप्रैल-मई 1951

35- उपयुक्त

36 उपर्युक्त

37- उपर्युक्त

38- उपर्युक्त

39 वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, कोणार्क (भग्न रागिनी), पृ॰-43

40 (1)- वर्ष-2, अक-1-2, अप्रैल-मई 1951, कविता

(2)- वर्ष-2, अक-3, जून 1951, मेहमान (अँधी गली), पृ॰-64

(3)- वर्ष-2. अक-4, जुलाई 1951, मकान (अँधी गली) पृ॰-81

41- वर्ष-2, अंक-1-2 अप्रैल-मई 1951

42 वर्ष-2, अक-3, जून 1951, पत की नवीन काव्य चेतना, पृ॰-10

43 उपर्युक्त, महाकवि भारवि, पृ॰-3

44 वर्ष-2, अक-3, जून 1951, झौआ क फूल अशोक तरु, पृ॰-28

45 (1) उपर्युक्त, प्रेमचन्द स पूर्व कहानी उपन्यास का इतिवृत्त, पृ॰-48

(2) वर्ष-2, अक-4, जुलाई 1951, प्रेमचन्द से पूर्व कहानी उपन्यास का इतिवृत्त, पृ0-21

46- वर्ष-2, अक-3 जून 1951, लौह लेखक : लौह लेखनी, पृ॰-89

47- वर्ष-2, अंक-4, जुलाई 1951, मृत्यु से पहली भेंट (डायरी के पन्ने), पृ॰-18

48- उपर्युक्त, अकबर का अन्तःपुर, पृ॰-19

49- उपर्युक्त, गढवाली लोकगीत की पृष्ठभूमि, पृ॰-65.

50- (1)- वर्ष-11, अक-7, अक्टूबर 1960, श्रीमद्गीता के कुछ गूढ स्थल, पृ॰-30

(2)- वर्ष-11, अक-9, दिसम्बर 1960, जन्मान्तर (चिन्तन मनन) पृ॰-35

(3)- वर्ष-11, अंक-10, जनवरी 1961, कर्मवाद और पुरूषार्थ, पृ॰-37

(4)- वर्ष-11, अक-11, फरवरी 1961, कर्मवाद और पुरूषार्थ, पृ॰-41.

51- वर्ष-12, अक-11, फरवरी 1962, आरा माडा गुफा (भ्रमण), पृ॰-64.

[illegible]

53- वर्ष [illegible] अंक [illegible] [illegible]
[illegible]

54- उपर्युक्त, [illegible] [illegible]

55- वर्ष-2, अंक 3, जून 1951 [illegible]

56- प्रवेशांक, आशीर्वाद, पृ. [illegible]

57- वर्ष-1, अंक-2, मई 1950, भारतीय गणराज्य का परम लक्ष्य, पृ०-85.

58- वर्ष-2, अंक-3, जून 1951, हिन्दी साहित्य का आदिकवि पृ. 32

59- वर्ष-2, अंक-4, जुलाई 1951, संतों की सहज साधना पृ. 71

60- वर्ष-11, अंक-3, जून 1960, सुमित्रानन्दन पंत, पृ०-13

61- वर्ष-11, अंक-5, अगस्त 1960, चमकते पत्थर (एकांकी), पृ -12.

62- (1)- उपर्युक्त, क्रोचे का अभिव्यंजनावाद और सहजानुभूति, पृ०-29.

(2)- वर्ष-11, अंक-6, सितम्बर 1960 मेघलाहून (कविता), पृ०-54.

(3)- वर्ष-11, अंक-7, अक्टूबर 1960, पूरब का पाहुन (कविता) पृ०-54.

(4)- वर्ष-11, अंक-11, फरवरी 1961, क्रोचे का कला दर्शन, पृ०-2.

63- वर्ष-2, अंक-3, जून 1951, सीताजी के अभिज्ञान (लोकगीत) पृ०-40.

64- वर्ष-11, अंक-3, जून 1960, जिनकी अब स्मृति मात्र शेष है, पृ०-15.

65- वर्ष-11, अंक-4, जुलाई 1960, 1965 के बाद (हिन्दी के वास्तविक रूप से राष्ट्रभाषा बनने की पूर्व कल्पना), पृ०-27

66- वर्ष-11, अंक-6, सितम्बर 1960, रस की चासनी, पृ०-14.

67- वर्ष-11, अंक-8, नम्वबर 1960, भाषा और साहित्य, पृ०-74

68- वर्ष-11, अंक-9, दिसम्बर 1960, गीत पृ०-2.

69- (1)- वर्ष-11, अंक-6, सितम्बर 1960, नवजागरण के वेतालिक हरिश्चन्द्र, पृ०-33.

(2)- वर्ष-11, अंक-10, जनवरी 1961 कल्याणी का पत्र प्रसाद जी के नाम पृ० 61

70 वर्ष अक 3 जून 960 पृ. 78

71- (1)- वर्ष-11, अक-3 जून 1960 नये प्रकाशन, पृ०-93

(2)- वर्ष-11, अक-4, जुलाई 1960, आषाढस्य प्रथम दिवसे (कविता), पृ०-69

(3)- वर्ष-11, अक-5, अगस्त 1960, प्रथम दिवस श्रावण का (वर्षा मगल), पृ०-77

(4) वर्ष-11, अक-8, नवम्बर 1960, आरती और तारों की झुरमुट (कविता) पृ०-26

(5)- वर्ष-11, अक-10, जनवरी 1961, स्वप्न-पराग झरे (कविता) पृ०-51.

72- वर्ष-11, अक-6, सितम्बर 1960, प० गिरिजा दत्त शुक्ल गिरीश (हम इनसे मिले थे), पृ०-47

73- वर्ष-11, अंक-7, अक्टूबर 1960, तरुवर मत कहना, पृ०-53

74- (1)- उपर्युक्त, ज्योति रेखा (एकाकी), पृ०-67.

(2)- वर्ष-11, अंक-3, जून 1960, मानवतावादी श्री विष्णु प्रभाकर जी का उपन्यास साहित्य, पृ०-31

(3)- वर्ष-11, अंक-9, दिसम्बर 1960, बुद्धं शरणं गच्छामि (एकाकी), पृ०-52.

75- वर्ष-2, अक-4, जुलाई 1951, गीत, पृ०-54.

76- वर्ष-11 अक-10, जनवरी 1961, खिलौना (कहानी), पृ०-88

77- वर्ष-11, अंक-11, फरवरी 1961, प्रणय-रात्रि (कहानी), पृ०-91

78- उपर्युक्त, कामायनी और ऋतुम्भरा (समीक्षा), पृ०-60

79- (1)- वर्ष-11, अक-10, जनवरी 1961, स्वप्न (कविता), पृ०-62.

(2)- वर्ष-11, अक-12, मार्च 1961, होली (कविता), पृ०-59.

(3)- वर्ष-11, अंक-3, जून 1960, दुनिया क्या है? नाटकशाला (कविता), पृ०-92.

80- वर्ष-12, अंक-12, मार्च 1962, गीत, पृ०-60.

81- (1)- उपर्युक्त, भग्नशिव मन्दिर, पृ०-54

(2)- वर्ष-11, अंक-9, दिसम्बर 1960, ज्योति भरो हे! (कविता), पृ०-48

(3)- वर्ष-11, अंक-11, फरवरी 1961, आत्मनिवेदन (कविता), पृ०-55.

(4) वर्ष [illegible] कविता [illegible] [illegible],
पृ. 53

82 (1) वर्ष 11 अंक [illegible] [illegible] [illegible]
(2) वर्ष 12 अंक 12, मार्च 196[illegible] [illegible] की [illegible]कविता।
पृ. 53

83- वर्ष-12 अंक 11, फरवरी 1962 [illegible] (गीत) पृ. 50

84 उपर्युक्त, [illegible] (गीत) पृ. 55

85- (1) वर्ष-11 अंक 8 दिसम्बर 1960 [illegible] (कविता),
पृ.-31
(2) वर्ष-11, अंक 11, फरवरी 1961 [illegible] (कविता)
पृ0-52.

86- वर्ष 11 अंक 10, जनवरी 1961, पृ.-90

87- वर्ष-11, अंक-4, जुलाई 1960, पृ.-19

88- त्रैमासिक, प्रकाशन स्थल-दुमका, वर्ष 1949

89- मासिक प्र. स्थल धनबाद वर्ष 1950

90 मासिक, प्र. स्थल रांची, वर्ष 1951

91- मासिक, प्रकाशन स्थल चाईबासा, वर्ष 195[illegible]

92- मासिक, प्रकाशन स्थल पटना, वर्ष 1952 सम्पादक - डा० लक्ष्मी नारायण सुधांशु,

93- पाक्षिक, प्रकाशन स्थल-पुर्णिया, वर्ष 1952

94- मई 195[illegible] ई., शिवपूजन रचनावली, भाग-4, पृ.-290-291.

95- साप्ताहिक पत्र के रूप में इसका प्रथम प्रकाशन 1938 ई० में पटना से हुआ।

96- मासिक 'पाटल', अगस्त 1954 ई-

97- अर्द्धवार्षिक प्रकाशन वर्ष-1954, प्रकाशन स्थल-बाढ़, सं.-बालेश्वर शर्मा

98- मासिक, प्रकाशन वर्ष- फरवरी 1955 पटना, स.-हरेन्द्रदेव नारायण, दिनेश प्रसाद सिंह

99- 1963 ई० में इसका प्रकाशन मुजफ्फरपुर से होने लगा।



5

'बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का वर्तमान काल'
(1960–1997 ई०)

आजादी के जिस प्रेम पर आसक्त होकर हम दीवाना हुए थे, वे समय के आईने में खोटे साबित हुए। मुक्तिबोध को जिन फासिस्ट शक्तियों का भय था, वे खुलकर सामने आने लगे। रोटी, कपड़ा और आवास की समस्या ज्यों की त्यों बनी रही, साथ ही असुरक्षा के साम्राज्य विस्तार में वृद्धि हुई। ईमानदारी और नैतिकता का स्थान बेईमानी और धोखाधड़ी ने ले लिया। राजनीतिक एव सामाजिक नेतृत्व की अदूरदर्शिता और पश्चिम की चमक-दमक के प्रभाव ने हमें संभलने से वचित रखा। अगर विकास हुआ तो निहित स्वार्थी तत्वों का। कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका इनके हाथों की कठपुतली बन गई। शिक्षा, कला-संस्कृति, समाज, अर्थ, रोजगार या यूँ कहें कि जीवन के हर क्षेत्र पर इनका हस्तक्षेप बढ़ता गया।

परिणामत: निरंतर एक उत्तेजित, हिंसक और अमानवीय समाज की रचना होने लगी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के एक दशक में ही जनाकांक्षाओं के विरुद्ध सत्ताशाही ने जो साजिश की, उससे एक संघर्षशील पीढी का जन्म हुआ। इसने आजादी के सपनों को चकनाचूर होते देखा। नयी पीढ़ी को नए सिरे से संघर्ष के लिए स्वयं को तैयार करने के अलावा कोई चारा

नहीं था। इस पीढ़ी ने नए मानसिक धरातल पर फिर से कुछ गढ़न-सृजन का विकल्प चुना।

हिन्दी साहित्य में सन् साठ से नवलेखन का युग आरंभ होता है। यही उत्तर आधुनिकता बोध की शुरुआत का समय है। साठ के बाद साहित्य का परिवेश बदलता है, उसकी शैली बदलती है और उसका कथ्य भी नये रूप में सामने आता है। 1960 के बाद की रचनाशीलता का मूल्यांकन करते समय इस पीढ़ी की मानसिक स्थितियां, पूर्व पीढ़ी से प्राप्त निराशा और 'शून्य' से स्वयं को आरंभ करने की विवशता पर ध्यान देना आवश्यक है।

इस काल की साहित्यिक पत्रकारिता के विश्लेषण के दौरान यह सहज देखा जा सकता है कि जहां सीमित संख्या में पुराने लेखक, पुरानी पत्रिकाएं भी अपनी सक्रियता बनाने में सफल रहीं, वहीं बहुत बडी संख्या में नयी पीढी का साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में आगमन हुआ। 1960 से लेकर इस शताब्दी के अन्त के वर्षों तक ध्यानपूर्वक देखा जाय तो मालूम होगा कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में शायद ही कोई दूसरा काल हो, जब इतनी सशक्त, बहुरंगी, विचारोत्तेजक और संख्यात्मक दृष्टि से भी अधिक सबल कोई दूसरी पीढी सामने आई हो। जितनी बडी सख्या में इस कालखण्ड में पत्रिकाएं प्रकाशित हुई, वह भी एक रिकार्ड है। इस कालखण्ड में प्रकाशित पत्रिकाओं का विवरण निम्नलिखित है।

1961 ई० में राष्ट्रभाषा परिषद्, बिहार द्वारा 'परिषद् पत्रिका' नाम से एक त्रैमासिक शोध-पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। 'परिषद् पत्रिका' ने हिन्दी शोध के क्षेत्र में अपना एतिहासिक योगदान दिया। प्राचीन साहित्य के अनुशीलन और अनुसंधान के द्वारा इसने न केवल हिन्दी शोध को विकसित किया बल्कि उसे वैज्ञानिक दृष्टि भी दी। अप्रैल 1961 ई० में जब इसका प्रवेशाक प्रकाशित हुआ तो इसके सपादक थे - *डॉ० भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव'* और सहायक सपादक थे - *श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'* एवं *श्री रंजन सूरिदेव*। इसके प्रवेशांक की विषय-सूची निम्नलिखित है -

1- सम्पादकीय

हमारा उद्देश्य और आदर्श, अभिनन्दन और अभिवादन, 'जयन्ति ते सुकृतिन', मन्दिर का स्वर्णकलश, राष्ट्र का एक प्रकाश स्तम्भ, तात्विक शोध की समस्याएं

2 निबन्ध

शब्द-तत्व पर भारतीय दृष्टिकोण	म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
तुलसी प्रयुक्त क्रियाएं	आचार्य शिवपूजन सहाय
गद्य कवीनां निकष वदन्ति	डॉ० राम अवध द्विवेदी
मही माता	डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल
'कृत' - संवत के उद्भव का अनुसन्धान	पद्मभूषण प० सूर्यनारायण व्यास
मधुरोपासना का रहस्य	पं० परशुराम चतर्वेदी
मालवी - भाषा और साहित्य	डॉ० श्याम परमार
अवधी - भाषा के अज्ञात कवि :	लालचदास, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा और श्री रामनारायण शास्त्री
हिन्दी - वर्त्तनी की एकरूपता	श्री सियाराम तिवारी
भारतीय हिन्दी - परिषद (आनन्द-अधिवेशन) द्वारा वर्त्तनी की एकरूपता के लिये प्रस्तावित नियमों का प्रारूप	
लोकगीतों में समान भावधारा	श्रीधर मिश्र
मधु-संचय : प्राचीन गोष्ठियों के रूप	श्री नर्मदेश्वर चतुर्वदी
आलोचना: स्वरूप और प्रकार	डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत

3- पुस्तक समीक्षा

श्री आनन्द स्वामी दत्तात्रेय - कार्तिकेय पाटणकर

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति (म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी)

सन्तमत का सरभग - सम्प्रदाय (स० डॉ० धमेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री)

भारतीय-प्रतीक-विद्या (डॉ० जनार्दन मिश्र)

सातवें दशक के आरंभ में बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता अनेक प्रवृत्तियों में विभाजित होकर विकसित हुई। 1960 ई० में 'पाटलिपुत्र' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन *श्री आर० पी० सिन्हा* के संपादन में आरभ हुआ। पटना से प्रकाशित होनेवाली इस मासिक पत्रिका ने अपना साहित्यिक स्वरूप बनाये रखा। इस नाम की पत्रिका 1914 ई० में भी पटना से प्रकाशित हो चुकी है।

फरवरी 1960 ई॰ में भागलपुर से 'प्राच्य भारती' नामक मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित हुई। इसका सम्पादन *आनन्द शंकर माधवन* ने किया। यह एक लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका थी और भागलपुर में साहित्यिक परिवेश के निर्माण में इसकी मुख्य भूमिका रही है। भागलपुर से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में *डॉ॰ बेचन* द्वारा सम्पादित 'शताब्दी संवाद' उल्लेखनीय है। इसका पहला अंक जनवरी 1970 में प्रकाशित हुआ था। इस मासिक साहित्यिक पत्रिका ने एक ओर साहित्य की नई पौध को अभिसिंचित किया वहीं दूसरी ओर अनेक दुर्लभ एवं उपयोगी सामग्रियों का प्रकाशन भी किया। अप्रैल 1974 में प्रकाशित इसका 'स्मृति विशेषांक' काफी लोकप्रिय हुआ।

1961 ई॰ में किरण मंडल, हाजीपुर के तत्वावधान में 'रेखाएँ' नामक गोष्ठी चिंतन पत्रिका आरंभ हुई। सोलह पृष्ठों की इस पत्रिका का सम्पादन *उमाकान्त वर्मा* और *महावीर प्रसाद शर्मा 'विप्लव'* ने किया। इसका प्रवेशांक अक्टूबर 1961 में प्रकाशित हुआ और इसमें 11 कवियों की कविताएं थीं। इसके प्रवेशांक की विषय-सूची द्रष्टव्य है-

गीत	दामोदर पाठक
मैं तो सन्नाटों में भी स्वर भरता ही जाता हू	महावीर प्रसाद शर्मा विप्लव
गीत-गाथा	उमाकान्त वर्मा
गीत	पारसनाथ सिंह
चोरकिरण	श्री सुमन
गज़ल	कमर समस्तीपुरी
आँखों के सावन	रमाकान्त ओझा
गंध की लकीरें : मजबूरी	सिद्धिनाथ
ज्योति-गीत	'नूतन'
फिर सुबह हुई	हरेकृष्ण
शरद सुषमा	राधाकान्त
सम्पादकीय	

1962 के जनवरी माह से मुजफ्फरपुर में 'दृष्टि' नामक पत्रिका आरम्भ हुई। इसका सम्पादन *कृष्ण मोहन मधुकर* ने किया। यह पत्रिका

भी साहित्यिक पत्रिका थी और मुजफ्फरपुर की साहित्यिक प्रगति में अल्प ही सही सहायक भी योगदान रहा।

मुजफ्फरपुर से समय-समय पर साहित्य संकलन भी प्रकाशित हुए हैं। इन साहित्य-संकलनों को साहित्यिक पत्रिका के अन्तर्गत परिगणित किया जा सकता है। ऐसे संकलनों में *सियाराम शरण प्रसाद* द्वारा सम्पादित 'प्रतिनिधि साहित्य' और *राजेन्द्र प्रसाद सिंह* द्वारा सम्पादित 'आधुनिका' महत्वपूर्ण हैं। 'प्रतिनिधि साहित्य' का पहला अंक 1961 में और दूसरा अंक 1962 में प्रकाशित हुआ। पहले अंक में 1960 की प्रतिनिधि रचनाएं संकलित की गईं। इस अंक में वीरेन्द्र कुमार जैन, राजकमल चौधरी, रामसेवक श्रीवास्तव, डॉ॰ देवराज, गोपाल भागलपुरी, डॉ॰ महेन्द्र भटनागर, अमृता भारती, कामेश्वर शरण, रामदरस मिश्र, रामधारी सिंह दिनकर, जगदीश गुप्त आदि की कविताएं, आरसी प्रसाद सिंह, वीरेन्द्र मिश्र, रामअवतार त्यागी, ओम प्रभाकर, माखन लाल चतुर्वेदी आदि के गीत, विष्णु प्रभाकर का एकांकी तथा शशिप्रभा शास्त्री, रमेश बक्षी, मधुकर गंगाधर, शिवप्रसाद सिंह आदि की कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इस संकलन का प्रकाशन कला भारती, मुजफ्फरपुर द्वारा हुआ था। 'आधुनिका' 1967 में प्रकाशित हुआ। पहला संकलन राजकमल चौधरी पर केन्द्रित था, किन्तु इसका एक अंक ही प्रकाशित हो सका।

1965 में, मुजफ्फरपुर से ही *राजेन्द्र प्रसाद सिंह* के सम्पादन में 'अभिमंच' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। इस पत्रिका के चार अंक ही प्रकाशित हो सके। 1972 में मुजफ्फरपुर से 'आईना' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। पहले यह साप्ताहिक-पत्र था और इसके सम्पादक *कन्हैयाशरण* थे। बाद में यह त्रैमासिक हुआ और 1986 तक प्रकशित होता रहा। त्रैमासिक 'आईना' का सम्पादन *राजेन्द्र प्रसाद सिंह* ने किया। मुजफ्फरपुर की साहित्यिक पत्रिकाओं में *रामप्रताप नीरज* द्वारा सम्पादित 'प्रणेता परिवेश' का नाम लिया जा सकता है। आठवें दशक के अन्त में प्रकाशित इस पत्रिका ने नये रचनाकारों को एक सार्थक मंच दिया।

आजादी के बाद चम्पारन से प्रकाशित होनेवाली साहित्यिक पत्रिकाओं में 'सरिता' (1947), 'नन्दन' (1948) 'भारतेन्दु' (1962), 'अर्घ्य' (1961), 'परिकल्पना' (1969), 'आसावरी' (1976), 'सहित्यकेतु' (1981), 'कविताएं' (1984), और 'प्रारूप' (1984) महत्वपूर्ण है। 'सरिता' और 'नन्दन' प्रसिद्ध साहित्यकार *ब्रजकिशोर नारायण* द्वारा

सम्पादित साहित्य सकलन है इन दोना का प्रकाशन [illegible] मे हुआ था 1962 में भारतेन्दु का पकाशन हास्य व्यग्यकार *श्री बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव* ने मोतिहारी म किया था। 1961 में 'अर्चना' पत्रिका *ईश्वरी प्रसाद गुप्त* के सम्पादन में मोतिहारी से प्रकाशित हुई यह त्रैमासिक पत्रिका थी और इसके कुछ ही अक प्रकाशित हो सके। इसका सम्पादन अक काफी महत्त्वपूर्ण माना गया। 'परिकल्पना' वाम साहित्य के दशरवीं लेखक *विष्णुकान्त पाण्डेय* के सम्पादन में मोतिहारी से प्रकाशित हुई। अपनी साहित्यिक सामग्री के कारण इस पत्रिका का विशेष महत्त्व है। 1976 में बेतिया से 'आसावरी' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका सम्पादन *डॉ० बलराम मिश्र* ने किया। इस पत्रिका के तीन अंक ही निकल सके। 'कविताएं' फोल्डर पत्रिका थी और इसका सम्पादन युवा कवि *डॉ० निखिलेश्वर प्रसाद वर्मा* ने किया था। इस पत्रिका के चार अंक प्रकाशित हुए। *अनीश* और *सफदर इमाम कादरी* के सम्पादन में निकलनेवाले 'प्रारूप' के भी कुछ ही अक प्रकाशित हो सके।

1967 ई० में राजनेता साहित्यकार *शकर दयाल सिंह* ने पटना से 'मुक्तकंठ' नामक एक मासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। 'मुक्तकण्ठ' ने लगभग दो दशक तक बिहार की हिन्दी रचनाधर्मिता को प्रेरित किया और अनेक नये लोगों को साहित्य जगत में उपस्थित कराने का कार्य किया। 'मुक्तकण्ठ' सुरुचिपूर्ण साहित्य सामग्री के सयोजन के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है। इस पत्रिका के कई विशेषांक प्रकाशित हुए। ऐसे विशेषांकों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी विशेषाक (सितबर, अक्टूबर, नवम्बर, 1979), फादर कामिल बुल्के अक (नवम्बर, दिसम्बर, 1982) उल्लेखनीय है। 'मुक्तकण्ठ' ने अनेक पुरानी रचनाओं का पुनर्प्रकाशन किया। इतना ही नहीं प्रसिद्ध साहित्यकारों की 'पटना यात्रा' के वृत्तांत को छाप कर इसने पटना की साहित्यिक सक्रियता भी प्रमाणित की। लगभग बीस वर्षो तक अपनी सार्थक भूमिका के निर्वहन के बाद इस पत्रिका के प्रकाशन का स्थगित हो जाना दुख का विषय है।

बिहार की साहित्यिक हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में 'समीक्षा' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना है। पुस्तक–समीक्षा के क्षेत्र में इस पत्रिका ने एक क्रान्ति ही की है। प्रारम्भ में इसका सम्पादन एक सम्पादन मण्डल करता था जिसमें *आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, वचनदेव कुमार, रामचन्द्र प्रसाद,* और *गोपाल राय* (सयोजक) थे। इसका पहला अंक, अप्रैल 1967

ई० में प्रकाशित हुआ। हिन्दी की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों से पाठकों को परिचित कराना और हिन्दी पाठकों की सख्या में वृद्धि करना इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य था। 30 वर्षो से यह पत्रिका अनवरत प्रकाशित हो रही है। फिलहाल इसका सम्पादन *डॉ० गोपालराय* और उनके पुत्र *डॉ० सत्यकाम* सभाल रहे है। 'समीक्षा' ने प्रायः हिन्दी की सारी प्रमुख पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत की है। सामान्य पुस्तकों की इसमें सूचना भर दी जाती रही है। इसके एक अंक के सम्बन्ध में निम्नलिखित ब्योरा दिया जाता है-

क्र.सं.	पुस्तक	विधा	लेखक	समीक्षक
1.	रागदरबारी	उपन्यास	श्रीलाल शुक्ल,	गोपालराय.
2.	चिड़ियाघर	उपन्यास	गिरिराज किशोर	महेन्द्र भटनागर.
3.	प्रथम फाल्गुन	उपन्यास	नरेश मेहता	गोपाल राय.
4.	धूपछाँह	उपन्यास	गुरुदत्त	रामदीन मिश्र.
5.	वाममार्ग	उपन्यास	गुरुदत्त	रमाकान्त श्रीवास्तव
6.	कलाकार	उपन्यास	नानक सिंह	कुलानन्द मिश्र
7	पीया चाहे प्रेम रस	उपन्यास	रामानन्द शर्मा	सतलाल
8	नारी और नियति	उपन्यास	गजेन्द्र कुमार मिश्र	रामदीन मिश्र.
9.	जलावतन	उपन्यास	अमृता प्रीतम	स्वर्ण किरण
10.	घुन लगी बस्तियाँ	उपन्यास	जयवन्त दलवी	आनन्द नारायण शर्मा
11.	घिराव	कहानी	महीप सिह	प्रणव कुमार वन्धोपाध्याय.
12.	अथवा	कहानी	प्रणव कुमार वद्योपाध्याय	स्वर्ण किरण
13.	गर्म गोश्त बर्फीली तासीर	कहानी	मधुकर गगाधर	अंजनी कुमार
14.	एक साँवली लड़की	कहानी	अमृत राय	अनिल सिन्हा
15.	सुपर बाजार	कविता	भक्त विनायक	कुलानन्द मिश्र
16.	अक्षरों का विद्रोह	कविता	रामदेव आचार्य	श्यामसुन्दर घोष
17.	विकल्प	कविता	विनोदचद्र पाण्डेय	उमेशचन्द्र मिश्र शिव
18.	खंड खड पाखंड पर्व	कविता	मणि मधुकर	नन्दकिशोर नवल
19.	झेलने के लिए	कविता	राय प्रभाकर प्रसाद	नन्दकिशोर नवल
20.	गांगेय	कविता	अचल	जयमंगल प्रसाद सिंह

2 मृगमुख	नाटक	लक्ष्मीनारायण लाल	माधाता ओझा
[illegible] शतुरमुर्ग	नाटक	ज्ञानदेव अग्निहोत्री	गिरिजा सिंह
23. हितचिन्तक	नाटक	मू. ले. [illegible] अनु. उपेन्द्रनाथ अश्क	[illegible] वर्मा
24. मधुर रस : स्वरूप और विकास	शोध/समीक्षा	रामस्वार्थ चौधरी	भगवती प्रसाद सिंह
25. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला	शोध/समीक्षा	रामेश्वरलाल खंडेवाल,	मान्धाता ओझा
26 हिन्दी के समस्या नाटक	शोध/समीक्षा	विनय कुमार	सिद्धनाथ कुमार
27 महिम भट्ट	शोध/समीक्षा	ब्रजमोहन चतुर्वेदी	काशीनाथ मिश्र
28. नाटक और यथार्थवाद	शोध/समीक्षा	कमलिनी मेहता	रामचन्द्र प्रसाद
29. कविता के नये प्रतिमान	शोध/समीक्षा	नामवर सिंह	नन्दकिशोर नवल
30 अकविता और कला संदर्भ	शोध/समीक्षा	श्याम परमार	शिवनन्दन सिंह
31 हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास	शोध/समीक्षा	सं. परशुराम चतुर्वेदी	सकलदेव शर्मा
32. हिन्दी उपन्यास (चतुर्थ भाग), एक अन्तर्यात्रा	शोध/समीक्षा	रामदरस मिश्र	मधुरेश
33 नयी कविता का परिप्रेक्ष्य	शोध/समीक्षा	परमानन्द श्रीवास्तव	नन्दकिशोर नवल
34 साहित्यमुखी	शोध/समीक्षा	रामधारी सिंह दिनकर,	जयमंगल प्र. सिंह
35 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या	शोध/समीक्षा	रामस्वरूप चतुर्वेदी	कुमार विमल
36. कला विवेचन	शोध/समीक्षा	कु. विमल	गोपाल राय

इनके अतिरिक्त 22 दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तकों पर संक्षिप्त समीक्षात्मक सूचनाएं दे कर पत्रिका को अधिक उपयोगी बनाया गया है।

1967 में *श्री ब्रजकिशोर नारायण* और *शंकर दयाल सिंह* के सम्पादन में पटना से 'पारिजात' नामक पत्रिका प्रकाशित हुई। यह पत्रिका मूलतः शहीदों की स्मृति में प्रकाशित हुई थी और इसका एक ही अंक प्रकाशित हो सका। 1969 में *ऋषिकेश* के सम्पादन में 'कविता संगम' नामक एक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके कुछ ही

पृक प्रकाशित हो सके इसी वर्ष नन्द नटवर ने बोधि नामक पत्रिका का सम्पादन किया उसके दो ही अंक प्रकाशित हो सके 19 2 में *राजा प्रताप सिंह और पुरण पण्डरा* पटना से कथ्य' नामक त्रैमासिक पत्रिका आरम्भ की। यह पत्रिका भी अल्पायु ही हुई। 1971 में मुंगेर से '*अन्तराल*' नामक एक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक *नचिकेता* थे। इस पत्रिका के कुछ अंक पटना से भी प्रकाशित हुए।

पटना से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में 'विचेतना' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका सम्पादन नकेनवादी कवियों में से दो *केसरी कुमार* और *नरेश* ने किया। बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वर्तमान प्रधानमंत्री *केदारनाथ कलाधर* भी इसके सम्पादन से सम्बद्ध थे। इस पत्रिका ने उत्कृष्ट साहित्य सामग्री हिन्दी पाठकों को उपलब्ध करायी। पटना से निकलनेवाली अल्पजीवी साहित्यिक पत्रिकाओं में 'संघर्ष' (1974, सं०-*कर्मेन्दु शिशिर*), 'गोधूली' (1975, सं०-*ऋषिकेश सुलभ*), 'कादम्बरी' (1978, सं०-*सिद्धेश्वर*), 'पल्लवों' (1978, सं० *प्रकाश*), 'अवसर' (1979, सं० *सिद्धेश्वर*), 'कथादिशा' (1979, सं.-*प्रभात कुमार चौधरी, गणेश गुंजन*), 'मागधी' (1979, सं.- *योगेश्वर प्र० सिंह योगेश*), 'प्रस्ताव' (1981, सं *हरिहर प्रसाद*), 'सांस्कृतिकी' (1981, *मुकेश प्रत्यूष*), 'कथान्तर' (1982, सं.- *राजा प्रताप सिंह*), 'संस्कृति' (1982, सं.- *महेश्वर, सुरेन्द्र स्निग्ध*) 'अलाव' (1984, सं. *नचिकेता, गोपेश परीक्षित अब गोपेश्वर सिंह*), 'लकीरें' (1984, *नरेन्द्र प्र० नवीन, कासिम खुर्शीद*), 'दिशा' (1986, सं.- *सतीश राज पुष्करणा*), 'नाद्‌यानुभूति' (1989, सं.- *अमरेन्द्र कुमार*), 'सृजन' (1991, सं.- *विनोद प्र० विप्र*), 'फगुनाहट' (1993, सं.- *अदालत सिंह अकेला*, सीतामढ़ी)।

राँची से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में 'अभिज्ञान' का विशेष महत्त्व है। इस पत्रिका का प्रकाशन 1969 में हुआ और *काशीनाथ* ने इसका सम्पादन किया। यह आधुनिक संचेतना की अनियतकालीन साहित्यिक पत्रिका थी। रांची से ही प्रकाशित होनेवाली साहित्यिक पत्रिका 'अनुवाक्' का विशेष साहित्यिक मूल्य है। इस शोध-पत्रिका का प्रकाशन राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने 1977 में किया था। इसका सम्पादन तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष *डॉ० वचनदेव कुमार* ने किया। 'अभिकल्प' *शम्भु बादल* के सम्पादन में राँची से प्रकाशित होनवाली दूसरी महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी। बावन पृष्ठ की इस अनियतकालीन पत्रिका

के तीन ही अंक प्रकाशित हो सके। 1973 ई. में व्यंग्यकार *बालेन्दु शेखर तिवारी* ने पटना से 'अभीक' नामक हास्य व्यंग्य एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके मात्र पांच अंक ही प्रकाशित हो सके।

1972 में आरा से प्रकाशित 'कथा कहानी' एक महत्वपूर्ण कथा पत्रिका के रूप में मान्य हुई। छियानवे पृष्ठ की इस पत्रिका का सम्पादन कथाकार *मधुकर सिंह* ने किया।

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार और पाण्डित्य की गरिमा से मण्डित *आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री* ने हिन्दी साहित्य की तरह हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को भी अपना समर्थ रचनात्मक संस्पर्श दिया है। 'राका' और 'बेला' उनकी मेधा, रचनाधर्मिता और रचनात्मक प्रेरणा का जीवंत प्रमाण रही है। आचार्य शिवपूजन सहाय से प्रेरित होकर उन्होंने पहले 'राका' का सम्पादन किया जिसके पहले अंक में निराला और हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाएं प्रकाशित हुईं। 'राका' के बन्द हो जाने के बाद आचार्य शास्त्री ने निराला के जन्मदिन के अवसर पर मुजफ्फरपुर से 1972 में 'बेला' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। 'बेला' का प्रथम अंक युवा साहित्यकार मदन कश्यप के सहयोग से प्रकाशित हुआ। प्रथम अंक में निराला के गीत के अतिरिक्त सोम ठाकुर, बुद्धिनाथ मिश्र, मदन कश्यप, पुरूषोत्तम प्रसाद सिंह और ब्रजकिशोर प्रसाद सिंह की रचनाएं प्रकाशित हुईं। इस अंक में निराला की अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाशित करने का प्रयास भी किया गया। बेला के दूसरे अंक की विषय-सूची द्रष्टव्य है-

अनुक्रम

1. गीत	निराला (गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपम:).
2. निराला जयन्ती	वसंत पंचमी पर निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व का धारावाहिक पुनर्मूल्यांकन)
3. निराला की तसवीर	(कविता) भवानी प्रसाद मिश्र
4 अस्तित्ववाद	श्रीकान्त गोविन्द
5. हल्दी-रंगे चावल	माहेश्वर तिवारी
6. अब नहीं होगा	उमाकान्त मालवीय
7 आऊँ माँ?	ललित निबंध

8.	अ.ना.काव्यराम	प्रभात (धारावाहिक)
9	अनकहा निराला	
10	किरणवल्लरी	पुरूषोत्तम प्रसाद सिंह
11	चाँदनी रात	संजय कुमार

बेला के मार्च, अप्रैल 1996 तक एक सौ सैंतीस अंक प्रकाशित हो चुके हैं। बेला के माध्यम से जहाँ एक ओर आचार्य शास्त्री की नई रचनाएं पाठकों के समक्ष आती रहीं वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अनेक नवोदित साहित्यकारों को भी साहित्य में आने का अवसर मिला। बेला ने हिन्दी के प्रमुख रचनाकारों को भी छापा और उनको भी छापा जो अपनी अभिव्यक्ति के लिए बेचैन थे और साहित्य के द्वार पर दस्तक दे रहे थे।

1975 में रोहतास से *नन्दकिशोर तिवारी* के सम्पादकत्व में 'इयत्ता' नामक साहित्यिक पत्रिका आरम्भ हुई। लगभग तीन वर्षों तक प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका के सम्पादक मंडल में *केसरी कुमार, रामेश्वर सिंह कश्यप* और *जगदीश पाण्डेय* जैसे दिग्गज साहित्यकार थे। बावन पृष्ठों की इस पत्रिका में साहित्य की सारी विधाओं से सम्बद्ध सामग्री रहती थी। इधर 'इयत्ता' का पुनः प्रकाशन आरम्भ हुआ है। भागलपुर से 1978 में *कुमार भागलपुरी* के सम्पादन में 'उल्लू' नामक एक अर्द्धवार्षिक पत्रिका प्रकाशित हुई। बत्तीस पृष्ठों की यह पत्रिका हास्य-व्यंग्य प्रधान पत्रिका थी।

1978 में पटना से बिहार प्रगतिशील लेखक संघ के तत्वावधान में 'उत्तरशती' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। प्रगतिशील आलोचक और सम्प्रति अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव *डॉ॰ खगेन्द्र ठाकुर* ने इसका सम्पादन किया। संस्थागत पत्रिका होने के बावजूद 'उत्तरशती' का प्रकाशन नियमित नहीं हो सका। फिर भी अपनी साधनहीनता के बावजूद इस पत्रिका ने प्रगतिशील साहित्य के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस पत्रिका ने विश्व-साहित्य से हिन्दी पाठकों को परिचित कराया एवं अनेक लुप्त सामग्रियों की खोज की। इसके नवांक दो (जुलाई-सितम्बर, 1984) में प्रेमचन्द की दो असंकलित कहानियाँ प्रकाशित हुईं। 'उत्तरशती' का आचार्य शुक्ल विशेषांक (नवांक - 3, 4) अपनी महत्त्वपूर्ण साहित्य सामग्री के लिए

[illegible] इस अंक की विषय सूची से इसकी समग्रता का [illegible]

संपादकीय श्रद्धा निवेदन	खगेन्द्र ठाकुर
कविता क्या है	केदारनाथ सिंह
आचार्य शुक्ल और हिन्दी नवजागरण	नामवर सिंह
आचार्य शुक्ल की विश्वदृष्टि	नंदकिशोर नवल
भारतीय काव्य चिंतन की परम्परा और आचार्य शुक्ल	डॉ॰ खगेन्द्र ठाकुर
काव्य-आचार्य शुक्ल की अवधारणाएं	कमला प्रसाद
आचार्य शुक्ल का आलोचकनात्मक संघर्ष	विश्वनाथ त्रिपाठी
आचार्य शुक्ल और आधुनिक हिन्दी साहित्य	धनंजय वर्मा
आचार्य शुक्ल की साहित्येतिहास-दृष्टि	मैनेजर पाण्डेय
आचार्य शुक्ल की साहित्येतिहास दृष्टि : पुनर्विचार	गोपाल
आचार्य शुक्ल का साहित्येतिहास-दर्शन	नामवर सिंह
रपट : आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर	अपूर्वानंद
आचार्य शुक्ल की आलोचना का केन्द्रवर्ती शब्द : 'लोकधर्म' या 'लोक'	बच्चन सिंह
रहस्यवाद, आचार्य शुक्ल और छायावादी कवि	तरुण कुमार
आचार्य शुक्ल और डॉ॰ रामविलास शर्मा	गीता वर्मा
आचार्य शुक्ल की नाट्य दृष्टि	अविनाश चन्द्र
आचार्य शुक्ल की काव्य-साधना	आनंदनारायण शर्मा

1980 में नवादा से *डॉ॰ दिवाकर* के सम्पादन में 'दृष्टि' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। 'दृष्टि' ने अब तक कई महत्वपूर्ण विशेषांक प्रकाशित किये है। इन विशेषांकों में 'नेपाली विशेषांक', शिवपूजन विशेषांक, राहुल विशेषांक उल्लेखनीय है। 1981 में पटना से *महेश्वर* के प्रधान सम्पादकत्व में 'जनमत' नामक द्वैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। *रामजी राय* एवं *इरफान* ने इसके सम्पादन का दायित्व संभाला। वस्तुतः यह सांस्कृतिक वैचारिक हस्तक्षेप की पत्रिका है और इसके अनेक महत्वपूर्ण विशेषाक प्रकाशित हुए है समय समय पर महत्वपर्ण रचनाकारों ने इसमें अतिथि का



दायित्व सभाला है *वामिक जौनपुरी* पर केन्द्रित इसका अक (मार्च अप्रैल 1992) विशेष उल्लेखनीय है। इस अक में इनकलाबी शायर वामिक के कृतित्व एव व्यक्तित्व का हिन्दी पाठकों के समक्ष रेखाकित किया गया है।

नवें दशक के आरम्भ में मुजफ्फरपुर से 'दर्शन मन्थन' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इस पत्रिका का सम्पादन *राधेय अज्ञानी* ने किया। इसके कई अंक जानकी वल्लभ शास्त्री पर केन्द्रित थे। फिलहाल इसका प्रकाशन स्थगित है।

1983 में मुजफ्फरपुर से *सुनीति मिश्र* ने 'नया आलोचक' नामक साहित्यिक त्रैमासिकी का प्रकाशन आरम्भ किया। जिसका सम्पादन कवि, आलोचक *महेन्द्र मधुकर* ने किया। 'नया आलोचक' का संकल्प प्रस्तुत करते हुए सम्पादक ने घोषणा की-

1- प्राचीन एव नवीन साहित्य तथा साहित्य-शास्त्र का नयी दृष्टि से पुनराख्यान।

2- सभी भारतीय भाषाओं की साहित्यिक परंपरा, प्रगति तथा प्रयोगों को हिन्दी के माध्यम से परस्पर निकट लाने का प्रयास।

3- देशांतरीय साहित्यिक गतिविधि मे भारतीय पाठक की अवगति।

4- साहित्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, शैलीविज्ञान आदि के क्षेत्र में आधुनिक चिन्तन का संधान और परीक्षण।

5- विशिष्ट रचनाओं की व्यावहारिक आलोचना।

6- साहित्य की विभिन्न विधाओं के नूतन प्रकाशनों की समीक्षा।

7- देश के लब्ध-प्रतिष्ठ रचनाकारों, विद्वानों, चिंतकों के साथ नये लेखकों की कलम से हिन्दी के अध्येताओं की पहचान कराना और इस प्रकार भावी पीढ़ी के निर्माण में योगदान।

8- वाद और गुट से परे साहित्य को साहित्य के रूप में देखने का आग्रह।

9- शास्त्रीय दृष्टि का परिपोषण और उन्नयन।

'शास्त्र-निरपेक्षता प्रकारातर से दिशाहीनता है। दिशाहीन यात्री और शास्त्र-निरपेक्ष अध्येता को श्रम तो होता है पर गंतव्य का बोध नहीं होता। यह ऐसा संकट है जिससे साहित्य को बचाना आवश्यक है। 'नया

आलोचक इसमें का परिचय देगा। नया आलोचक के मुख्य स्तभ होंगे लेख प्रतिवेशी साहित्य ना साहित्य व्यावहारिक आलोचना, समीक्ष्य प्रकाशन, पाठकों की प्रतिक्रियाएं।'

'नया आलोचक' के कुल उन्नीस अंक प्रकाशित हुए। यह मूलतः आलोचना की पत्रिका थी लेकिन यदा-कदा इसने रचनात्मक साहित्य को भी प्रश्रय दिया। इसके प्रवेशांक की विषय-सूची द्रष्टव्य है-

लेख:

क्रोचे का अभिव्यंजनावाद	देवेन्द्रनाथ शर्मा
अभिनव गुप्त सम्मत साधारणी- करण : एक पुनरावलोकन	राममूर्ति त्रिपाठी
शैली विज्ञान के वैदिक आधार	विजय द्विवेदी
नयी आलोचना (अतीत की परंपरा और भविष्य की संभावनाएं)	इन्दिरा जोशी
युगीन मनोविज्ञान और मुक्तिबोध	कृष्ण मुरारि मिश्र
विज्ञान बोध और कविता का रचनात्मक संदर्भ	वीरेन्द्र सिंह
मिथकीय भाषा और कविता का अर्थ-तंत्र	महेन्द्र मधुकर
अज्ञेय की काव्य-रचना में बिम्ब की भूमिका	निर्मला शर्मा

प्रतिवेशी साहित्य:

तेलगु में राधा का विकास	कर्ण० राजशेष गिरिराव

समीक्ष्य प्रकाशन:

यथा प्रस्तावित (गिरिराज किशोर)	रेवती रमण
आग और आँसू (भैरव प्रसाद गुप्त)	रेवती रमण
दूसरी बार (श्रीकान्त वर्मा)	सुनीति मिश्र
नचिकेता (गौरी शंकर कपूर)	सुनीति मिश्र एवं
एक और ग़ज़ल	कृष्णानन्द सिन्हा
नयी आलोचना की मूलभूत मान्यताएं	पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'

अपने पांच वर्षीय जीवन में 'नया आलोचक' ने भारतीय काव्यशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र के कई पहलुओं पर पुनर्विचार किया। पत्रिका के परामर्षक आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के पाश्चात्य काव्य शास्त्र

से सबधित कई लेख इसी पत्रिका में प्रकाशित हुए नया आलोचक का आठवा अक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पर केन्द्रित था और उसमे शुक्ल जी के विविध पक्षों पर अनेक उपयोगी लेख प्रकाशित हुए नया आलोचक का प्रकाशन एकेडमिक दृष्टि से विशेष स्थान रखता है। काफी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। नई कविता पर केन्द्रित इसके चतुर्थ अक में तीसरा सप्तक के कवि मदन वात्स्यायन की कई अप्रकाशित रचनाए पहली बार प्रकाशित हुई। 'नया आलोचक' के प्रकाशन का असमय स्थगन गम्भीर साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त गहरे सन्नाटे को व्यंजित करता है। यह दूसरी बात है कि अपनी सीमा भर इसने इस सन्नाटे को तोड़ने की कोशिश की थी।

1984 में पटना से भारतेन्दु मंच की ओर से 'कबीर' नामक साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ, जिसका सम्पादन प्रखर युवा आलोचक *भृगुनन्दन त्रिपाठी* ने किया। इस लघु पत्रिका ने साहित्य के भीतर मानवीय मूल्यों की तलाश का न केवल रचनात्मक प्रयत्न किया अपितु नई रचनाधर्मिता को एक सार्थक मंच देने की चेष्टा भी की। इसके प्रवेशाक में जहाँ एक ओर रामविलास शर्मा, मैनेजर पाण्डेय, त्रिलोचन शास्त्री, विजयदान देथा जैसे स्थापित आलोचक एवं रचनाकार प्रकाशित हुए वहीं दूसरी ओर हरेकृष्ण झा जैसे नवोदित कवि को भी छपने का अवसर मिला। यह पत्रिका आगे चलकर अनियतकालीन हो गई। किन्तु इसकी स्तरीयता और रचनात्मक प्रतिबद्धता बरकरार रही। पत्रिका ने एक नये साहित्यिक परिवेश के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सिद्ध की। 'कबीर' के चतुर्थ अंक में प्रसिद्ध कथाकार और 'पहल' सम्पादक ज्ञानरंजन की पचासवीं वर्षगाँठ के अवसर पर विशेष सामग्री प्रकाशित की गई।

जून 1985 में युवा कवि *भारत यायावर* ने 'विपक्ष' नामक एक साहित्यिक-पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन आरम्भ किया। हजारीबाग से तथा बाद में बोकारो से प्रकाशित इस पत्रिका ने स्वयं को सामंतवाद-साम्राज्यवाद विरोधी चेतना की साहित्यिक पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया। पत्रिका के प्रवेशांक में जर्मन कविता 'प्रमथ्यु' (योआन वोल्फगांग गेटे) के अतिरिक्त रूसी कविताओं का प्रकाशन हुआ। 'परम्परा' स्तम्भ के अन्तर्गत महावीर प्रसाद द्विवेदी, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, रामविलास शर्मा, नागार्जुन और फणीश्वर नाथ 'रेणु' की रचनाएं प्रकाशित हुई थीं।

तीसरे खण्ड में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का के अवसर पर विशेष रचनाओं का चयन किया गया था। उन पर निराला की कविता और माखनलाल चतुर्वेदी के मन्तव्य का प्रकाशन हुआ और उनकी कई गद्य-पद्य रचनाए प्रकाशित हुई थीं। इस खण्ड में 1949 में शुक्ल जयंती के अवसर पर एक छात्र के रूप में पठित नामवर सिंह का आलेख 'हिन्दी समीक्षा और आचार्य शुक्ल' का प्रकाशन विशेष महत्त्व रखता है। चतुर्थ खण्ड समकालीन लेखन को रेखांकित करता है। इसमें अरुण कमल, स्वप्निल श्रीवास्तव, अरविंद चतुर्वेद, शक्ति चट्टोपाध्याय, शंभु बादल, उमेश्वर दयाल, कामेश दीपक की कविताओं के साथ 'रेणु' की मैथिली कविताए प्रकाशित हुई थीं। हरिहर प्रसाद, अखिलेश, श्याम अविनाश, कृष्ण कल्पित की कहानियाँ और खगेन्द्र ठाकुर का निबंध इस खण्ड को अधिक महत्वपूर्ण बनाते है। अन्त में भवानी प्रसाद मिश्र पर एक संस्मरण भी है।

इस प्रकार 'विपक्ष' के प्रवेशाक ने ही स्वस्थ साहित्यिक पत्रकारिता के प्रति आशान्वित किया। 'विपक्ष' ने कई महत्वपूर्ण विशेषांक भी दिये। जिनमें फणीश्वर नाथ 'रेणु' अंक (जुलाई, 1991), केदारनाथ सिंह पर केन्द्रित अंक (जनवरी, 1990) विशेष उल्लेखनीय हैं।

हजारीबाग से प्रकाशित 'प्रसंग' की भी हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में उल्लेखनीय भूमिका है। इस अनियतकालीन पत्रिका के कई अंक प्रकाशित हो चुके है। इसके सम्पादक *शंभु बादल* स्वयं हिन्दी के एक चर्चित कवि रहे है। उनके पास एक प्रखर रचनात्मक दृष्टि रही है। इस दृष्टि ने 'प्रसग' के अकों को एक नयी अर्थवत्ता दी है। 'प्रसंग' के तीसरे अंक (जनवरी 1985) से युवा कवि एवं कहानीकार *रतन वर्मा* ने भी उप-सम्पादक के रूप में सहयोग दिया। 'प्रसंग' मुख्य रूप से युवा रचनाकारों की प्रतिनिधि पत्रिका बन गई। कविता पर केन्द्रित इसका दूसरा अंक काफी सराहा गया। इस अंक का सम्पादकीय भी कविता में ही लिखा गया था। समकालीन कविता पर डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय का साक्षात्कार इस अंक का मुख्य आकर्षण था। नागार्जुन पर इसमें दो सार्थक निबंध प्रकाशित हुये थे। पहला निबंध विष्णुचन्द्र शर्मा का था जबकि दूसरे निबंध 'प्रगतिशील कविता और नागार्जुन' के लेखक डॉ॰ विजय बहादुर सिंह थे। इसमें हिन्दी कवियों के अतिरिक्त काज़ी नज़रुल इस्लाम, एज़रा पाउण्ड, पॉल एल्युआर, ली तुआंग चेंग, पेत्रस

ल्का, एरिक वोनर्ट, गैज़ुले जैसे महत्वपूर्ण विदेशी कवियो की प्रतिनिधि रचनाएं भी प्रकाशित हुई थीं।

'प्रसंग' के अब तक बहुत अंक प्रकाशित नही हो पाये है फिर भी इस अनियमित पत्रिका ने अनेक नये रचनाकारों को अभिव्यक्ति का एक सार्थक मंच प्रदान किया है, विश्व साहित्य मे हिन्दी पाठकों को परिचित कराया है और एक स्वस्थ रचनात्मक परिवेश का निर्माण भी किया है।

अविनाश चन्द्र के सम्पादन में 1983 से 'नेपथ्य' नामक एक नाट्य पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके दो ही अंक प्रकाशित हो सके। इस पत्रिका ने नाट्य लेखन, प्रदर्शन और नाट्यालोचन के क्षेत्र में एक रचनात्मक आंदोलन का नेतृत्व किया था। यह पत्रिका नाट्य संस्था अनागत (पटना) की पत्रिका थी और रंगकर्म के विकास के लिए इसने सामयिक प्रयत्न किये।

1985 में पटना से 'धारा' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। 'धारा' प्रगतिशीलता के पक्षधर युवा रचनाकारों की लघु पत्रिका थी। इसके सम्पादक मण्डल में प्रगतिशील रचनाकार *जावेद अख्तर खान, अपूर्वानन्द, संजय कुमार* और *पूर्वा भारद्वाज* थे। 'धारा' का एक अंक नागार्जुन पर केन्द्रित था। जिसमें अपूर्वानन्द का एक मात्र लेख 'नागार्जुन की राजनीति' संकलित था। इस लेख में जनकवि नागार्जुन की जमकर आलोचना की गई थी। लेख की भूमिका ख्याति प्राप्त मार्क्सवादी समीक्षक डॉ० नन्दकिशोर नवल ने लिखी थी। यह अंक काफी विवादास्पद हुआ और नागार्जुन के पक्ष को लेकर अनेक लोग सामने आये।

1986 में मुजफ्फरपुर से 'ऋतुगन्ध' नामक द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके पूर्व यह पत्रिका 'किशोर प्रभात' के नाम से छपती थी। 'किशोर प्रभात' का मुजफ्फरपुर अंक अपनी व्यवस्थित साहित्य सामग्री के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया। फिलहाल 'ऋतुगन्ध' का प्रकाशन अनियमित है। इसके लगभग दस अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसका मैथिलीशरण गुप्त विशेषांक महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

1986 में धनबाद से 'कतार' नामक साहित्यिक पत्रिका क प्रकाशन आरम्भ हुआ। *बृज बिहारी शर्मा* और *शेखर* के सम्पादन म प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका ने स्वय को परिवर्तन कामी चेतना व

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में रेखांकित किया इस पत्रिका ने भी साहित्य के माध्यम से एक वैचारिक परिवेश के निर्माण का प्रयत्न किया इसका साम्प्रदायिकता विरोधी विशेषांक (अंक सत्रह) काफी चर्चित हुआ।

मार्च 1986 में राजभाषा विभाग, बिहार सरकार की ओर से *कुणाल कुमार* के सम्पादन में 'राजभाषा' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राज्यकर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिन्दी के प्रति अनुराग उत्पन्न करना था। इसकी प्रतियाँ चुने हुये लोगों को भेजी जाती थीं और इसका वितरण निःशुल्क होता था। इसमें शोधपरक और रचनात्मक साहित्य का प्रकाशन होता था। इस पत्रिका के बाईस अंक प्रकाशित हो चुके हैं।

1988 में पटना से *रामजी मिश्र मनोहर* ने 'अभिव्यक्ति' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया। यह पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका के रूप में सामने आयी। 1986 में पटना से 'शिखा संकेत' नामक एक साहित्यिक पत्रिका शुरू हुई। इसके प्रधान सम्पादक *रामदयाल पाण्डेय* और *सीताराम दीन, रंजन सूरिदेव* थे। बाद में *हृदयनारायण* इसके सम्पादक बने। डालटेनगंज से 1988 में तीस पृष्ठों की 'उदीयमान' पत्रिका प्रकाशित हुई। इस द्वैमासिक पत्रिका का सम्पादन *हरिवंश प्रभात* ने किया था।

जून 1988 में प्रगतिशील लेखक संघ, मुजफ्फरपुर की ओर से 'आवर्त' नामक एक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस पत्रिका का सम्पादन *वीरेश चन्द्र* और *मनोज मेहता* ने किया। इसके प्रवेशांक में खगेन्द्र ठाकुर का विचारोत्तेजक लेख 'सम्प्रदायवाद और लेखकीय स्वतंत्रता' प्रकाशित हुआ। भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध लेखक राधाचरण गोस्वामी पर कर्मेन्दु शिशिर का आलेख इस प्रवेशांक का मुख्य आकर्षण था। 'आवर्त' का कविता विशेषांक (वर्ष-3, अंक-1) हिन्दी की सामयिक कविताओं के संकलन और कविता पर अनेक लेखों के प्रकाशन के कारण महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। 'आवर्त्त' का एक अंक रघुवीर सहाय पर भी केन्द्रित हुआ।

मुजफ्फरपुर से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'अदल-बदल' को भी साहित्यिक पत्रिकाओं में परिगणित किया जा सकता है। सामयिक समस्याओं पर शोधपरक सामग्री के साथ इसमें कहानियों और कविताओं का प्रकाशन भी होता रहा है। छप्पन पृष्ठों की इस पत्रिका का सम्पादन *शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव* करते हैं।

जिन धार्मिक पत्रिकाओं ने अपनी साहित्यिक भूमिका का निर्वहन किया उनमें मोतिहारी से प्रकाशित राम रसायन का महत्त्वपूर्ण स्थान है इस पत्रिका का प्रकाशन 1989 में आरम्भ हुआ। यह अखिल भारतीय हनुमान अराधना मंडल की पत्रिका है और इसका प्रकाशन ग्राम सराठा, मोतिहारी से होता है। तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ आचार्य *रामाश्रय प्रसाद सिंह* ने इसका सम्पादन किया। महावीर मंदिर पटना में प्रकाशित धार्मिक पत्रिका 'धर्मायण' का भी साहित्यिक महत्त्व कम नहीं है। इस पत्रिका ने धर्म को एक आस्था और मूल्य के रूप में रेखांकित किया है। इसमें कविताओं के अतिरिक्त अनेक धार्मिक और साहित्यिक विषयों पर लेख प्रकाशित होते रहे है। 'धर्मायण' का प्रकाशन मई 1990 में आरम्भ हुआ। इस पत्रिका के लगभग चालीस अंक प्रकाशित हो चुके हैं। पत्रिका के सम्पादक *काशीनाथ मिश्र* और सह सम्पादक श्री रंजन सूरिदेव स्वयं भाषा एवं साहित्य के मर्मज्ञ हैं। इनके कुशल सम्पादन में इस पत्रिका ने काफी ख्याति अर्जित की। सम्प्रति श्री मिश्र इसके प्रधान सम्पादक है और उनको परामर्श देने के लिए आचार्यत्रय-*सर्वश्री सीताराम चतुर्वेदी, रामानंद शास्त्री* और *वंशदेव मिश्र* का एक सम्पादन-मंडल भी है।

सासाराम से प्रकाशित अनियतकालीन पत्रिका 'अब' भी अपनी साहित्यिक प्रतिबद्धता के कारण उल्लेखनीय है। *शंकर, अभय* और *नर्मदेश्वर* द्वारा सम्पादित इस पत्रिका में मानवीय मूल्यों का संरक्षण करनेवाली अनेक रचनाओं का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाकारों में डॉ० रामशरण शर्मा, डॉ० हरबंश मुखिया, असगर अली इंजीनियर, डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव, डॉ० सुधीश पचौरी, डॉ० रमेश उपाध्याय, डॉ० खगेन्द्र ठाकुर, रमाकान्त, मानबहादुर सिंह , गुरु बचन सिंह, प्रो० वीरेन्द्र मोहन, जोगिन्दर पाल, पुन्नी सिंह, अलख नारायण, डॉ० सुरेन्द्र चौधरी, डॉ० चन्द्रभूषण तिवारी, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी उल्लेखनीय है। 'अब' का 'कहानी-अंक' अपने रचनात्मक वैविध्य और सटीक आलोचनात्मक विवेचन के कारण काफी चर्चा में रहा था।

बिहार की साहित्यिक पत्रिकाओं में हिन्दी विद्यापीठ, देवघर की मुखपत्रिका 'हिन्दी विद्यापीठ पत्रिका' का विशेष स्थान है। इस मासिक पत्रिका ने शोध-पत्रों के अतिरिक्त कविताओं का भी प्रकाशन किया। बाद में यह पत्रिका अनियमित हो गई। समय-समय पर इसके सम्पादक बदलते रहे। इसका मैथिलीशरण गुप्त शताब्दी अंक जीवंत सामग्री संकलन के लिए काफी लोकप्रिय हुआ। मुजफ्फरपुर से प्रकाशित नाटक

आर रगकर्म को शोध पत्रिका 'नेपथ्य' को एक उपयोगी पत्रिका माना जा सकता है *डॉ. शेखर* और *उपेन्द्र प्रसाद* द्वारा सम्पादित इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित हो चुके है। पटना से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिकाओं में *कृष्णानन्द कृष्ण* द्वारा सम्पादित 'पुनः' नामक अनियतकालीन पत्रिका का नाम लिया जा सकता है।

बिहार की कुछ अन्य महत्वपूर्ण समकालीन साहित्यिक पत्रिकाएं है– 'अस्मिता' (स.–*अस्मिता सिह*, पटना), 'आहट' (सं.–*ब्रह्मदेव प्रसाद*, दरभंगा), 'इलाहंस' (सं –*शीवेश साकेत*, धनबाद), 'नारी संवाद' (स – *रेणु दीवान*, जमशेदपुर), 'साहित्य सेतु' (स –*अभिताभ चक्रवर्ती*, धनबाद), 'युगावलोकन' (स.–*नन्दकिशोर नन्दन*, मुजफ्फरपुर), 'नालन्दा दर्पण' (स *स्वर्ण किरण*, सोहसराय), 'उर्विजा' (स.–*रवीन्द्र प्रभात*, सीतामढी), 'आराधना' (1970, सं.–*चन्द्रोदय कुमार करूण*, भागलपुर), 'आरोह' (1987, सं.–*उत्तम कुमार पीयूष*, मधुपुर, देवघर), 'उन्मुक्त' (1986, स. –*अमिय शेरपुरी*, समस्तीपुर), 'अन्तरंग' (1981, सं –*प्रभात झा*, पटना), 'अभियान' (1982, सं –*जीतेन्द्र जीवन*, मुजफ्फरपुर), 'सचारदर्पण' (स -*पाली वसुधा*, रॉची), 'साकार' (सं – *संत साह* एवं *दिनेश कुमार आजाद*, सुगोली)।

1990 में सीता की अवतरण भूमि सीतामढ़ी से रामचन्द्र चन्दभूषण (प्रधान) और *ऋषिकेश* के सम्पादन में 'परिभाषा' नामक पत्रिका आरम्भ हुई। दूसरे अक से यह 'समकालीन परिभाषा' के नाम से निकलने लगी। 'परिभाषा' ने नई रचनाधार्मिता को प्रश्रय देते हुए समकालीन लेखन–कर्म पर पूरी दृष्टि रखी। इस पत्रिका के लगभग पन्द्रह अंक प्रकाशित हो चुके है। इसके समकालीन हिन्दी कहानी विशेषाक, कथाकार रमाकांत विशेषांक और शमशेर विशेषांक संग्रहनीय है। आगे चलकर *ऋषिकेश* और *राकेश रेणु* ने संयुक्त रूप से इसका सम्पादन किया।

1990 में ही चरपोखरी (भोजपुर) से *अनन्त कुमार सिंह* के सम्पादन में 'जनपथ' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरभ हुआ। इस पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से सभव नही हो सका किन्तु इसने साहित्य की विभिन्न विधाओं को एक रचनात्मक परिवेश अवश्य दिया। इस पत्रिका के मंडल में *निलय उपाध्याय* जैसे नये कवि भी थे और *सुभाष शर्मा* जैसे साहित्यिक रुचि के प्रशासकीय पदाधिकारी भी। अपने प्रवेशांक में इसने सुधीश पचौरी का प्रसिद्ध लेख 'करूणा के वजन का

कोई शब्द प्रकाशित किया। तत्पश्चात् उन्होंने [illegible], प्रमुख कहानीकार की कहानी 'खण्डित और विसर्जित' इसमें प्रकाशित हुई। [illegible] विभाषाओं के साहित्य को भी महत्त्व दिया।

बिहार से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में पटना से प्रकाशित 'पाटलिप्रभा' का उल्लेख भी अपेक्षित है। *नागेन्द्रनाथ द्विवेदी* द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका के कई अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसका तीसरा अंक (अप्रैल, 1992) कविता पर केन्द्रित है। इसमें [illegible], मानबहादुर सिंह, श्यामसुन्दर घोष, श्री राम तिवारी, कमर मेवाड़ी, शंभु बादल, विद्याभूषण, खगेन्द्र ठाकुर, अरुणकमल, सुरेन्द्र स्निग्ध, ध्रुव देव मिश्र पाषाण, वेणु गोपाल, तरसेम गुजराल, मदन कश्यप, राजकुमार कुम्भज, अमिताभ चक्रवर्ती, अवधेश प्रधान, सुवास कुमार रंजीत वर्मा, कालिका प्रसाद सिंह, शहंशाह आलम, सदाशिव श्रोत्रिय, तैयब हुसैन, प्रफुल्ल कोलख्यान, रवीन्द्र उपाध्याय, मनोज मेहता, अनिरुद्ध प्रसाद अभिज्ञात, विनोद शर्मा, धीमान राय, मोहन राणा, उमेश्वर दयाल, शंभु कुशाग्र, डॉ. शेखर शंकर, हेमन्त जोशी, चंद्रकला त्रिपाठी, यश मालवीय, कुमार [illegible], लल्लन तिवारी, रेवती रमण, विपिन बिहारी, बल्लभ डोंगरे, दीपेश दुबे, [illegible], नरेन्द्र पुण्डरीक, राजीव सभरवाल, रणजीत [illegible], जयप्रकाश मिश्र, डॉ॰ शिवनन्दन, रेवती रमण शर्मा, डॉ॰ [illegible], विजय कुमार मिश्र, संजय कुमार पंकज, गौरीनाथ द्विवेदी, नचिकेता, अश्वघोष बल्ली सिंह चीमा, वीरेन्द्रनाथ विभावसु जैसे नये पुराने कवियों की रचनाएं प्रकाशित हुई थीं। पत्रिका में आलोचना खण्ड भी रखा गया था जिसमें नागार्जुन का साक्षात्कार था तथा मैनेजर पाण्डेय, रानिहाल गुंजन और मृत्युंजय उपाध्याय के लेख थे।

1991 ई० (अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर) में जमालपुर (मुंगेर) से *किशन कालजयी* के सम्पादन, *सफ़दर इमाम क़ादरी* और *शिवशंकर पाण्डेय* के संयुक्त संपादन में 'संवेद' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस पत्रिका ने रचना और आलोचना को समान रूप से महत्त्व देते हुए एक वैचारिक और रचनात्मक परिवेश निर्मित किया। इस पत्रिका के सात अंक प्रकाशित हो चुके है। लघु पत्रिकाओं पर केन्द्रित इसके तीसरे अंक में लघु पत्रिका के दायित्वों और चुनौतियों पर वैचारिक सामग्री प्रस्तुत की गई है। 'संवेद' का चौथा अंक *'विचार पर बाजार का हमला'* का अपना अलग महत्त्व है। इस अंक के लेख 'अंग्रेजों के पहले का भारत' (धर्मपाल), 'विश्व बाजार और भारत (राम विलास शर्मा), 'भारत की

पराजय क्यों हुई' ([illegible]), 'सब कुछ स्वाहा कर रहा है उपभोक्तावाद' (सच्चिदानंद सिन्हा), 'नई आर्थिक नीति और भारतीय हित' (खगेन्द्र ठाकुर), 'बाजार की बाजीगरी' (राजकिशोर), 'नई गुलामी का खतरा और संघर्ष की संभावना' (अरविन्द मोहन) नयी आर्थिक नीति के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारत के निर्माण और विनाश की ओर बढ़ते कदम का संकेत देते हैं। इन लेखों के अलावा, निर्मल वर्मा का संस्मरण (सिंगरौली जहां कोई वापसी नहीं), जनसत्ता के सम्पादक और वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी से अरविन्द मोहन की बातचीत (आशा के लिए उतनी ही गुंजाइश है जितनी निराशा के लिए), '[illegible]' (विभूति आनन्द), 'अंधी खोह के मुसाफिर' (नरेन), '[illegible]' ([illegible] शर्मा), 'पीछा' (रामकिशोर) आदि कहानियाँ और विद्याभूषण, शबीर हसन, वेद प्रकाश वाजपेयी, निलय उपाध्याय, [illegible], विनय सौरभ की कविताओं के अतिरिक्त रमेश चन्द्र शाह, अनुग्रह मिश्र, प्रकाश शुक्ल, मदन कश्यप, अमिताभ चक्रवर्ती की विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ, जगदीश विकल, (संघर्ष संवेदना के सक्रिय शब्द कर्म), नारायण सिंह (तुम अभी जागो पृथ्वी) की समीक्षाएँ और 'रिपोर्ट' एवं 'संवाद' इस अंक के आकर्षण हैं। संवेद का संयुक्तांक (5, 6) रंगमंच और नाटक विशेषांक है। इस अंक के मुख्य आकर्षण है–रंगमंच पर विशेष सामग्री, [illegible], [illegible] रस्तोगी और श्री भगवान सिंह के नाटक, [illegible] का साक्षात्कार, नेमिचन्द्र जैन के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर विशेष खण्ड का प्रकाशन।

1992 में पूर्णिया से प्रगतिशील सृजनधर्मिता की साहित्यिक पत्रिका के रूप में 'कला' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। 'कला' का सम्पादन *कलाधर* ने किया। वरिष्ठ समीक्षक *डॉ. नर नारायण राय* इसके परामर्षक मण्डल में सम्मिलित थे। 'कला' ने समकालीन साहित्य की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों और विधाओं को रेखांकित करने का प्रयास किया। निस्संदेह 'कला' अपनी उत्कृष्ट साहित्य-सामग्री के लिए एक मानक साहित्यिक पत्रिका के रूप में स्वीकार की जा सकती है।

हजारीबाग से 1992 में त्रैमासिक 'नवजीवन' का प्रकाशन हुआ। 'नवजीवन' ने साहित्य को जनचेतना को विकसित करनेवाला माध्यम मानते हुए सामयिक रचनाओं का प्रकाशन किया। इस पत्रिका में मुख्य रूप से बिहार के रचनाकार ही छपते रहे हैं। निस्संदेह यह संघर्षशील **रचनाकारों की एक प्रतिनिधि पत्रिका है**

1992 में जमशेदपुर से *राघव आलोक* के सम्पादन में दस्तक नामक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस पत्रिका ने बिहार के महत्वपूर्ण रचनाकारों को एक मंच पर उपस्थित किया। इसके प्रवेशांक में प्रसिद्ध कथा समीक्षक सुरेन्द चौधरी और वरिष्ठ कथाकार गुरुवचन सिंह के साक्षात्कार प्रकाशित हुए। इस पत्रिका में दक्षिण बिहार के कवियों को 'पठार को सुनो' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता रहा है। इसमें प्रकाशित प्रमुख लेखों में 'आज का सामयिक यथार्थ' (डॉ० खगेन्द्र ठाकुर), आधुनिक साहित्य के इतिहास का पुनर्लेखन (डॉ० शम्भुनाथ), 'प्रेमचन्द का आदर्शवाद' (परमानन्द श्रीवास्तव) उल्लेखनीय है। 1992 में ही हाजीपुर से 'बहुत कुछ' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस पत्रिका का सम्पादन विजय कुमार विनीत ने किया। इसने समकालीन रचनाकारों को रेखांकित करते हुए सामयिक विषयों पर अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन किया है।

हवेली खडगपुर, मुंगेर से 1993 में 'सभवा' नामक कविता पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका सम्पादन युवा कवि एवं आरक्षी उपाधीक्षक *ध्रुवनारायण गुप्त* ने किया। प्रेम कविताओं पर केन्द्रित इसका अंक काफी चर्चित हुआ। कविताओं के प्रकाशन के साथ इस पत्रिका में कविता पर आलोचनाएँ भी छपती हैं।

पटना से प्रकाशित पत्रिकाओं में 'सबद' एक उल्लेखनीय साहित्यिक पत्रिका है। साहित्य, कला और संस्कृति पर केन्द्रित इस अर्द्धवार्षिक पत्रिका के सम्पादन मण्डल में जनकवि *त्रिलोचन* भी हैं, इतिहासकार, कथाकार *भगवान सिंह* भी हैं और कथाकार विचारक *हंसराज रहबर* भी हैं। इस पत्रिका के संपादक *अस्मिता सिंह* हैं। जून 1993 में प्रकाशित इसका प्रवेशांक प्रसिद्ध कवि कुमारेन्द्र पारस नाथ सिंह पर केन्द्रित है, किन्तु इसमें अन्य रचनाकारों की स्वतंत्र रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। 'सबद' अपनी सुलझी हुई सम्पादकीय दृष्टि के कारण एक जीवन्त साहित्यिक पत्रिका घोषित होती है। पटना से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'आकाश' भी एक साहित्यिक पत्रिका है। सरोज कुमार के सम्पादकत्व में प्रकाशित होनेवाली इस पत्रिका का प्रवेशांक 1993 में प्रकाशित हुआ था।

नम्वबर 1994 में रानीगंज, अररिया से 'सरोकार' नामक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इस पत्रिका का सम्पादन *सदानन्द 'सुमन'* ने किया। कविताएँ, कहानियाँ, गजलें, संस्मरण, आलेख, मूल्यांकन

और पुस्तक समीक्षा स्तम्भ के अन्तर्गत इसमें महत्वपूर्ण रचनाऐं प्रकाशित होता है पूर्णिया से मुहिम नामक पत्रिका का प्रकाशन भी *चन्द्रकिशोर जायसवाल* के सम्पादन में हुआ है इस साहित्यिक पत्रिका ने नई रचनाधर्मिता की अनुगूज को स्वर देने की कोशिश की है। हजारीबाग मे प्रकाशित 'आम आदमी' (सं.-*रामणिका गुप्ता*), और बांका से पकाशित 'आज की कविताए' (सं.-*डॉ० गिरिजा शंकर मोदी*) भी बिहार की महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिकाएं हैं।

बिहार की साहित्यिक पत्रिकाओं के अन्तर्गत 'वाणी' का उल्लेख भी किया जा सकता है। वैसे इसके सम्पादक *सौमित्र बनारस* रहते हैं, किन्तु यह पत्रिका बिहार से ही मुद्रित एवं प्रकाशित होती है। आधुनिक हिन्दी साहित्य और बिहार पर केन्द्रित इसके दो विशेषांकों (सात, नौ और दस, बारह) का विशेष साहित्यिक मूल्य है। इसमें आधुनिक बिहार के समूचे हिन्दी रचनाकर्म को रेखांकित किया गया है।

इस शताब्दी के अन्तिम दशक में प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओ में 'आयाम' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। डेहरी ऑन सोन से प्रकाशित अनियतकालीन पत्रिका का सम्पादन *अरविन्द गुप्त* ने किया। राहुल साकृत्यायन और शमशेर जैसे साहित्यकारों के लेखन पर इसने व्यापक प्रकाश डाला। रचना और आलोचना दोनों को इसने समान रूप से महत्व दिया।

अक्टूबर 1994 में मुजफ्फरपुर से 'नई आकृति' नामक एक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। जिसका सम्पादन हिन्दी, भोजपुरी और दर्शन शास्त्र के विद्वान *रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव* ने किया। 'नई आकृति' के अब तक तीन अंक प्रकाशित हो चुके हैं। नई रचनाधर्मिता पर इस पत्रिका ने भी पर्याप्त बल दिया है। इसने अनेक भारतीय भाषाओं की कविताओं के अनुवाद भी प्रस्तुत किये हैं। कविता और कहानी के अतिरिक्त साक्षात्कार, आलेख और चिंतनपरक रचनाएँ भी इसमें प्रकाशित होती है।

'सार्थक' रॉची से प्रकाशित होनेवाली एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका है। यह सांस्कृतिक सहकार का सृजन मंच है जिसके नेपथ्य में प्रसाद साहित्य के मर्मज्ञ और राँची विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष *दिनेश्वर प्रसाद* है और सम्पादक के रूप में अंग्रेजी के *डॉ०* *मिश्र* सामने उपस्थित है इस पत्रिका के अब

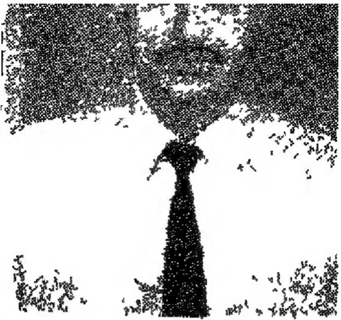
एक तीन अंक छप चुके हैं दूसरा अंक अगस्त [illegible] सामान्य अंक है जबकि तीसरा अंक हिन्दी गजल [illegible] है।

1996 में भागलपुर से 'सौमित्र' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका सम्पादन डॉ॰ [illegible] ने किया। यह पत्रिका रचना और आलोचना पर केन्द्रित है। इस पत्रिका ने [illegible] रचनाकार्य से सम्बद्ध एकदम नये लोगों को प्रश्रय दिया। 1998 में [illegible] से 'अन्वेषक' नामक शोध और समीक्षा पर केन्द्रित पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका सम्पादन *सतीश कुमार राय* और *उपेन्द्र प्रसाद* ने किया। इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित हो चुके है। शोधपरक साहित्य की प्रस्तुति के लिए इस पत्रिका को उपयोगी माना जा सकता है। इस काल खण्ड में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में 'जनबोध' (मोतिहारी, सं०- *डॉ० रवीन्द्र कुमार 'रवि'*), 'साराश' (बोकारो इस्पात नगर सं०- *विनोद कुमार दुबे*) उल्लेखनीय है।

इस प्रकार, इस कालखण्ड में बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता ने व्यापक प्रगति की। एक ओर जहाँ प्रिन्ट मीडिया के विकसित होने से पत्रकारिता का स्तर प्रभावित हुआ वहीं दूसरी ओर साहित्यिक पत्रिकाओं की एक रचनात्मक समझदारी भी विकसित होने लगी। इस कालखण्ड में प्रकाशित होनेवाले दैनिक पत्रों यथा- आर्यावर्त्त, नवराष्ट्र, पाटलिपुत्र टाइम्स, नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, जनशक्ति ने समाचारों के साथ साहित्यिक रचनाओं को भी प्रश्रय दिया। दीनानाथ मिश्र के सम्पादकत्व में नवभारत टाइम्स ने कला, साहित्य और संस्कृति को दैनिक पत्रकारिता की मुख्य धारा में सम्मिलित किया। 'हिन्दुस्तान' ने वृहस्पतिवार को साहित्य का एक पृष्ठ दिया। इन पत्रों के रविवासरीय परिशिष्टांक में भी साहित्य को उचित स्थान मिला। इस प्रकार मात्रा और परिणाम की दृष्टि से इस युग की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता को विकसित और महत्वपूर्ण माना जा सकता है।







पश्चिमी चम्पारण के जबदौल गां श्रीमती जीवन कला एवं श्री गजाध के पुत्र श्री कल्याण कुमार झा का 14 अक्टूबर 1971 ई० में हुआ। म एव इंटरमीडिएट इंटर कॉलेज, कुमा से तथा महारानी जानकी कुंअर महाविद्य बेतिया से हिन्दी साहित्य में बी० (प्रतिष्ठा) करने के बाद उन्होंने

वविद्यालय से हिन्दी भाषा एवं स में स्नातकोत्तर किया। सम्प्रति *'बिहा दैनिक पत्रों की साहित्यिक भूमिका'* पर पी-एच० डी० के लिए शोध क है। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाअ इनकी रचनाए प्रकाशित होती रही 'बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रका श्री झा की पहली पुस्तक है।